PRINTED BOOK–POST
MANAVTA MANDIR, HOSHIARPUR
(REGD. 26265/ 74 PB.–HSP./ 7/ 2015–17)

PARAM SHANIT STHAL, Manavta Mandir, Hoshiarpur Punjab (India) – a view from inside
परमशान्ति स्थल, मानवता मन्दिर, होशियारपुर, पंजाब (भारत) का एक आन्तरिक दृश्य

MANAVTA MANDIR
Manavta Mandir Road, Hoshiarpur–146001, Punjab
Contact : +91 1882–243154, 502154

मानव मन्दिर

जनवरी-फरवरी, 2016 (वर्ष–43, अंक 1–2)

परमसन्त परमदयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर की संत-परम्परा

परमसंत दातादयाल डॉ. शिवब्रत लाल जी महाराज

परमसंत परमदयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज

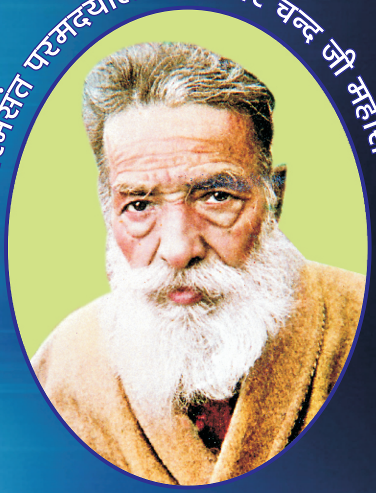

परमसंत मानवदयाल डॉ. आई. सी. शर्मा जी महाराज

हुजूर श्री दयाल कमल जी महाराज

श्री ब्रह्मशंकर जिम्पा (प्रधान) व राणा रणबीर सिंह (सचिव) अन्य ट्रस्टीगणों तथा सत्संगियों के साथ परम शान्ति स्थल पर श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए।

दयाल कमल जी महाराज, ब्रह्मशंकर जिम्पा (प्रधान), राणा रणबीर सिंह (सचिव), कुलदीप शर्मा (ट्रस्टी), अन्य ट्रस्टीगणों व सत्संगियों के साथ परम शान्ति स्थल में 18 नवम्बर, 2015 को प्रवेश करते हुए।

श्री ब्रह्मशंकर जिम्पा (प्रधान), राणा रणबीर सिंह (सचिव), श्री विजय डोगरा व श्री फ़कीर प्रसाद डोगरा (ट्रस्टी) स्कूल स्टाफ के साथ गरीब विद्यार्थियों को स्कूल यूनिफार्म वितरण करते हुए।

मानव मन्दिर

जनवरी-फरवरी 2016 (वर्ष–43, अंक 1-2)

विश्व में मानव-मात्र के सामाजिक, सांस्कृतिक,आध्यात्मिक कल्याए और विकास की सेवा में संलग्न पत्रिका

संस्थापक : परमसन्त परमदयाल पं. फ़कीरचन्द जी महाराज

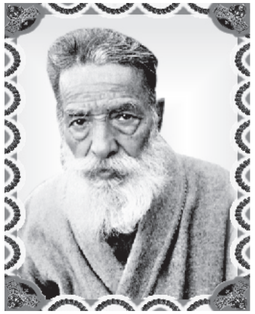

● प्रबन्धक सम्पादक :
श्री ब्रह्मशंकर जिम्पा (प्रधान)
(+91 94177-66913)

● प्रकाशक :
श्री राणा रणबीर सिंह
(जनरल सैक्रेटरी)
+91 94631-15977, +91 97791-05905
E–MAIL : ranbirrahal@outlook.com

अनुक्रमणिका

1. राधास्वामी नाम-ध्वनि 2
2. ज्ञान के नुक्ते : हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज 3
3. महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज द्वारा रचित महारामायण 10
4. सत्संग : परमसन्त हजूर परमदयाल पं. फकीर चन्द जी महाराज 20
5. राधा स्वामी नाम (सत्संग : परमसन्त हजूर परमदयाल पं. फकीर चन्द जी महाराज) 37
6. सत्संग : परमसन्त हजूर मानव दयाल जी महाराज 59
7. सत्संग : दयाल कमल जी महाराज 77
8. आभार प्रदर्शन 95

संपादक एवं ट्रस्ट अपनी पूर्व सन्त-परम्परा के विचारों के प्रति समर्पित है। शेष आचार्यों के विचार उनके व्यक्तिगत हैं, उनसे सहमति अनिवार्य नहीं।

FAQIR LIBRARY CHARITABLE TRUST (REGD.)

Manavta Mandir, Manavta Mandir Road,
Hoshiarpur–146001 (Pb.) Ph.: 01882–243154
e–mail : manavtamandirhsp@gmail.com
web : www.manavtamandirhsp.com
facebook.com/manavtamandirhsp

राधास्वामी नाम-ध्वनि

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
अलख अगम और अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
परमसन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया
सीधास च्चाम र्गी दया,अ ायेध ुरप दध ाामी।

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब जीवों की पीर।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥

राम भी हो और कृष्ण भी तुम।
तुम महावीर और बुद्ध गौतम।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥

मानवता का किया प्रचार
निज अनुभव का दे दिया सार।
ऐसे गुरु को बारम्बार, नमामि नमामि नमामि।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥

दाता दयाल के प्यारे तुम मानव के रखवारे तुम।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥

नववर्ष की शुभकामनाएँ

मावनता-मंदिर से जुड़े हुए तथा परम दयाल पं. फकीर चन्द जी महाराज के प्यारे सत्संगियों को नववर्ष 2016 की, मेरी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। सत्पुरुष राधास्वामी दयाल समस्त मानव जाति को भाई-चारे व प्रेम के साथ, बिना किसी भेदभाव के जीवन-यापन करने की सद्बुद्धि प्रदान करे।

मैं अपने तहे दिल से परमदयाल जी महाराज से समस्त मानव-जाति के लिए शारीरिक स्वास्थ्य, सम्मान का भोजन व मानसिक शान्ति प्रदान करने के लिए प्रार्थना करता हूँ।

राधास्वामी।

– दयाल कमल जी महाराज (M : 0 94183-70397)

नया वर्ष हो मंगलमय !

आध्यात्मिक एवं सामाजिक सर्जना को समर्पित पत्रिका 'मानव मन्दिर' के सभी पाठकों तथा परमपूज्य परमदयाल पं. फकीरचन्द जी महाराज के द्वारा संस्थापित सन्तसाधना की परम्पराओं के विश्व केन्द्र मानवता मन्दिर के सभी सत्संगी भाई-बहनों के लिए नये वर्ष 2016 के शुभागमन पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि परमपूज्य महाराज जी ने सेवा का अवसर देकर मुझ जैसे कितने ही सेवकों के जीवन में नई आशा एवं स्फूर्ति का संचार किया है। सेवा सुमिरन और सत्संग सभी के जीवन में भरपूर हो जो आध्यात्मिक साधना की त्रिवेणी है। जहाँ मानवता मन्दिर अपनी उत्तमांत्तम सेवा द्वारा मानवता की सच्ची और निर्भयता की राह पर निरन्तर अग्रसर होता रहे वहीं यह नया वर्ष भी आप सब के परिवार, समाज एवं देश में ही क्यों पूरे जगत् में शान्ति एवं सद्भावना के नये पुष्प खिलाये और महकाये।

सर्वे भवन्तु सुखिनः

– सचिव, मानवता मन्दिर।

नववर्ष-सन्देश

परमदयाल जी महाराज की महान् अनुकम्पा से 2015 बीत गया तथा 2016 का आगमन हो रहा है। उनके अनुभव के अनुसार यह सब जीवन, काल और माया के आधीन है। उन्होंने दुनियादारों के लिए शिवसंकल्पमस्तु, परमार्थ तथा आवागवन से बाहर जाने वालों को सुरत शब्द योग का साधन व उससे आगे का रास्ता बताया है। गृहस्थियों को अपना जीवन ईमानदारी की कमाई, शुभ ख्याल आदि से गुजारना चाहिए। दाता दयाल जी महाराज जो कि इस ब्रह्माँड के पूर्णज्ञाता थे, उन्होंने जो भी लिखा है वह इस सृष्टि का पूर्ण सत्य है।

फकीर लाइब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट परमदयाल जी की शिक्षा के अनुसार, सत्संगियों की एक-एक पाई को पूरी पारदर्शिता से खर्च करर हाह ैत थाद यालक मलज ीम हाराजत न,म न,६ ानस` परमदयाल जी की शिक्षा का प्रचार कर रहे हैं। सैक्रेटरी राणा रणबीर सिंह जी तथा सब ट्रस्टी भाइयों का अलग-अलग से पूरा सहयोग है। मैं आशा करता हूँ कि आने वाले साल में परमदयाल जी महाराज के पूर्ण जीवन पर आधारित एक अनूठी पुस्तक, जो कि सब पुस्तकों का संकलन होगी तथा दुनिया भर में प्रकाशित की जायेगी। विश्व के पुस्तकालयों में इसका स्थान होगा ताकि दुनिया पूरे सत्य को जान सके।

सबको नववर्ष की हार्दिक मुबारकबाद देते हुए
राधास्वामी!

– ब्रह्मशंकर जिम्पा
प्रधान
फ़कीर लाइब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट,
मानवता मन्दिर, होशियारपुर।
मोब.: 0 94177-66913

ज्ञान के नुक्ते

हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज

जिसमें किसी भी प्रकार की इच्छा बाकी है, वह मोहताज और कंगाल है। चाहे उसे सातवें लोक का राज्य भी प्राप्त हो जाये, लेकिन वास्तव में उसकी हैसियत एक भिखारी साधु से भी बुरी है।

जिसमें किसी भी प्रकार की इच्छा नहीं रही, उसके पास यदि पेट की रोटी, तन के लिए कपड़ा भी न हो तो भी वह राजाओं का राजा है।

निष्कामता मन को सन्तुष्टि देती है। इच्छा हमेशा भूखा और प्यासा रखती है। परन्तु यह बात बहुत देर में समझ आती है।

जिसके मन में कोई भी इच्छा शेष नहीं रही, उसे कोई देगा तो क्या देगा और उससे लेगा भी क्या? इच्छारहित व्यक्ति काल और कर्म के कर्जे से स्वतन्त्र हो जाता है और उसे फँसाने के लिए कोई जाल बाकी नहीं रहता।

माया सबको ठगती फिरती है। दुनिया में कौन ठगा जाता है? जिसे किसी भी प्रकार की इच्छा बाकी रह जाती है। जिसके मन में किसी भी प्रकार की इच्छा ही नहीं रही, उसे ठगेगा कौन?

माया तो ठगनी भई, ठगत फिरे सब देस।
जा ठग ने ठगनी ठगी, ता ठग को आदेस॥

इस इच्छा के जगत् में हज़ारों, लाखों और करोड़ों रूप हैं। जगत् में कोई भी व्यक्ति ऐसा दिखाई नहीं देता, जिसे किसी न किसी बात की इच्छा न हो। संसार की इच्छा, धर्म की इच्छा, स्वर्ग की इच्छा, यहाँ तक कि मुक्ति की इच्छा, सब की सब इच्छाएँ ही तो हैं। जब तक मनुष्य के मन में इच्छा की एक गन्ध भी रह जाती है, वह कंगाल का कंगाल बना रहता है। जिसमें किसी भी प्रकार की इच्छा बाकी नहीं रही, वह वास्तव में, देवताओं से भी बड़ा है।

यह इच्छा ही है, जो विष्णु के शरीर से लक्ष्मी बनकर चिपटी रहती है। इच्छा ही है, जो सावित्री होकर, ब्रह्मा के गले का हार हो रही है और यह इच्छा ही है, जो शिव जी के बाईं ओर पार्वती बनकर बैठी रहती है।

यह संसार क्या है? यह वासनारूप है। वासना कहते हैं इच्छा को। अब आप ध्यान देकर देख लो दुनिया में कौन-सा ऐसा मण्डल है, जहाँ इस वासनाशक्ति ने अपने हाथ-पाँव नहीं फँसा रखे हैं। आज मास्टर ज्ञानचन्द जी ने शब्द पढ़ा-

चलो री सखी आज पिया से मिलाऊँ।
तन, मन, धन की प्रीति छुड़ाऊँ॥

जब तक व्यक्ति में तन, मन तथा धन से प्रीति की गन्ध भी बाकी है, तब तक पिया से मिलाप होना कठिन हैं। वह पिया से तो तब मिलेगा जब उसकी तन, मन तथा धन से प्रीति जाती रहती है। उस समय चाहे वह पिया से मिल जाये लेकिन इससे पहिले नहीं।

वह पिया है कौन? वह पिया है कौन? वह पिया और कुछ नहीं है, वह केवल निष्कामता है। निष्काम या इच्छा रहित हो जाओ तो पिया से मिल जाओगे।

राम ने जब गुरु वसिष्ठ का उपदेश सुना, जिसका साराँश यह था कि निष्काम होने की इच्छा करो, तब राम ने गुरु से पूछा, "क्या इस निष्कामता की इच्छा भी इच्छा नहीं?" ऋषि ने उत्तर दिया, "राम! तुम्हारा यह प्रश्न बहुत ही सुन्दर है। तुम निःइच्छितपने की इच्छा को भी इच्छा कह रहे हो। साधारण बुद्धि वाले लोग इस निःइच्छितपने को इच्छा ही कहेंगे। लेकिन ऐ राम! वास्तव में, निष्कामना की इच्छा इच्छा नही होती, वह तो क्रियात्मक उपाय है, जिससे व्यक्ति को निष्कामना का धन हाथ आता है। व्यक्ति हाथ का मैल धोने के लिए हाथ में साबुन मलता है, साबुन इसलिये नहीं मला जाता कि वह मैल के ऊपर एक तह जम कर रह जाये, अपितु इसलिये मला जाता है कि जहाँ वह मैल की तह को धोये, आप भी धुल कर साफ हो जाये। इसलिए साबुन को मैला बनाने की इच्छा न समझो, वह तो सफाई का क्रियात्मक उपाय है। इसी प्रकार निष्कामना की इच्छा भी एक ऐसा ही यत्न है, जो इच्छा की जड़ को काट देता है और साथ ही साथ निष्कामना की इच्छा भी मिट जाती है।

राधास्वामी मत या सन्तमत में जो मुख्य शिक्षा दी जाती है, वह व्यक्ति को निष्काम बनाने की ही शिक्षा है, किन्तु इस नुक्ते के समझाने वाले व्यक्ति बहुत ही कम हैं।

न ख्याल है किसी का, न किसी की आरज़ू है।
न तलाश है किसी की, न किसी की जुस्तजू है॥
दिन से गरज़ नहीं है, नहीं जिस्म व जाँ से मतलब।
हम मस्त हो गये जब, मस्ती मन व सियू है॥
ख्वाहिश हो दिल में किसी की, फ़ानी है मुल्क दौलत।
फ़ानी बहिवत व दोज़ख, सब में फ़ना की रबू है॥
कायम नहीं जहाँ का, इक तौर पर बतीरा।
इसमें फ़ना की रंगत, इसमें फ़ना की बू है॥
फ़ानी की जब हो ख्वाहिश, फ़ानी बनोगे भाई।
फ़ानी नमाज़ रोज़ा, और आबते बज़ू है॥

दिल साफ़ कर लो अपना, बाकी रहे न ख्वाहिश।
यह है तारीक सच्चा, सच्ची सस्त व शू है॥
बेख्वाहिशी की ख्वाहिश, ख्वाहिश है सब से आला।
यह हो नसीब अपने, बस इसकी आरज़ू है॥

जागने और सोने की दशा में इच्छाओं का जाल चारों और फैला रहता है। इसी जागने ओर सोने का दूसरा नाम नासूत और मलकूत है। इसी को ही विराट् और ओंकार कहते हैं। यही सहस्रदल कँवल और त्रिकुटी है। जिस समय आत्मा शून्य मण्डल में जाती है, सभी इच्छाओं के सम्बन्ध आप ही आप कट जाते हैं। जाग्रत और स्वप्न दोनों में जब सुषुप्ति आ गई तो किसी प्रकार की इच्छा बाकी नहीं रहती, क्योंकि ऐसी अवस्था में निजस्ववरूप अपने आप में ठहर जाता है। इसी कारण उसे शून्य या जबरूत कहा जाता है। अपने मन में सोचो! शून्य का अर्थ क्या है? शून्य का अर्थ है इस तरह की सफाई हो जाना कि मन के अन्दर या तुम्हारे निजरूप के अन्दर वासना या इच्छा की गन्ध बाकी न रहे। उस अवस्था में आनन्द ही आनन्द है। मन को सदा खाली करने की ओर ध्यान दो, जब यह खाली होने लगेगा, आकाश की सूरत बन जायेगी। आकाश को शून्य कहा जाता है। यह तो केवल उदाहरण ही है, असली शून्य का स्थान तो अभी आगे ही है।

जिस समय मन, भ्रम, विचार और इच्छाओं से निर्मल हो गया, तो तीनों लोकों का राज्य स्वयं ही मिल गया। यह राज्य कोई, जायदाद नहीं है। अलंकार के रूप में बात इसलिये की जा रही है ताकि विषय रोचक बन जाये।

सत, रज, तम की नदी बहती हुई संगम के रूप में स्थित है। इस संगम में नहाओ ताकि तीनों गुणों का मल धूल जाये और साबुन के उदाहरण की तरह इन गुणों का नाश हो जाये। यह त्रिकोणी में नहाने का अभिप्राय है। जब तुम नहा लोगे मन माधो की गाँठ ढीली पड़ जायेगी।

लोग प्रयाग तीर्थ करने जाते हैं, संगम में नहाते है। प्रयाग कहते हैं परे के यज्ञ को और त्रिवेणी कहते हैं गंगा, यमुना तथा सरस्वती के संगम को, जो सत, रज, तम या कर्म, ज्ञान और भक्ति के रूपक हैं। गंगा भक्ति है, यमुना कर्म है, सरस्वती ज्ञान है। इनमें नहा कर इनमें नहाने की इच्छाओं को भी त्याग दो। तब बात तुम्हारी समझ में आयेगी और आप अपने निजरूप में प्रवेश कर जाओगे। वास्तव में, सही अर्थों में इसी को खूँट छुड़ाना कहते हैं। यही ही परे का यज्ञ या प्रयाग है। खेद की बात तो यह है कि असली अर्थों को तो कोई समझता नहीं। बस! संगम-स्नान किया, मिट्टी में सन गये। परिणाम क्या हुआ?

तीरथ चले दो जना, मन कपटी चित चोर।
एकौ पाप न ऊतरा, लाये दस मन और॥
काशी गये प्रयाग गये, द्वारिका गये।
जैसे गये थे वैसे ही, वापिस भी आ गये॥
काशीपुरी से मथुरा से, क्या लाभ मिल गया।
हमने यह देखा पाप में, मन और मिल गया॥
तीरथ का है घमण्ड, मूरत पै है घमण्ड।
तप का घमण्ड मन में हुआ और बना मुसण्ड॥
संडा मुँडा बन के, यह बलवान हो गया।
पाया नर तन ज्ञान को, अज्ञान को गहा॥
क्या लाभ इससे तुझको, हुआ दे पता मुझे।
मैं पूँछता हूँ खुल के सुना, भेद कुछ मुझे॥

काल का चक्र ज़ोर-शोर से चल रहा है, जैसे स्प्रिंग के सहारे घड़ी के पुर्जे घुमते रहते हैं, ठीक उसी तरह काल के स्प्रिंग में पिरोया हुआ ब्रह्माण्ड ज़ोर-शोर से नाच रहा है। पृथ्वी घूमती है, सूर्य चक्र में है। चन्द्रमा, तारागण सब घूम रहे हैं। यहाँ तक कि सप्तर्षि भी, इस काल के फन्दे से बचे हुए नहीं दिखते। इस कालचक्र में पड़ा हुआ प्राणी भिन्न-2 प्रकार के कर्म करता रहता है। एक कर्म में सैंकड़ों, हज़ारों

तथा लाखों कर्म पैदा होते हैं जिस तरह एक वृक्ष के रोज़ के फल से लाखों प्रकार के बीज बनते रहते हैं। इन कर्मों के क्रम में तरह-2 की वासनाएँ मन में पैदा होती रहती हैं। यह सिलसिला बढ़ता ही रहता है, घटने में नहीं आता और कालचक्र और भी दृढ़ बनाता हुआ प्राणियों को फँसाने का प्रबन्ध करता रहता है। एक इच्छा पूरी हुई दूसरी उसी समय सामने आकर खड़ी हो गई। एक इच्छा के सिलसिले में बेशुमार इच्छाएँ पैदा होती रहती है। तो आप ही बताओ काल धर्म के बन्धन से किसी का कैसे छुटकारा हो सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य अनिच्छा या निष्कामता के ही इष्ट को अपने मन में स्थान दे, तभी ही इस काल धर्म के पंजे से छुटकारा होगा, नहीं तो काल इन कर्म करने वाले जीवों को दाँतों से पीसता हुआ, चबा-2 कर निगलता रहेगा और इस लपेट में आये हुए जीव रिहाई नहीं पा सकते।

हज़ारों ख्वाहिशें ऐसी, कि हर ख्वाहिश पै दम निकले।
बहुत निकले मेरे अरमाँ, लेकिन फिर भी कम निकले॥

एक कहानी है कि किसी साधु की कुटिया में एक चुहिया रहती थी। वह बिल्ली से बहुत डरती थी। उसने साधु से प्रार्थना की, ''बाबा मुझे एक बिल्ली बना दो।'' साधु ने उसे बिल्ली बना दिया। कुत्ते उस बिल्ली पर झपटने लगे। वह साधु के पास गई और प्रार्थना की, ''बाबा मुझे कुत्ता बना दो।'' साधु ने उसे कुत्ता बना दिया। जब कुत्ते पर एक चीते ने हमला किया तो वह भागा-भागा साधु के पास आया और बोला, ''बाबा! मुझे चीता बना दो।'' साधु ने उसे चीता बना दिया। एक दिन किसी राजा के हाथी ने उस चीते पर हमला किया तो वह भागा-भागा साधु के पास पहुँचा और प्रार्थना की कि उसे हाथी बना दिया जाये। साधु ने उसे हाथी बना दिया जब महावत उसकी गर्दन पर बैठकर अंकुश से मारने लगा तो उसे बहुत दर्द हुआ, तंग होकर उसने साधु से प्रार्थना की, ''बाबा मुझे महावत बना दो।'' साधु ने चुहिया को महावत बना दिया। एक बार हौदे पर बैठी रानी, महावत

के किसी कसूर पर इतनी क्रोधित हुई कि राजा से कह कर उसने महावत को फाँसी की आज्ञा करवा दी। महावत दौड़ा-दौड़ा फिर साधु के पास गया और प्रार्थना की कि उसे रानी बना दिया जाये। साधु ने उस चुहिया को रानी भी बना दिया। एक दिन राजा, रानी पर किसी बात पर इतना क्रोधित हुआ कि उसने आज्ञा दी कि रानी को पत्थर मार-मार कर उसके प्राणों का अन्त किया जाये। अब तो वह रानी बनी हुई चुहिया भागी-भागी साधु के पास गई और बोली, ''बाबा! आपकी कृपा से मैं सब कुछ बनी यहाँ तक कि रानी भी बनी, परन्तु चैन तो मुझे कहीं भी नहीं मिला।''

साधु ने कहा, ''तेरे अन्दर चुहिया का संस्कार है। अच्छा है कि तू चुहिया ही होकर मेरी कुटिया में रह।''

अन्त में वह चुहिया बनकर साधु की कुटिया में रहने लगी। इस परिवर्तन के ढंग का नाम आवागमन था जन्म-मरण है। जो बनता है, वह बिगड़ता भी है। बनना या बिगड़ना इच्छा ही के सिलसिले में होता है। इसलिये क्या यह अच्छा नहीं है कि हम इच्छा के फँदे से छुटकारा ही पा जायें।

महाशून्य और भँवरगुफा को पार करते हुए सत्तलोक की ओर चलो, सतलोक क्या है? सतलोक, तुम्हारे अपने ही अस्तित्व (हस्ती) का मण्डल है। अपने ही अस्तित्व का दर्शन करो, अपने ही रूप को देखो और अपनी असलियत को जानो। तभी इस इच्छा के जाल से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जायेगा।

इस अस्तित्व के स्थान पर आकर सुरत को तेज़ दूरबीन मिल जाती है, जिससे वह अलख तथा अगम को देख लेती है, तब किसी और मण्डल पर जमने की इच्छा नहीं होती, कोई इच्छा नहीं रहती। जब कोई इच्छा ही नहीं रही तथा सूरत निर्मल होकर, अपने असली स्वरूप से मिल गई, तो फिर वह क्या कहे और क्या सुने?

महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज

द्वारा रचित

महारामायण

(गतांक से आगे)

आठवाँ समुल्लास

अँगद और रावण

बन्दर-बन्दर एक! अन्य देशों को स्वदेशी, बहुत परिचय के पश्चात् पहचानते हैं। अंगद चले, त्रिकूट गिरि पर चढ़े। लंका की गलियों से निकले। जिसने देखा उसने यही समझा कि यह तो वही बन्दर है जो लंका को जला गया था। अंगद हाथी के डील डौल के बंदर थे। वे झूमते जा रहे थे। जिससे रावण की सभा का पता पूछा, उसने नम्रता के साथ काँपते हुये बता दिया काँपना कपि का स्वभाव है। सुरक्षा में लगा रहना राक्षस का स्वभाव है। यहाँ राक्षस तो काँप उठे, श्रीहत होते गये और उन की रक्षा और स्वरक्षा शक्ति अंगद में आती गई। यह स्मरण रहे कि अंगद बालि के लड़के थे। बालि में नेत्र की आकर्षण शक्ति इतनी बढ़ी हुई थी कि जो सामने आता था, उसका आधा बल इनमें चला आता। यह तो बली बन गये और वह निर्बल हो गये।

यह रास्ते में चले जा रहे थे। रावण का एक लड़का मिल गया। दोनों युवावस्था में थे। बातचीत में राक्षस को क्रोध आ गया। मारने के लिए एक लात को ताना। अंगद में क्रोध न था। राम के उपदेश को ग्रहण कर चुके थे। चित्त में समता थी। उसके बल को हर लिया और उसकी टाँग पकड़ कर पृथ्वी पर पटका। वह मर गया। राक्षस डर गये। मुहाँ-मूँह यह बात नगर में फैल गई कि जिस बन्दर ने लंका जलाई थी, वह फिर आ गया है। कौन जाने अब के क्या उत्पात मचाये। सब जगह खलबली पड़ गई।

इनको राक्षसों ने रावण की सभा का पता दिया। वह तो उधर चले और इधर बहुत से राक्षसों ने रावण को आकर सूचित किया कि राम का दूत आ रहा है और वह महाबलवान है।

रावण हँसा- ''बुला लाओ। देखूँ तो सही वह कैसा है?'' वह गये उन्हें साथ लाए। अँगद ने दृष्टि डाली। वह काजल का काला पहाड़ बना हुआ बैठा था। उसकी भुजायें क्या थी, लम्बे-लम्बे वृक्ष के आकार की थी। सिर उस पर्वत का शिखर था। देह के रोंगटे लताओं के सदृश थे। आँख, नाक, कान पहाड़ की कन्दराओं के समान थे।

यह सभा में अभय होकर गये। इन्हें देखते ही सारे सभासद नमस्कारार्थ उठ कर खड़े हुए। रावण यह नहीं चाहता था कि कोई इनका सम्मान करे। उसे क्रोध आ गया। यह सबको नमस्कार करके सभा में बैठ गए।

रावण- 'अरे तू कौन है?'

अँगद- 'मैं राम का दूत हूँ।'

रावण- 'यहाँ क्यों आया?'

अँगद- 'तुम्हारे हित के लिए।'

रावण- 'वह क्या?'

अँगद- 'तुम उत्तम कुल के हो। पुलिस्त्य ऋषि के नाती हो। लोकपालअ ौरि दगपालअ ादिस बकोत ुमनेज ीति लया ास ंसारम े

तुम्हारा यश और कीर्त्ति फैल गई। यह तो अच्छा था, लेकिन तुमने यह बुरा किया कि जगत की माता सीता को हर लाये। राजमद बुरा होता है। अहँकार नाश का मूल कारण है। जो होना था वह हो चुका। तुमने महा अनुचित काम किया। अब मुँह में घास का तिनका दबाकर नारी और परिवार सहित राम के पास चलो। सीता को सबके आगे करो। त्राहिमान त्राहिमान करते हुये उनके पाँव पर गिरो। राम क्षमा और दया की मूर्ति हैं। तुम्हारा अपराध भूल जायेंगे। तुम को अभय कर देंगे। तुम्हारा कल्याण होगा। मेरे आने का कारण यही है।'

रावण- 'मुँह को सँभाल कर बात कर। इतना असभ्य क्यों होता है। मेरे तेज और बल को जानता हुआ तू मूढ़ बन रहा है। तेरे बाप का क्या नाम है?'

अँगद- 'मेरा नाम अँगद है और मैं बालि का लड़का हूँ जिस के साथ तुम्हार मुठभेड़ हो चुकी है।'

रावण यह बात सुन कर खिसियाना हो गया। बात को पलट कर कहने लगा 'हाँ! हाँ मैंने सुन रखा है। बाली एक बन्दर था। तू उसके कुल में कुलघातक पुत्र उत्पन्न हुआ। तू जन्म लेते ही क्यों न मर गया। कुल कलंक! तपस्वियों के साथ मिलकर उनकी बड़ाई कर रहा है। बता, अब बालि कहाँ है? है तो वह कुशल के साथ?'

अँगद को हँसी आ गई- 'दस दिन पश्चात् तुम स्वयं जा कर बालि से मिलकर कुशल पूछ लेना। बालि आप तुम को बता देंगे कि राम से बैर रखने का क्या फल होता है? राम का भक्त होने से मैं तो कुलघातक बना और राम के विरोधी होकर तुम कुलघातक हुए। राम का दूत और कुल का कलंक यह बात मैंने तुम्हारे ही मुँह से सुनी है।'

रावण- 'तू बड़ा मुँह फट है। मैं तेरी बात सुन-सुन कर अपनी सहन शक्ति से काम ले कर चुप हो रहा हूँ। नीति कहती है कि दूत की बातों को सह लेना चाहिये।'

अँगद– ‘तुम्हारी नीति, धर्मशील स्वभाव सब इसी एक बात से प्रकट है कि दूसरे की स्त्री को चुरा लाए और सहनशीलता का पता इसी से लगता है कि तुम्हारी बहिन के नाक कान काट लिए गए और तुमने एक बात तक किसी को नहीं कही और हम भी बड़े भाग्यवान हैं कि तुम जैसे पवित्र हृदय वाले का दर्शन पाया।’

रावण– ‘तू बहुत बातें बनाता है। क्या नहीं जानता कि सारे देवता मेरे आधीन हैं और इनमें से कोई सर नहीं उठा सकता और तेरी सेना में वीर पुरुष कहाँ है जो मेरा सामना कर सकते हैं? हाँ एक बंदर बल बुद्धि वाला है, जिसने लंका जला दी थी। उस अकेले से हो ही क्या सकता है? और वह कब मुझ से लड़ सकता है? जामवन्त बूढ़ा है। नल नील शिल्प विद्या प्रवीण है। मैं नहीं समझता कोई भी बंदर ऐसा होगा जो मेरे साथ लड़ने का साहस करेगा?’

अँगद– ‘वाह वाह! जिस बंदर की तू इतनी बड़ाई करता है, वह सुग्रीव का सबसे छोटा सेवक है। हमने उसे सीता का समाचार लेने भेजा था। वह बहुत जल्द-जल्द चलता है। यह उसमें गुण है। हम में उसे वीर कोई नहीं समझता। तुम उस को वीर कहते हो। वह सुग्रीव की आज्ञा के बिना लंका दहन कर गया। मन में लज्जित हैं। अब तक उनके सामने नहीं आया। हमारे यहाँ ऐसों की गिनती वीरों में नहीं है।’

‘यह तुम सच कहते हो कि राम की सेना में तुम्हारा सामना करने वाला कोई नहीं है। राम दल वीरों का समुदाय है। वह तुमको समझते क्या हैं? तुम्हारे साथ लड़ने में उनकी वीरता का अपमान होता है। लड़ाई भिड़ाई तो उसी के साथ अच्छी होती है जो बराबर का बलवान् हो। सिंह कब गीदड़ से लड़ता है? हाथी ने खरहे का कब सामना किया है? तुम से कोई भी लड़ना न चाहेगा। हाँ! क्षत्रीय धर्म कठिन है। इस दृष्टि से राम सेना तुम्हारे सम्मुख आ जाये तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।’

रावण–‘क्यों न हो। तू सच्चा बन्दर है। अपने स्वामी के हितार्थ बन्दर नाचता, कूदता, स्वाँग भरता है। तू भी अपने जातीय स्वभाव को प्रकट कर रहा है। यह बन्दर में बड़ा गुण है कि वह स्वामीभक्त होता है। मैं गुणग्राही हूँ। तेरे इस गुण को बहुत पसंद करता हूँ।’

अँगद–‘क्या कहना है तुम्हारी गुणग्राहकता का। हनुमान ने मुझ से कहा था कि रावण बड़ा गुणग्राही है। नगर जला, भाई, बेटे मारे गए। बहिन नकटी हो गई। फिर भी उसके सिर में जूँ तक नहीं रेंगी और न उसे क्रोध आया। इसी गुण को सुनकर मुझे तुम्हारे पास आने का साहस हुआ। जो हनुमान ने कहा था वह सब सचमुच मैंने अपनी आँखों से देख लिया। न तुम में लाज है, न रोष है, न मान, अपमान का विचार है। लज्जा होती तो और ही दशा होती।’

रावण– ‘ऐसी ही बुद्धि थी तब तो तुने अपने बाप को मरवा कर खा डाला।’

अँगद–‘बाप को खाया सो खाया, उसने तो अपनी करनी का फल पाया। सुरलोक को गया। मुझे संदेह नहीं रहा कि तुम्हारे भी खाने की बारी आ रही है। मैं अभी तुम को खा गया होता, मगर क्या करूँ। माँसाहारी नहीं हूँ और तुम्हारे जैसे अधम पापी के अपवित्र माँस को क्या मुँह लगाऊँ। कुत्ते, गिद्ध और गीदड़ों को तुम्हारा माँस खिलाया जायेगा। पहले तुम यह तो बताओ कि तुम कौन से रावण हो? मैंने कई रावणों का वृतान्त सुन रखा है। एक रावण बालि के जीतने को पाताल गया था। लड़कों ने उसे विचित्र जीव समझकर बाँध लिया और मारने-कूटने लगे। बालि को दया आई छुड़ा दिया। वह भाग आया फिर वापस नहीं गया। दूसरा रावण सहस्राबाहु के साथ लड़ने गया। वहाँ भी वह रस्सियों से जकड़ा गया। पुलस्त्य ऋषि ने जाकर उसे छुड़ाया। तीसरे रावण को मेरे बाप बालि ने छः महीने तक अपनी बगल में दबा रखा था। बताओ तो सही! इनमें से तुम कौन रावण हो?’

रावण– 'तुने अपमान युक्त वचन कहे हैं। मैं वह रावण हूँ जिसके घर का पानी वरुण भरता है। इन्द्र दीपक जलाता है और सेवा में लगा रहता है। दिग्गज और दिगपाल पहरा देते हैं। जगत के राजे–महाराजे मेरा नाम सुनकर काँपते हैं। मैंने कई बार अपने सिर काट–काट कर शिव को प्रसन्न किया। कैलाश पर्वत को अपने कन्धे पर रखकर नाचता रहा। मैं जब पग रख कर चलता हूँ, पृथ्वी डगमगाती है और इसकी दशा समुद्र की छोटी डेंगी के समान बन जाता है। मेरे तेज बल को कौन नहीं जानता। तू इस रावण को छोटा और मनुष्य को बड़ा बताता है। जान पड़ता है तू अज्ञानी और बावला है।'

अँगद –'अज्ञानी का लक्षण यह है कि वह आत्मा को नहीं जानता। राम जगत के आत्मा हैं। इनके बाण की महिमा अपार है। सहस्र बाहु की सहस्र बाहुओं को इनका एक बाण छेद सकता है। जिस परशुराम ने अनेक बार पृथ्वी के राजाओं का नाश किया और जिसके सामने कोई योद्धा वीर नहीं आ सकता था, राम ने उनके गर्व को तोड़ दिया। यह राम मनुष्य नहीं हो सकते हैं। गरुड़ पक्षी नहीं है। ठांगा साधारण जल की नदी नहीं है। कल्पतरु वृक्ष नहीं है। काम की प्रबल धार धनुषबाण नहीं है। यह केवल अलंकृत भाषा है। बैकुंठ कोई लोक या स्थान या दिशा नहीं है। इसी प्रकार राम मनुष्य नहीं है। इसी को देख। उनका एक छोटा बंदर लंङ्का में आया और सारे नगर को जलाकर धूल और राख बना गया। तुम्हारे लड़कों तक को मार गया। उस समय तुम्हारी प्रभुताई कहाँ चली गई थी।'

'इस अपवाद को छोड़ कर राम को भजो। पृथ्वी, आकाश और अंतरिक्ष की कोई शक्ति राम के द्रोही की रक्षा नहीं कर सकती, तुम मेरे सामने घमंड की बातें कर रहे हो। जब राम के सनसनाते हुये बाण चलेंगे, गेंद के समान राक्षसों के सिर उछलते हुये बन्दरों के पाँव में गिरेंगे। चील और गिद्द आकाश में मंडलाते हुये तुम्हारे हाथ–पाँव को पंजों में दबाये हुये उड़ेंगे। गीदड़, भेड़िये, लोमड़ी तुम्हारी मुर्दा लाशों को

काट कर खायेंगे। उस दिन का स्मरण करो। राम से वैर त्यागो। उनकी भक्ति में चित लगाओ। इसी में तुम्हारा कल्याण होगा?'

रावण – 'तू नर को नारायण मानकर उसकी इतनी प्रशंसा कर रहा है। मुझे नहीं देखता कि मैं क्या हूँ? मेरा भाई कुंभकरण लाखों में एक वीर है। मेघनाद, मेरा बेटा जगत् में अद्वितीय है। राम ने समुद्र पर पुल बाँधा और तुम जैसे डालियों पर उछलने–कूदने वाले पशुओं को अपने जाल में फँसा लिया। इसी को तू बड़ी प्रभुताई मान रहा है। मैंने मनुष्य, देवता और चराचर संसार में एक को भी नहीं छोड़ा, जो मेरे आधीन न हों। सब को मैंने लोहे के चने चबबा दिये। सब मेरा लोहा मान गए।'

बन्दरों को रीछों को आकर नचाया राम ने।
खेल बाजीगर का क्या अद्भुत दिखाया राम ने॥
नाचते हैं कूदते हैं फाँदते हैं हर घड़ी।
मृत्यु इनके शीश पर मण्डलाती है रह कर खड़ी॥
नाच बन्दर का दिखाने तू भी अङ्गद आ गया।
मुट्ठी दो मुट्ठी चने बदले में इसके पा गया॥

'यह मदारी का करतब है। आँखें खोलकर देख। उधर दो दुबले पतले तपस्वी हैं और इधर मेरे साथ लाखों करोड़ों योद्धा और वीर संग्राम में अपनी वीरता का दृश्य दिखाने को तत्पर हैं। कहाँ दो और कहाँ लाख और कहाँ करोड़। यह सुयोग्य होते तो घर से बाहर क्यों निकाले जाते। कोई न कोई दोष होगा तभी तो वन और पर्वतों में मारे–मारे फिर रहे हैं। अच्छा हुआ यह लङ्का में आए। मैं भी इन बन्दर, रीछ नचाने वालों का कौतुक देखूँगा। इनमें भुज बल होता तो तुझ जैसे दूत को मेरे पास क्यों भेजा होता। वह लड़ाके होते तो बेधड़क लंङ्का पर चढ़ाई करते। क्या यह निर्बलता का लक्षण नहीं है। दूत भी मेरी सभा में भेजा तो किसको? बन्दर को। उन्हें बन्दर को भेजते हुए लाज भी नहीं आई।'

अंगद– 'संसार में केवल तुम ही एक लज्जावान रह गये हो। बार–बार अपने मुँह से अपनी प्रशंसा कर रहे हो। तुम्हारे जैसा निर्लज्ज तो मेरी समझ में कोई पशु पक्षी भी नहीं है। गीदड़ बनकर गये और पराई स्त्री

को चुरा लाये। तुम में बल और पराक्रम होता तो राम-लक्ष्मण का सामना करते। चोर तो चोर ही होता है। इसमें लाज और वीरता का क्या काम? क्या करूँ राम की आज्ञा नहीं है, नहीं तो तुम्हारा सिर तोड़ कर मरोड़ देता। सीता को ले जाता और तुम देखते कि बंदर कैसा नाचता और नचाता है।'

रावण- 'बस बस! अब बहुत बातें न बना। मैंने तेरी सुन ली। अब बोलेगा तो तलवार के घाट उतार दिया जायेगा।'

अंगद- 'तुम गीदड़ हो। मुझे गीदड़ भक्ति दिखा रहे हो। मैं ऐसे निकम्मे, कामी, क्रोधी और निर्लज्ज के भय से नहीं डरता।'

राम ने अंगद को क्रोध की रोकथाम का उपदेश दिया था। रावण ने राम की निंदा की। उसका सहन करना इसके लिये उस समय कठिन हो गया।

दोनों हाथ पृथ्वी पर पटक दिये। भूकम्प आ गया। पृथ्वी डगमगा उठी। राक्षस डरे कि कहीं उन पर छत न गिर पड़े। रावण भी सिंहासन से नीचे आ गया। गिरा नहीं, सँभला रहा, लेकिन उसका मुकुट गिर पड़ा। अंगद ने उसको उठाया और अपनी सुरत की धार के सहारे राम की कुटी की ओर फेंका। वह चमकता और सनसनाता हुआ आ रहा था। बँदर डरे कि कहीं रावण ने उन पर बिजली का वज्र प्रहार तो करना नहीं चाहा। राम ने उन्हें ढाँढस देकर समझाया। 'यह वज्र नहीं है।' अंगद की भेजी हुई चमकीली वस्तु है। हनुमान लपके। उसे हाथ से पकड़ कर राम के चरणों पर डाल दिया। वह रावण का मुकट निकला। सबको संतोष हो गया और वह निडर हो गये।

नवाँ समुल्लास

अँगद का पाँव रोपना

अंगद में क्रोध का वेरा नहीं था। वह अपने आप में थे। रावण को क्रोध आ गया। राक्षसों को आज्ञा दी- 'दौड़ो बंदर और रीछों को पकड़-पकड़ कर खा जाओ। तपस्वी बालकों को जिन्दा पकड़ लाओ।' यह

सब उठे और अँगद पर झपटने ही को थे कि अँगद ने रावण से कहा- ''त्रिया चोर, कामी, कुमार्गी! तुझे लज्जा नहीं है। लज्जा को धोकर पी गया। यह राक्षस क्या राम को पकड़ेंगे? तू नहीं देखता, मैं अकेला हूँ और तू स्वयं मेरा सामना करने में असमर्थ है और इन कायर निष्चरों की सहायता चाहता है। बालि के मारने वाले राम नर हैं। अरे! अँधे तेरे हिये की आँखें फूट गई हैं। तुझमें बल कहाँ रहा? तेरे मन के भीतर द्वेष ईर्ष्या की अग्नि प्रचण्ड है। तेरा लहू जल रहा है, हड्डी सुलग रही है। चर्बी आहुति बन कर उस आग को भड़का रही है। तुझे सन्निपात चढ़ा हुआ है। तू क्या राम के साथ लड़ सकता है? जी में आता है कि अभी तेरे सिर की खोपड़ी के टुकड़े करके समुद्र में डूबो दूँ। एक तो राम की आज्ञा नहीं है, दूसरे तू राजा भी है। इसलिये इस समय जीता छोड़ रहा हूँ। राम के बैर का फल तू आगे चल कर देखेगा। मैं तेरी लंका को क्या समझता हूँ? वह तो मेरे हाथ के लिये सड़े हुये गुलर के सदृश है। जब चाहूँ उसे मल कर कर मिट्टी में मिला हूँ। इस लंका में तू वैसा ही बसा हुआ है जैसे गूलर में मच्छर और पिस्सू बसते हैं। बन्दर इस फल को बड़े चाव से खा जाते हैं। उसके जीव जन्तु मुँह के भीतर पिस-पिसा कर रह जाते हैं। वह किसी बन्दर का क्या कर सकते हैं?''

रावण हँसा- ''तपस्वियों की संगत तुझे क्या मिली? तूने झूठ बोलने का अभ्यास कर लिया। गाल फुलाना और मुँह आना बन्दर ही जानते हैं। यह औरों को नहीं आया। वह मुक्ति तो बालि को भी न सूझी होगी।''

अँगद- ''तू मुझे झूठा कहता है। जो जी में आये कह ले। मैं राम का सेवक हूँ। उनकी आज्ञा के विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकता। नहीं तो अभी तेरी जिह्वा पकड़ कर बाहर खींच देता और झूठा कहने का स्वाद चखाता। अब भी मैं इतना तो कर सकता हूँ कि तेरी सभा में मैं अपना पाँव रोपता हूँ। तुम में से एक बली निश्चर भी मेरे पाँव को उठा दे तो मैं सीता को हार जाऊँगा और राम को लंका से लौटा ले जाऊँगा।'' रावण ''और कुछ नहीं हो सकता तो इतना ही कर दिखाओ। तुम बड़े सच्चे

वीर हो। सच्चाई दिखाने का अवसर मिल रहा है। देखूँ तुममें कहाँ तक सच्चाई है और मुझमें कहाँ तक झूठाई है।''

''यह कह कर अँगद भरी सभा में खड़े हो गये और राम का बल लेकर पाँव को पृथ्वी पर जमाया। उनके शरीर का सारा बल पाँव में उतर आया और अँगद ने अपने सर्वाङ्ग का बल पाँव को दे दिया, जैसे ब्रह्म का सारा बल उसके अंतर में उतर आता है। क्रोध इस प्रकार शरीर के सारे अंगों पर बल को एक अँग में भर देता है।''

मेघनाद रावण का पुत्र बड़ा योद्धा और सब से शूरवीर था। रावण की आँख देख कर उठा। सारा बल लगा दिया हाथों से अँगद के पाँव उठाने लगा। पाँव तो भूमि में जमाये ऐसा बैठा था कि चिमट गया था। कितना बल लगाया, दाँतों तले पसीना आया। पाँव हिलता नहीं था। उसके हिलाने से पाँव वैसे हिल न सका जैसे कामी पुरुष के वचन को सुनकर किसी पतिव्रता स्त्री का मन चलायमान नहीं होता।

वह लज्जित हुआ और सिर नीचा करके सभा में गया। दूसरे वीर उठे। उठाना तो एक तरफ रहा, सबके लिये उसका हिलाना महाकठिन हो गया और सब के सब श्रीहत, तेजहत और बलहत होकर चुप चाप बैठ गये। फिर किसी का अँगद के पाँव उठाने का साहस नहीं हुआ।

अङ्गद ने कहा– 'देख लिया मेरे बल को और जिसका जी चाहे आ कर परीक्षा कर ले।'

इस ललकारने पर फिर कोई राक्षस उनके समीप नहीं आया। रावण खिसियाना हो गया– ''मैंने कैलाश पर्वत को सहज में अपने सर उठा लिया था। इस बन्दर का पाँव पहाड़ तो नहीं है मैं उसे उठाये देता हूँ।''

यह कह कर रावण सिंहासन के नीचे उतरा, अङ्गद के पाँव की ओर झुका, पाँव को हाथ लगाने ही को था कि अङ्गद ने ललकारा– ''रावण! तू बड़ा नीतिज्ञ कहलाता है। सेवक के पाँवों को हाथ लगाता है। तू राजा है। चल राम के चरण कमल में अपने सिर को झुका, उनका पाँव पकड़ मेरे चरण के छूने से तू अपनी भलाई की आशा रखता है। मैं तेरा निस्तार

नहीं कर सकता। राम महाप्रभु है वह जो चाहें सो कर सकते हैं।''

राम के चरणों में गिर, अपराध कर देंगे क्षमा।
राम करुणा सिन्ध हैं, उनमें क्षमा और है दया॥
दीन हितकारी हैं उपकारी हैं, और करुणा अयन।
शान्ति निभ्रान्ति सुख, चैन आनन्द के सदन॥
तू विरोधी होके उनका, भ्रष्ट होगा राक्षस।
वैर करके राम से तू, नष्ट होगा राक्षस॥

रावण बुद्धिहीन, बलहीन, तेजहीन और श्रीहीन हो गया। पाँव को हाथ लगाने से रुका। लज्जित होकर, सिर झुकाये हुये सिंहासन पर आ बैठा।

देख रावन! तू महा निर्बुद्धि अज्ञानी बना।
राम को नर जानकर अज्ञान अभिमानी बना॥
घास का तिनका उठाया वज्र सम वह हो गया।
भय जैन्ता को हुआ आपे से अपने खो गया॥
इन्द्र के शिव विष्णु के ब्रह्मा के शरणागत गया।
सबने की इसकी अनादर सब की दृष्टि से गिरा॥
राम की जब ली सरन, तब राम ने तारा उसे।
आँख छोड़ी एक उसको ऐसा निस्तारा उसे॥
चल सरन में राम के श्रीराम करुणा धाम है।
राम ही हैं सदगती कल्याण और विश्राम हैं॥

जहाँ तक सम्भव था मैंने तुझे समझा दिया। काल ने तेरी बुद्धि हर ली। तू नहीं जाता न सही, मैं अब जाता हूँ। मेरा काम बस इतना ही था।

यह कहकर अङ्गद उठे। राम के समीप जाकर उनके पाँव पर पड़े।

रावण उस समय घबरा गया। उससे कुछ न हो सका। सीधा वहाँ से उठकर महल में चला गया और राक्षस अङ्गद के बल और पराक्रम को देखकर सहम गये।

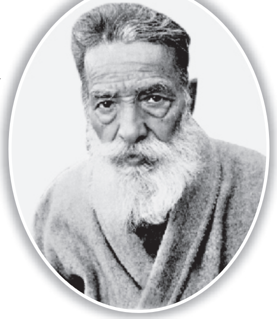

सत्संग

परमसन्त हज़ूर परमदयाल

पं. फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मंदिर, होशियारपुर।

दिनाँक 6 जनवरी, 1974 ई.

मन तू सुन ले चित दे आज
राधा स्वामी नाम की आवाज़।

अनहद बाजे घट घट बाजें,
अनुरागी सुन सुन आराधें॥
प्रेम भक्ति का लेकर साज ....॥

तीन लोग में अनहद राजै,
सत-लोक सत शब्द विराजैं।
तिस परे राधास्वामी नाम की गाज......॥

शब्द की महिमा सन्तन गाई,
जिन मानीं धुन तिन्हें सुनाई।
कर दिया उनका पूरा काज...............॥

राधा स्वामी नाम हिए में धारा,
सोई जन हुआ सब से न्यारा॥
त्याग दई कुल जग की लाज...........॥

राधा स्वामी नाम प्रीति जिन धारी,
राधा स्वामी तिस को लिया सुधारी॥
दान दिया वाहि भक्ति दाज...........॥

राधा स्वामी नाम है अपर अपारा,
राधास्वामी नाम है सार का सारा॥
जो सुने सोई करै घट में राज...........॥

राधा स्वामी!

मै नाक कटों में शामिल नहीं हुआ। मेरा प्रारब्ध अथवा मौज़ मुझ को एक दृश्य द्वारा परम पवित्र विभूति दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरण कमलों में ले गई। क्या पता था कि मुझे राधा स्वामी नाम मिलेगा? वाणियाँ पढ़ी तो विचार आया कि यहाँ क्या लिखा हुआ है? उस समय मैंने प्रण किया था कि मैं सच्चा बन कर इस मार्ग पर चलूँगा तथा जो कुछ मेरा अनुभव होगा, वह संसार को बता जाऊँगा। सम्भव है भारतवासियों या राधा स्वामी मत वालो! मैं गलती पर हूँ परन्तु यह मेरा प्रण था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। पवित्र विभूति दाता दयाल जी महाराज ने मुझे कहा था कि फ़कीर! युग बदल जाएगा। धर्म और सम्प्रदाओं में भी परिवर्तन आ जाएगा। चोला छोड़ने से पूर्व शिक्षा को बदल जाना। अब मैं अपने-आप से प्रश्न करता हूँ कि फ़कीर! एक दिन मर जाना है, तुम बताओ कि राधास्वामी नाम क्या है? क्या तुम ने सुना है? और यदि सुना है तो तुमको इसके सुनने से क्या प्राप्त हुआ?

मन तू सुन ले चित दे आज, राधा स्वामी नाम की आवाज़।
अनहद बाजे घट घट बाजें, अनुरागी सुन सुन आराधे॥
प्रेम भक्ति का लेकर साज़...........॥

हजूर महाराज कहते हैं कि अनहद बाजे हरएक के अन्तर बजते हैं। ऋषि-मुनि भी तो कोई घण्टा की ध्वनि तथा कोई शंख की ध्वनि अपने अन्तर में सुनते थे। ऐसे ही पन्थाई भी सुनते हैं। कोई अपने अन्तर सोहंग सुनता है, कोई मृदंग सुनता है तथा कोई बीन सुनता है किन्तु वह कहते हैं कि राधा स्वामी नाम की धुन सुनो। जो कुछ तुम अन्तर सुनते हो वह प्रेम से सुनते हो। साधन करने से कोई न कोई धुन तो अवश्य होती है। परन्तु वह कहते हैं कि राधास्वामी नाम की धुन सुनो। मैंने कहा है कि मैं नाक कटों में शामिल नही हुआ और न अनुचित विधि से मैं राधास्वामी मत का पक्ष ही करता हूँ। मेरा समस्त जीवन इसी धुन में व्यतीत हुआ है। गिरता भी रहता हूँ। अभी तक मेरा मन मुझे गिराता रहता है।

राधास्वामी नाम क्या है? हमारे अन्तर में ये जितने शब्द होते हैं घंटा, शंख, ओंकार, ररंगकार, सोहंकार इत्यादि-इत्यादि हमारी शारीरिक प्रकृति के अनुसार जिस प्रकार के तत्व शरीर में होते हैं या हमारे मन की वासनायें होती है, जब वह अन्तर में आपस में रगड़ खाते हैं तो शब्द उत्पन्न होते हैं। जैसे लकड़ी को लकड़ी से रगड़ने से अग्नि पैदा होती है।

हजूर दाता दयाल जी महाराज राधा स्वामी धाम में लकड़ियों से अग्नि उत्पन्न किया करते थे। घोड़े का पाँव जब पक्की सड़क पर पड़ता है तो बहुधा अग्नि की चिंगारियाँ निकलती हैं। यह जितने प्रकार के शब्द और प्रकाश अन्तर में उत्पन्न होते हैं यह सब तुम्हारी प्रकृति या जिन तत्वों में तुम्हारा शरीर, मन और प्रकाश बना हुआ, जब

तुम उसको इकट्ठा करते हो तो विशेष प्रकार का प्रकाश तथा विशेष प्रकार का शब्द उत्पन्न होता है। मैं अब नीचे के शब्द नहीं सुन सकता क्यों? मैं हूँ तो वही जो बसरे बगदाद में घंटा, शंख, ओइम्, ररंग, सारंग अथवा बीन सुना करता था किन्तु अब मेरी प्रकृति में परिवर्तन आ गया तथा मेरे भाव विचारों में भी परिवर्तन आ गया। क्या परिवर्तन आ गया? जब से मुझे यह ज्ञात हुआ कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट हो कर उनके सारे काम कर जाता है तथा मैं नहीं होता और न मुझे कोई जानकारी ही होती है तो मुझे यह ज्ञान हो गया कि मेरे अन्तर में जितने भाव-विचार उत्पन्न होते है या रूप बनते है यह सब माया है। इस दृढ़ निश्चय से उन रूप और रंगों के सत्य होने का जो भाव मेरे अन्तर में था वह जाता रहा। अतः अब मैं नीचे के शब्द नहीं सुन सकता।

अनहद बाजे घट घट बाजें, अनुरागी सुन सुन अराधे॥
प्रेम भक्ति के ले कर साज...............॥

जब मैं हजूर दाता दयाल जी महाराज के रूप को अपने अन्तर में सत्य मान कर उनसे प्रेम किया करता था या कोई भी ऐसे ही अपने गुरु से प्रेम करता है तो जब तक किसी भाव, विचार या रूप को सत्य मान कर कोई प्रेम करेगा तो उसी के अनुसार ही अन्तर में शब्द उत्पन्न होगा और रोशनी दृष्टिगोचर होगी।

अब प्रश्न यह है कि हम राधास्वामी नाम क्यों सुनें? हमें इस से क्या लाभ है? क्योंकि ये नीचे के शब्द या निचले स्थान चाहे वह स्थूल, सूक्ष्म अथवा कारण प्रकृति के हैं यह प्रत्येक की प्रकृति के अनुसार है। अतः चाहे कोई घण्टा, शंख ओंकार, रागरंकार अथवा सोहंकारश ाब्दस ुनताह ैव हज न्म-मरणके च क्करस ेब चन हीं सकता ।उ सकोद ुबाराज न्मग ्हणक रनाप ड़ेगा ।ि हन्दुओंम ेंभ ी

शारीरिक शब्द अर्थात् प्राकृतिक शब्द सुने जाते हैं। इन शब्दों के सुनने से या यहाँ का प्रकाश देखने से साँसारिक जीवन तो बना सकेगा, मानसिक आनन्द भी मिल सकेगा परन्तु मुक्ति नहीं प्राप्त होगी।

कुछ दिन हुए एक हिन्दुस्तानी डाक्टर की कैनेडा से चिट्ठी आई कि बाबा जी! मैं उत्तर कैनेडा अपने मित्र के साथ छोटे वायुयान में जा रहा था। मार्ग में तूफान आ गया, बर्फ पड़ने लगी, धुन्ध बहुत हो गई और अन्धेरा हो गया। सर्दी इतनी हो गई कि *Wireless Set* ने भी काम करना बन्द कर दिया। ऐसी दशा में जहाज को विवशतया नीचे उतारना पड़ा। चारों ओर कुछ दिखाई नहीं देता था, हम अत्यन्त घबराए, इतने में प्रकाश का एक गोला मुझे दिखाई दिया, उसमें आप विराजमान हुए थे। आप ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा कि यहाँ से निकट ही *Red Indians* रहते हैं। मेरे पीछे आओ तुम को यहाँ पहुँचाए देता हूँ। आगे-आगे आप चल दिए तथा पीछे-पीछे हम चल पड़े। वहाँ पहुँच कर आप ने कहा कि तुम लोग यहाँ विश्राम करो। दो घण्टे पश्चात् यह तूफान, बर्फ और धुन्ध ठीक हो जायेंगे तथा एक हैलीकोप्टर आकर तुम को आगे पहुँचा देगा। इसके पश्चात् आप लोप हो गए किन्तु जो कुछ आप ने कहा था वह ठीक वैसे ही हुआ। आगे चल कर वह लिखता है कि बाबा जी! मैं आप का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ आप ने यहाँ परदेश में मेरे अत्यन्त संकट के समय मेरी सहायता की है।

अब मैं तो गया नहीं। वह डाक्टर छट चक्करों का अभ्यासी है और मुझ पर विश्वास रखता है। उसके विचार ने तथा उसके विश्वास ने उसका मार्ग प्रदर्शन किया। मैं बिल्कुल नहीं गया और न ही मुझे कोई जानकारी है। ऐसे-ऐसे कई केस प्रति दिन मेरे पास आते हैं किन्तु मुझे कोई पता नहीं होता। यह सब मानव के विश्वास श्रद्धा तथा प्रेम का खेल है।

राधा स्वामी क्या है?

तीन लोक में अनहद राजै, सत लोक सत शब्द विराजैं॥
तिस परे राधास्वामी नाम की गाज............॥

तीन लोक क्या है? शरीर, मन और रूह। शारीरिक, मानसिक और आत्मिक प्रकृति। इनके शब्द त्रिलोकी के शब्द हैं। आदमी के विचार चाहे शुभ हैं, चाहे गन्दे हैं, अभ्यास करने से उसकी प्रकृति के अनुसार उसके अन्तर में शब्द होंगे किन्तु वह त्रिलोकी से निकल नहीं सकता। त्रिलोकी के परे का शब्द वह सुन सकता है जिस को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक जीवन के आनन्द की चाह नहीं है। इसलिए जब तक किसी को यह ज्ञान नहीं बल्कि यह यकीन नहीं कि मेरा शरीर नाशवान है और शारीरिक आवश्यकताओं की उसको चाह नहीं है और मानसिक आनन्द से उसको वैराग्य नहीं है, तब तक कोई आदमी इस त्रिगुणात्मक जगत से परे जो वास्तव में तुम हो, वहाँ का शब्द नहीं सुन सकता, किन्तु यह एक दिन का काम नहीं है। इसलिए मैं भाग्यशाली मानव हूँ और दाता दयाल जी महाराज का बहुत कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझे गुरु पदवी देकर मुझे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक जगत का ज्ञान प्रदान कर दिया। अभ्यास में प्रयत्न करता रहता हूँ कि शारीरिक, मानसिक और आत्मिक आनन्द की चाह को छोड़ कर इससे परे का शब्द सुनता रहूँ और सुनता रहता हूँ। आत्मिक आनन्द लेने वाला भी आवागमन से मुक्त नहीं। यह और बात है कि वह ऊपर के लोकों में जन्म ले।

राधा स्वामी नाम क्या है? तुम्हारी सुरत के अन्तर से जो शब्द निकलता है उसकी गूँज का नाम राधास्वामी नाम है। इसका चाहे जो भी नाम रख लो मतलब तो असलियत को समझने से है। मैं अपनी कमजोरियों को जानता हूँ। पुराने सँस्कार अभी तक मेरे मस्तिष्क में विद्यमान है। जब मैं अपने रूप को भूल जाता हूँ तो पुराने संस्कार

फुरते हैं और मैं भी फँस जाता हूँ। व्यक्ति की सुरत जब अपनी जात में या राधास्वामी नाम की अवस्था में चली जाती है तो उसका अन्त तो मिलता नहीं और न ही इसका किसी को पता है। इसलिए कोई उसको अलख कह देता है कोई अगम कह देता है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने लिखा है–

मंगलम् अशब्द अरूप शब्द रूप स्वामी।
मंगलम् अलख अनाम अगम नाम नामी॥

वहम ालिका त्रगुणात्मकज गतस ेप रेह ैंव हाँप हुँचज ानेस े त्रिलोकी की इच्छायें समाप्त हो जाती है। वह है धुर पद। उसके विषय में किसी को कुछ पता नहीं है फिर वह लिखते हैं–

सन्त भेष प्रगट जगत जीव को चेताया।
काल कर्म फंद काट धुर ले पहुँचाया॥

धुर पद की महिमा को कोई जान नहीं सकता। वह तो सब का आधार है बाहर का गुरु सन्त रूप में जीवों को चेताता है। किसी वस्तु का भेद होता है। मैं चेता तो रहा हूँ। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने दया करके मुझे यह काम दिया और आप लोगों ने मुझे चेताया। राधास्वामी मत जिसने सब का खण्डन किया है, मैं उसको जानना चाहता था। यदि मेरे स्थान पर कोई दूसरा होता तो इस कैनेडा वाले डाक्टर के पत्र से अपना प्रोपोगंडा करवाता कि देखा! मैंने कैनेडा जा कर अपने शिष्य की सहायता की है। खूब धन प्राप्त होता तथा मेरे ऊपर छत्तर झुलते, परन्तु मैंने क्योंकि अपने–आप को समय का सन्त सतगुरू कहा है, अत: मेरे ऊपर यह Duty है कि मैं अपना कर्त्तव्य पूर्ण करज ाना हताह ूँल ेगभ ूलेह ुएह ै किसीक ेप तान हींि क राधास्वामी नाम क्या है? जो लोग राधास्वामी मत को गाली देते हैं वह भी सच्चे हैं क्योंकि उनको समझाने वाला कोई नहीं है।

शब्द की महिमा संतन गाई, जिन मानी धुन तिन्हें सुनाई।
कर दिया उनका पूरा काज..............॥

सन्तों ने शब्द की महिमा गाई है। उपनिषदों के ऋषियों तथा सूफियों ने भी गाई है। बुद्धमत में भी शब्द का वर्णन है। राधास्वामी मत में पवित्र विभूति पूज्य राय सालिगराम जी ने शब्द प्रगट किया है। पहले केवल पाँच नाम का साधन था। जीवों का इन शब्दों की धुन सुनने से शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक खेल अच्छा हो जाता था। जैसे मैंने कैनेडा वाले डाक्टर के बारे में बात बताई है। वह क्योंकि मन के चक्करों का साधक है अत: उसकी सहायता हो गई। इन केन्द्रों पर साधन करने ऋद्धि–सिद्धी आ जाती है, मनुष्य की इच्छाएँ पूर्ण हो जाती है तथा उसकी सहायता होती रहती है। मैं इसका खण्डन नहीं करता। क्योंकि हमारे सांसारिक जीवन में इनकी भी अति आवश्यकता है परन्तु इससे आवागमन समाप्त नहीं होता।

सम्भव है कि ऊपर के लोकों में जन्म मिल जाये, क्योंकि ऊपर के लोकों में भी रूहें रहती है। पूरा काज क्या है? लोक तथा परलोक दोनों सुधर जाना। इस पाँच नाम के साधन से हमारा संसार बनता है तथा सांसारिक सुख प्राप्त हो जाते हैं। यह सब अपने मन का खेल है। कल एक व्यक्ति का पत्र आया, वह लिखता है कि बाबा जी! मेरे पेट में अत्यन्त पीड़ा थी, बहुत सी औषधियों का प्रयोग किया परन्तु कोई आराम नहीं हुआ। मेरे पास आपके फोटो वाली एक अँगूठी है, मैंने वह अँगूठी पेट पर रगड़ी, मेरी पीड़ा जाती रही और मैं अच्छा हो गया। अब आप सोचो कि उसकी पीड़ा कैसे गई? उसके विश्वास ने उसकी पीड़ा को दूर किया। मैं पाँच नाम के विरुद्ध नहीं हूँ मैं आप को राधास्वामी नाम की सच्चाई के विषय में बता रहा हूँ। राधास्वामी नाम तो आवागमन से बचने के लिए है परन्तु पाँच नाम सांसारिक सुखों के

प्राप्त करने के लिए है। जो व्यक्ति ऊँचा चढ़ जाता है तथा ऊपर के शब्द सुनता रहता है उसका संसार नहीं बनता। परन्तु वह आवागमन से निकल सकता है और काल चक्कर से बच सकता है।

चौदह लोक तक काल है। पाँच नाम वाले के विश्वास और ध्यान योग की शक्ति से उसको सांसारिक सुख प्राप्त होगा, किन्तु पाँच नाम का सुमिरन केवल जिह्वा से ही नहीं होना चाहिए, तब काम बनेगा। अपने अन्तर में ध्यान जमा कर उस स्थान के शब्द सुनो, तुम्हारे शरीर में प्रकाश जब अभ्यास करते-करते सुन्न अवस्था में जाएगा तो मन को आनन्द मिलेगा और जब प्रकाश में जाओगे, तो आत्मिक आनन्द मिलेगा तथा ऊपर का शब्द सुनने से ऊपर का आनन्द प्राप्त होगा।

गायत्री है तीन प्रकार का गाना और सावित्री उसका लक्ष्य है। जो तीन प्रकार का गाना सुनता है वह गायत्री का साधक है। मुख से केवल मन्त्र पढ़ने से कोई लाभ नहीं है। घंटा, शंख, मृदंग, ओ३म् और ररंग, सारंग से परे ओ३म् का बिन्दु है। राधास्वामी मत में भी यह गाना सुना जाता है। इसलिए राधास्वामी मत वाले गायत्री मन्त्र के सच्चे साधक हैं। केवल मुख से ही राधास्वामी-राधास्वामी करना या गायत्री मन्त्र का पाठ करना लाभदायक नहीं है। परन्तु पहली Stages (अवस्थाओं) में इनकी भी आवश्यकता है। क्योंकि यदि कोई बालक पहाड़े याद नहीं करेगा तो वह आगे चल कर प्रश्न कैसे हल करेगा? मैं इसका खण्डन नहीं करता।

हजूर दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि फ़कीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। अत: मैं तो अपना कर्म भोगता हूँ। किसी पर मेरा कोई उपकार नहीं है बल्कि आप लोगों की मुझ पर दया है कि आप लोग आ जाते हैं और मुझे अपना कर्म काटने का अवसर प्राप्त हो जाता है। आप लोग चार पैसे भी दे जाते हैं जो इस

जगह पर निर्धनों तथा दीन-दुखियों की सेवा पर अथवा प्रचार के काम पर व्यय होते हैं।

राधास्वामी नाम हिए में धारा, सोई जन हुआ सब से न्यारा।
त्याग दई कुल जग की लाज...........॥

तुम नीचे के शब्द घंटा, शंख और ओंकार इत्यादि सुनते हो, यह प्राकृतिक शब्द है इसलिए इनके सुनने से तुम प्रकृति से न्यारे नहीं हो सकते। जो व्यक्ति ऊपर के शब्द को सुनेगा वह तीनों से न्यारा हो जायेगा और जब उसका शरीर छूटेगा तो वह अपने घर पहुँच जायेगा। चेतन का बुलबुला अपने सिन्धु में समा जायेगा। निज स्वरूप में अथवा मालिकेकुल में मिल जायेगा। उसका बाहर का जगत भी तथा मन का जगत भी छूट जायेगा।

राधास्वामी नाम प्रीति जिन धारी, राधास्वामी तिस को लिया सुधारी।
दान दिया वाहि भक्ती दाज, मन तू सुनले चित दे आज॥

राधा स्वामी नाम की प्रीति क्या है? सत्संग में जा कर यथार्थ बात की समझता और अपने आद को अपना इष्ट रखना। जो आदमी बाबे फ़कीर को और किसी गुरु को, राम को या कृष्ण को सारी आयु अपना इष्ट बनाये रखेगा वह आवागमन के चक्कर से नहीं छूट सकता। त्रिलोकी से परे जाने के लिए हजूर महाराज ने लिखा है-

तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा, सत नाम सतगुरु गत चीन्हा॥

बाहर के गुरु की यह ड्यूटी है कि तुमको वह सच्ची बात समझा कर ऊपर का इष्ट तुम को दे। किन्तु आजकल गुरु जो नाम देते है वह नाम नहीं है, वह तो अपने नाम के लिए नाम देते है। नाम का अधिकारी कौन है?

विषयों से जो होय उदासा, परमार्थ की जा मन की आशा।
धन सन्तान प्रीति नहिं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जाके॥

ऐसे व्यक्तियों के लिए नामदान है। जो व्यक्ति इस ओर आता है उसको कहा जाता है कि स्त्री धन तथा सम्पत्ति को मौज को सौंप कर के आओ। इसका तात्पर्य यह है कि जो होता है वह होने दो, वह तो होगा ही, तुम निश्चित रहो। तुम को अर्थात् तुम्हारी सुरत को तुम्हारे अपने ही निज स्वरूप का इष्ट दिया जाता है यह इष्ट बाहर का गुरु देता है। तुम्हारा इष्ट अकाल पुरुष अथवा परम तत्व आधार जो कि त्रिलोकी से परे है, वह होना चाहिए। यह एक प्राकृतिक नियम है कि जिस से तुम प्रीति करोगे उसी में तुम मिल जाओगे। पहले कुछ दिन सत्संग करो, परन्तु सत्संग भी किसी सुलझे हुए पूर्ण पुरुष का होना चाहिये। आजकल तो स्थान-स्थान पर सत्संग हो रहा है किन्तु राधास्वामी मत में कहा गया है-

गुरु खोजो री जग में दुर्लभ रत्न यही॥

यह उसके लिए है जिन को अपने आद घर जाने की आवश्यकता है। इस संसार में सुख नहीं है, आज मान आदर है तो कल अनादर है। आज धनी हो तो कल निर्धनता है। सर्व साधारण के लिए पहले वेद मार्ग है, ध्यान योग है। जो कुछ तुम चाहते हो अपने अन्तर उसकी इच्छा रखो और अपने मन को रगड़ा दिया करो।

राधा स्वामी नाम है अपरम्पारा, राधा स्वामी नाम है सार का सारा।
जो सुने सोई करे घट में राज...॥

उन्होंने गलत नहीं कहा। राजा के आज्ञाधीन सभी रहते हैं इस लिए जो वहाँ पहुँच जाता है उसका सब पर कन्ट्रोल (शासन) रहता है। आज आप को बहुत कुछ बता दिया, किन्तु आप लोगों के लिए बहुत कठिन है। यदि इतना ही समझ लो कि यह संसार नाशवान है, हमें यहाँ बैठे नहीं रहना। यहाँ हम सब यात्री हैं और कुछ दिनों के लिए यहाँ आए हैं। यदि यह निश्चय भी बैठ जाए तो भी आप धन्य है। यदि यह दृढ़ निश्चय हो जाये कि यहाँ तो दुःख सुख आते ही रहते हैं

तथा हमें एक दिन यहाँ से चले जाना है तो भी तुम को उपराम हो जायेगा और तुम यहाँ फँसोगे नहीं।

मैंने शरीर से तो कोई बुराई नहीं की, हो सकता है मन से कभी की हो। आप लोग आ जाते हो, मैं सोचता हूँ कि आप को क्या दूँ? मेरे पास शुभ भावना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। हाँ मेरे पास जो ज्ञान है वह मैं सब को देता रहता हूँ। परन्तु आप लोग इसके अधिकारी नहीं हो। सच्चाई का कोई ग्राहक नहीं है। अब क्या मैं गया था कैनेडा? नहीं। तभी तो मैं कहता हूँ कि जिन महात्माओं ने अपने मान, आदर तथा धन के लिए पर्दा रखा तथा सच्चाई ब्यान नहीं की उन में से कोई भी लक्ष्य पर नहीं पहुँचा। यह मेरा Reading है। यह भी हो सकता है कि इस प्रकार से उन्होंने जीवों के अज्ञान को सम्भाला हो जैसे यह माई कहती रहती है कि बाबा जी! मैं आपके साथ जाऊँगी। अब यदि इसको असली बात समझाऊँ तो यह समझ नहीं सकती, परन्तु यदि इसने गुरु को फ़कीरचन्द नहीं समझा तो यह पहुँच जायेगी अन्यथा मैं कौन हूँ आगे ले जाने वाला? मैं तो केवल उपाय बता सकता हूँ।

अब कोई मुझे अहंकारी कहता है, कोई कुछ कहता है तथा कोई कुछ कहता है, परन्तु मुझे हजूर दाता दयाल जी महाराज का आदेश है कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। यदि उनको मुझे यह आज्ञा न भी होती तो भी मैं सच्चाई को खोल देता। क्योंकि मेरी समझ में यह एक नवीन बात आई है जिस को आज तक किसी ने बताया नहीं। मैं भी यदि परदा रखता तो संसार को लूटता। कोई गुरु कहीं नहीं जाता, यह सब जीव का अपना विश्वास है, जो उसकी सहायता करता है। गुरु की दया क्या है?

जब दया गुरु की हुई, चरणों की भक्ति मिल गई।
सब निबलता मिट गई, निश्चय की शक्ति मिल गई॥

संसार बाहर के गुरु के चरणों की भक्ति करता है और उन्हीं को पूजता है। असलियत क्या है? राधा स्वामी नाम है सतगुरु तथा प्रकाश उसके चरण है। जब तक कोई व्यक्ति प्रकाश में नहीं जाता वह गुरु चरण की शरण में नहीं आया। निबलता अर्थात् दुर्बलता का समाप्त हो जाना क्या है? पूर्ण दृढ़ निश्चय करा देना। यह बाहर के गुरु की डियूटी है, अपने सत्संग के वचनों से बाहर का गुरु जीवों की बुद्धि को निश्चयात्मक बना देता है।

आ गये सत्संग में और संग सत का हो गया।
दुर्मती जाती रही जब गुरु के मत का हो गया॥

गलत समझ का नाम दुर्मती है। गुरु की दया यह है कि वह अपने सत्संग से जीव की भ्रमात्मक समझ को दूर कर देता है। गुरु Correct understanding निश्चयात्मक बुद्धि देता है परन्तु यह उनके लिए है जो बुद्धि और विवेक रखते हैं। संसार में तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं रजोगुणी, तमोगुणी तथा सतोगुणी। जीवन तमोगुण से रजोगुण में आता है और रजोगुण से सतोगुण में आता है। गुरु जीव की बुद्धि को निश्चयात्मक बना देता है। जिन की बुद्धि दुर्बल है, उनके लिए सेवा दी जाती है। सेवा से उनकी वृत्ति बदल हो जाती है। प्रतिदिन के सत्संग सुनने से मानव की वृत्ति में परिवर्तन आ जाता है।

प्रेम का प्याला पिया, पीते ही मतवाला बना।
मन की सुधि बुधि खो गई, भोला बना भाला बना॥

अब मेरी बुद्धि निश्चयात्मक हो गई, मुझे समझ आ गई कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। अब मन में भोलापन आप ही आप आ गया।

पाँव में मस्तक नवाया, चित्त से धारा गुरु का रंग।
कीट जिसको पहले सब कहते थे, अब ठहरा भिरंग॥

गुरु शरण में जाने से कीट से भिृंग बन जाता है। भिृंग एक कीड़ा होता है, वह किसी छोटे से कीड़े को लाकर उसको अपने घर में बन्द

कर देता है तथा रात-दिन उस पर अपनी बोली की गूँज लगाता है। इस से वह कीड़ा भिृंग के रूप को धारण कर लेता है।

साधु संग झगड़ा भला, साकित संग न मीत।
बकरी के गल गन्थना, जिस में दूध न मूँत॥

जो व्यक्ति या जीव जिस वस्तु का स्मरण करता है वह उसी प्रकार का हो जाता है। किसी के साथ शत्रुता रखने से भी उसके गुण उसमें आ जाते हैं और उसका बेड़ा पार हो जाता है। प्रेम में तो मनुष्य लापरवाही भी कर जाता है, परन्तु शत्रुता की दया में चौकस रहता है। इसलिए विचार शीघ्र घना हो जाता है। रावण की राम साथ शत्रुता ही तो थी–

एक घड़ी आधी घड़ी आधी से पुनि आधि।
तुलसी सँगत साध की, कटै कोटि अपराध॥

अपराध का अर्थ है, गलती या गलत समझ। कल्पना करो कि एक व्यक्ति ने कोई गलती की किन्तु तत्पश्चात् उसे अनुभव कर लिया और क्षमा माँग ली तो हृदय स्वच्छ हो गया। यदि कोई सच्चा साधु मिल जाए तो उसकी संगति से मनुष्य को सीधा मार्ग मिल जाता है और दुर्मति चली जाती है। परन्तु जब तक दुर्मति नहीं जाती, जब तक मनुष्य गुरु मत का अनुयायी नहीं समझा जाता। अपने पेट के लिए जितने व्यक्ति सत्संग कराते हैं, यह उनकी भक्ति नहीं है, यह तो स्वार्थ है और यह माया का जाल है। इस से मैं भी मुक्त नहीं हूँ किन्तु संसार में रहते हुए इसके बिना निर्वाह भी नहीं है। परमार्थ कुछ और वस्तु है, इसलिए बात को समझो तथा अपना जीवन बनाओ। आजकल के शिष्य गुरु की नकल करते हैं। गुरु जैसे वस्त्र पहनना, गुरु जैसी दाढ़ी रखने से ये लोग समझते हैं कि यह गुरु का रंग है। तुम्हारा स्वतन्त्र विचार होना और समझ प्राप्त करना गुरु का रंग है।

आप में आपा लखा आपे में आपा ज्ञान था।
भरम में लटका हुआ भूला था और अज्ञान था।।

अब मुझे इन बातों की समझ आ गई। जैसे मैंने उस कैनेडा वाले डाक्टर का पत्र सुनाया है, मैंने आप से स्पष्ट बता दिया कि भाई ! मैं नहीं गया। यह सब मनुष्य के अपने ही कर्म और विश्वास, श्रद्धा और निश्चय का फल मिलता है। गुरु ने तो केवल तुम को भेद देना है।

शब्द को सुनते ही जो अन्तर में वृत्ति सो गई।
छिन में पल में वासना माया की सारी खो गई।।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी राग को।
गा रहा हूँ धन्य मैं कहता हूँ अपने भाग्य को।।

यह है गुरु की दया। गुरु तुम्हारे हित के लिए और तुम्हारी भलाई के लिए वचन कहता है, उनको सुनना समझना और उन आरुढ़ होना तुम्हारा काम है। परन्तु यह समझ शीघ्र नहीं आती। जो व्यक्ति गुरु के वचनों को समझ जाता है उसका मन शुद्ध हो जाता है मुझे तो यह समझ किसी सीमा तक केवल इस विचार से आई कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और यह अन्तर के रूप रंग केवल मानव के विश्वास काप रिणामह ै ाि फरम ैय हन िचेके श ाब्दस हस्राकार,अ ोंकार, रारंगकार और सोंहकार के शब्दों को छोड़ जाता हूँ। छोड़ क्या जाता हूँ यह मुझ से छूट गये। यह मेरे बस की बात नहीं । जब तक हम को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक प्रकृति के होने का विश्वास है तब तक यह शब्द आते ही रहेंगे। चूँकि मुझे यह दृढ़ निश्चय हो गया कि यह माया है और काल है, तो फिर मैं सत पद में गया। वहाँ मे उस वस्तु को खोज करता हुआ चला आ रहा हूँ जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है तथा शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है, उसका मुझे पता नहीं लगता। जो हमारे अपने आप (*Self*) का शब्द है उसे कोई राधास्वामी नाम कह देता है, कोई निज नाम कह देता है परन्तु

उसकी आद अवस्था की किसी को थाह नहीं मिलती। मुझे क्या प्राप्त हुआ? नमक की पोटली सिंध की खोज करने गई और उसी में खो गई और आप भी सागर में मिल गई। यह समझ आई कि मैं कौन हूँ? मैं उस मालिके-कुल की अंश हूँ, उस परम तत्व में हिलोर होने से मेरी सुरत बन गई, शब्द तथा प्रकाश में आ गई तो आत्मा कहलाई, इस से नीचे आ गई तो मन बन गई। इससे भी नीचे आ गई तो जीव कहलाने लग गई। अब यह जीवन का खेल एक तमाशा सा दृष्टि में आता है। इस ज्ञान से मुझे एक प्रकार की सन्तुष्टि तथा शान्ति प्राप्त हो गई। जिस मालिक को मैं ढूँढने निकला था वह तो एक अवस्था है, जात है, निज स्वरूप है। उससे बुलबुले बनते हैं और उसी में समा जाते हैं। यही बात स्वामी जी महाराज ने अन्य शब्दों में वर्णन की है कि हमारी आदि अवस्था क्या है?

नहिं खालिक मखलूक न खिलकत,कर्ता कारन,काज न दिक्कत।
दृष्टा दृष्टि नाहिं कुछ दरसत, वाच लक्ष्य नहिं पद न पदार्थ।।
जात सिफात न अव्वल आखिर, गुप्त न परगट बातिन जाहिर।
राम रहीम करीम न केसो, कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो।।
स्मृति शास्त्र न गीता भागवत, कथा पुरान न वक्ता कीरत।
सेवक सेव न दास न स्वामी,नहिं सत नाम न नाम अनामी।।

राधास्वामी नाम के साधन से इस अन्तिम अवस्था की दशा मस्तिष्क में आती रहती है परन्तु वह सदा नहीं रहती। कबीर साहब ने इस अन्तिम अवस्था का वर्णन इस प्रकार किया है।

सखिया वा घर सब से न्यारा, जहाँ पूरन पुरुष हमारा।
जहाँ नहिं सुख दुख साँच झूठ नहिं, पाप न पुन्न पसारा।
नहिं दिन रैंन चाँद नहिं सूरज,बिना ज्योति उजियारा।।
नहिं तहं ज्ञान ध्यान नहिं जप तप,वेद कतेव न वानीं।
करनी, धरनी, रहनी, गहनी, यह सब वहाँ हिरानी।।

घर नहिं अधर न बाहिर भीतर, पिण्ड ब्रह्मण्ड कुछ नाहीं॥
मूल न फूल बेलि नहिं बीजा, बिना वृक्ष फल सोहे।
आहंग सोहंग अर्ध ऊर्ध नहिं, स्वांसा लेख न कोहे॥
नहिं निरगुन नहिं सरगुन भाई, नहिं सूक्ष्म स्थूलम्।
नहिं अक्षर नहिं अचगति भाई,यह सब जन के भूलम्।
जहाँ पुरुष तहवाँ कछु नाहीं, कहें कबीर हम जाना॥
हमरी सेन लखै जो कोई, पावे पद निरवाना।

हिन्दू शास्त्र भी यही कहते हैं कि सब से पहले सत को असत ने ढक रखा था। शब्द और प्रकाश सत का प्राकटय है, इस विचार से राधा स्वामी मत और सनातन धर्म में कोई अन्तर नहीं है। समस्त जीवन इसी खोज में व्यतीत हुआ है कि सन्तों का मार्ग क्या है? इस राधा स्वामी नाम के साधन से मस्तिष्क में यह अनुभव आता जा रहा है कि मैं कोई वस्तु नहीं हूँ। जो कुछ है वह मलिक है तथा वह एक शक्ति है, उस में हिलोर आने से कहीं जीव बन जाते हैं, कहीं पशु बन जाते हैं, कहीं खनिज-पदार्थ बन जाते हैं, कहीं सन्तपना आ जाता है और कहीं परम सन्तपना आ जाता है। इस ज्ञान के ही जाने से जीव की जो अवस्था हो जाती है उसका नाम है विदेह गति। इस अवस्था में जाने के लिए सन्तों ने यह साधन बताए है तथा गुरु की महिमा वर्णन की है। सम्भव है सनातन धर्म या और किसी मत में कोई और विधि बताई गई हो। मानव जीवन में जो खींचातानी, दुःख, सुख तथा भ्रम और संशय आ जाते हैं उनका चला जाना ही अन्तिम अवस्था है। यही शास्त्र कहते हैं यद्यपि वर्णनशैली भिन्न है।

सब को राधास्वामी।

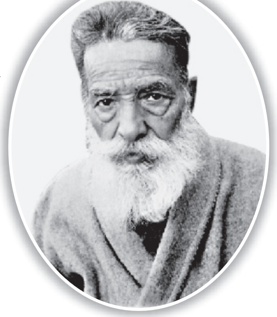

राधा स्वामी नाम

सत्संग परमसन्त हज़ूर परमदयाल
पं. फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मंदिर, होशियारपुर। 13 जनवरी, 1974 ई.

राधा स्वामी!

आज प्रातः जब मैं घर से मानवता मन्दिर आया तो दरवेश जालन्धरी ने मुझे कहा कि महाराज! आज आरती से पहले एक कविता पढ़ना चाहता हूँ। मैंने कहा कि यदि न पढ़ी तो क्या हागा? वह कहने लगा कि महाराज! मैं अवश्य पढ़ना चाहता हूँ। मैंने कहा कि तुम कविताएँ तो अवश्य लिखते हो परन्तु तुम्हारा मन बस में नहीं है। तुम इसे काबू नहीं कर सकते। सन्त मत की शिक्षा मन को नियन्त्रण में रखने की है। मानव के मन में एक भाव उत्पन्न हो जाता है और वह उसको बाहर निकालना चाहता है, क्योंकि उसमें नियन्त्रण की शक्ति नहीं है। जब हम बसरे-बगदाद में थे तो पण्डित पुरुषोत्तमदास जी भी अपने भाव के आधीन कविताएँ लिखा करते थे। दरवेश साहब ने अपनी कविता पढ़ी। वह कहता है कि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने उसके अन्तर प्रकट होकर उस को यह कविता लिखाई।

1. राह गुम करदा[1] जहाँ को, राहवर[2] दरकार[3] था।
राज था नफ़रत का, दुनिया में नदारद[4] प्यार था॥
2. चीखती रोती थी, चिल्लाती थी पड़ी इन्सानियत[5]।
खून के आँसू बहाती थी, खड़ी इन्सानियत॥
3. सिसकती[6] दम तोड़ती[7] थी, अजमते[8] इन्सानियत।
दोष[9] पर इन्सान के थी, तुरबते[10] इन्सानियत॥
4. आदमी ही आदमी के दरपये आज़ार[11] था।
भाई से नालां[12] था भाई, बरसरे पैकार[13] था॥
5. राह से बेराह होते जा रहे थे मीर पीर।
रहनुमाई के लिए उनके न थी कोई नज़ीर[14]॥
6. आमदो रफ्तन[15] के चक्कर में है जग सारा असीर[16]।
था परेशाँ रोजो शव[17], दर जुस्तजूये दस्तगीर[18]॥
7. शाहनशाह अरजो समां[19] पीरों का पीर।
ऐन मौके पर बखांना[20] मस्तराम आया फ़कीर॥
8. आफताबे आसमाने मारफत[21] बाबा फकीर।
गौहरे नायाब काने[22], मारफत बाबा फकीर॥
9. सरबराहे कारबाने राहे हक[23] बाबा फ़कीर।
पेशवाबे रहबराने राहे हक बाबा फ़कीर॥

---

1. पथ भ्रष्ट 2. पथ प्रदर्शक 3. आवश्यकता 4. नहीं
5. मानवता 6. रोती 7. प्राणहीन 8. बड़ाई
9. कन्धा 10. शव 11. कष्ट देना 12. दु:खी
13. शिकायत करते थे 14. व्यकित 15. आना जाना
16. कैद 17. रात दिन 18. नेता की खोज में
19. पृथ्वी व आकाश 20. घर में
21. आध्यात्मिकता के आकाश का सूर्य।
22. अध्यात्मिकता की खान का अमूल्य रत्न।
23. अध्यात्मिकता के पथियों का अगुआ।

10. कौन है जग में जो है, बेगानये बाबा फ़कीर।
क्यों न हो सारा जहाँ दीवानये बाबा फकीर॥
11. वज़्मे-मै-ख्वारां की जां[24], पैमानये[25] बाबा फकीर।
दीनो ईमां मैकशां[26], मैखानये[27] बाबा फकीर॥
12. ख्वाब गफलत[28] से जहाँ खुफ्ता[29] जगाया आन के।
राह गुम करदा[30] जहाँ को, राह दिखाया आन के॥
13. नाराए 'इन्सां बनो' जग में लगाया आन के।
आज फिर इनसान को इन्सां बनाया आन के॥
14. राज़े राहे हक[31] ज़माने को बताया आन के।
शायरे इरफा[32] मुझे उसने बनाया आन के॥
15. फैज[33] से उसके जहाँ में, वारिसे रहमत[34] हुई।
धो दिया जिसने गुबारे, नफरतो नखवत[35] दुई॥
16. फूल श्रद्धा के श्रद्धालू दिल से करते पेश हैं।
दर तेरे पर सर वजिसदा[36], रात दिन दरवेश[37] हैं॥
17. शायरों में आज कल तेरा नहीं कोई जवाब।
तेरी तखलियात[38] हैं खुद आप ही अपना जवाब॥
18. आसमाने सखुन[39] पर चमकोगे बन कर आफताब[40]।
शायरे इरफां[41] का देते हैं हम तुम को खिताब॥

---

24. मस्तों की जान 25. प्याला
26. मस्तों की दीन दुनिया 27. पी कर मस्त होने का स्थान
28. अज्ञानता की नींद 29. सोए हुए संसार को
30. पथ भ्रष्ट 31. वास्तविकता का भेद 32. फकीरों का कवि
33. कृपा 34. गुण व द्वेष को साफ कर दिया
35. सिर झुका कर 36. सन्त 37. विचार
38. कविता के आकाश पर 39. सूर्य
40. सन्तों का कवि 41. वचन लेखबद्ध करते रहो

19. **लगन से करते रहो, मन्ज़ूम कलमाते[42] फकीर।**
रह वशर[43] की पहुँच तक, पहुँचाओ जज़बाते[44] फकीर॥

20. **खुश रहो फैलाओ दुनिया में खियालाते फकीर।**
वक्फ[44] है तेरे लिए 'दरवेश' दावाते[45] फकीर॥

आप लोगों ने यह कविता सुनी। मैं भी इन्सान हूँ। सोचता हूँ कि जितनी प्रशंसा इसने मेरी की है क्या यह ठीक है। नितांत असत्य है। यदि मैं कुछ कर सकता होता तो यह घिराव तथा ये हड़तालें जो आजकल देश में हो रही हैं इनका कोई समाधान करके इनको बन्द कर देता। यहाँ मन्दिर में थोड़े से कर्मचारी रहते हैं, कई बार इनकी तू तू-मैं मैं हो जाती है, मैं इन को ठीक कर देता। 'दरवेश' ने जो कुछ लिखा है यह इसके दिल का भाव है। इसने यह भी बताया है कि इसके अन्तर हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज रात को आए और उनके साथ बात चीत हुई। परन्तु मैं यह कहूँगा कि वह हजूर दाता दयाल जी महाराज नहीं थे, वह इसका अपना ही मन था।

जैसा ख्याल वैसा हाल॥

मैं अपने आप से यह पूछता हूँ कि तुम यह काम क्यों करते हो, तुम्हारे काम का कोई लाभ तो है नहीं। मैं तो अपना कर्म भोगता हूँ। मेरा कर्म क्या था? मैं एक साधारण हिन्दू था। राम, कृष्ण, ईश्वर, परमेश्वर तथा देवी-देवताओं को मानने वाला था। मेरे अन्तर भी मालिक को प्राप्त करने की उत्सुकता थी, जैसे दरवेश के अन्तर कविता लिखने की है। अन्तर में एक दृश्य था जो हुज़ूर दाता दयाल जी महाराज के चरणकमलों में ले गया था, उन्होंने मुझे गुरु मत की ओर लगाया तथा सन्तों की शिक्षा प्रदान की। जब मैं ने सन्तों की वाणियाँ पढ़ीं तो मेरी समझ में नहीं आती थीं। उनमें मेरे प्रतिष्ठित

42. व्यक्ति 43. भाव
44. प्रदान है 45. शुभ-भावना

ऋषि, मुनि जो हो गए हैं उनका खण्डन था। हजूर दाता दयाल जी महाराज को तो मैं छोड़ नहीं सकता था क्योंकि उनके रूप में मैं मालिक को जानता था। अत: उस समय मैं ने प्रण किया था इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूँगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊँगा। फिर हजूर दाता दयाल जी महाराज ने यह काम दे दिया। वह मेरे बारे में लिखते हैं कि -

तेरा रूप अद्भुत अचरज तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल स्नेही॥

इसलिए मैं तो अपना कर्म भोगता हूँ। यह सत्संग भी मैं आप लोगों को नहीं कराता, यह भी अपने-आप को ही कराता हूँ और अपने ऊपर ही घटाता हूँ।

तेरी गठरी में लागे चोर, बटोहिया काहे सोवे।
पाँच पचीस तीन हैं चोखा यह सब कीन्हा शोर॥
जाग सवेरा बाट अनेड़ा फिर नहिं लागे जोर।
भवसागर एक नदी बहत है, बिन उतरे जाओ वोर॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत कीजे भोर॥

बटोहिया है यात्री और बाट का अर्थ है मार्ग। कबीर साहिब कहते हैं कि ऐ यात्री! तू तो सो रहा है और तेरी गठरी को चोर लगे हुए हैं। वह चोर है पाँच, पच्चीस और तीन। तीन गुन हैं, पाँच तत्त्व हैं और पच्चीस सन्तों के विचार के अनुसार प्रकृति के रूप हैं। यह हमारा क्या चुराते हैं? हमारी शांति और हमारा सन्तोष। जब इस शरीर में आते हैं तो हमारे शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक जीवन में कभी हम को दु:ख आ जाता है, कभी सुख आ जाता है। कभी हर्ष तथा कभी शोक आ जाता कभी आशा आ जाती है। तथा कभी हम निराश हो जाते हैं। यह सब हमारी शांति को चुराते हैं।

आज प्रात: मेरे पास एक व्यक्ति आया और कहने लगा कि बाबा जी! मुझे प्रसाद दीजिए ताकि मेरे लड़का हो। मैंने कहा कि पहले तुम्हारे कितने बच्चे हैं? उसने कहा कि चार लड़कियाँ और एक लड़का। कहने का तात्पर्य यह है कि यहाँ कोई न कोई आस या कामना लगी ही रहती है। किसी को कोई मुकद्दमा है, किसी को कोई रोग है, ''दरवेश साहिब'' को ऊँची कविताएँ लिखने की रुचि है और मुझे फकीर बनने की अभिलाषा थी। मैं इन चोरों से बचना चाहता था ताकि फिर और जन्म न लेना पड़े तथा इस त्रिगुणात्मक जगत् में न आना पड़े। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए या निर्वाण को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक धर्म ने अलग-अलग विधियाँ बताई हैं। कोई सतनाम का जाप बताता है, कोई अल्लाहू का सुमिरन बताता है और कोई कुछ बताता है। मैंने सब की बातें सुनीं, हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे राधा स्वामी नाम दिया तथा राधा स्वामी धाम का इष्ट बताया था। चूँकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा अत: अपने कर्म भोग वश कह रहा हूँ यद्यपि मैं जानता हूँ कि मेरी सच्चाई को संसार सुनने के लिए तैयार नहीं है यदि किसी ने मेरी बात को समझ भी लिया तो वह उस पर आरूढ़ नहीं होता।

कलि केवल एक नाम अधारा।
वेद शास्त्र श्रुति मत सारा॥

किसी ने कोई नाम बताया और किसी ने कोई नाम बताया। स्वामी जी महाराज ने हजूर महाराज जी को पाँच नाम का साधन बताया परन्तु हजूर महाराज जी ने लोगों को पाँच नाम के स्थान पर राधा स्वामी नाम का साधन बताया। मैं खोजी हूँ, मैंने राधा स्वामी मत को क्या समझा है? जिस नाम के अथवा अन्दरूनी गाने अर्थात् अनहद शब्द के सुनने से मानव सदा के लिए तीन, पाँच और पच्चीस के चक्कर से निकल सकता है उसका नाम राधा स्वामी नाम है। सम्भव

है कि यह केवल मेरी अपनी ही सन्तुष्टी के लिए हो परन्तु असलियत यह है कि राधा स्वामी नाम के अतिरिक्त कोई व्यक्ति अपने अस्तित्व या अपने हैपने को छोड़ नहीं सकता। सन्त नाम और वस्तु है तथा राधा स्वामी नाम और वस्तु है। मुझे अपने विचारों को प्रकट करने के लिए अनुकूल शब्द न मिलें परन्तु इसका अनुभव कि राधा स्वामी नाम क्या है, मुझे आप लोगों से हुआ। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे नाम दिया परन्तु इस नाम की समझ मुझे आप लोगों के अनुभवों से आई।

अतएव मैं आप लोगों को अपना सच्चा सतगुरु मानता हूँ। नाम को कौन समझेगा? इसको समझने के लिए बुद्धि चाहिए। मैंने जिह्वा बिना जिह्वा के बहुत जप किया और भी बहुत से लोग प्रतिदिन जाप करते हैं। गायत्री मन्त्र वाले भी प्रतिदिन बहुत सी मालायें फेरते हैं। क्या इनमें से किसी को यह वस्तु मिली? जहाँ गति होती है वहाँ ध्वनि तथा प्रकाश का उत्पन्न होना अनिवार्य है। शब्द तथा प्रकाश का होना अनिवार्य है। हमारे शरीर में घट चक्करों में भी ध्वनि है। मन में भी ध्वनि है। आत्मा के देश में भी प्रकाश है तथा सुरत के देश में भी शब्द है। **सूरत जब शरीर, मन तथा आत्मा को भूल कर अकेली हो जाएगी, तो इस अकेली हो जाने के पश्चात् की अवस्था का नाम राधा स्वामी नाम है।** आप इस अवस्था का चाहे कोई भी नाम रख लो, तात्पर्य तो बात को समझने से है।

यही नाम निज नाम है, मन अपने धर ले॥

जो न माने, वह राधा स्वामी नाम न कहे। जो आप को अच्छा लगे आप इस अवस्था का वह नाम रख लो। **जो वास्तव में तुम हो उसकी गति का नाम निज नाम या राधास्वामी नाम है और जहाँ केवल स्वेत रंग का प्रकाश है उसकी गति का नाम सतनाम है।** इसका अनुभव मुझे अपने अनुभव से हुआ। केवल इस विचार से कि

मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। मुझे इस बात की समझ आ गई। अब दरवेश साहिब ने कहा है कि उनके अन्तर हजूर दाता दयाल जी महाराज आए, परन्तु वह नहीं आए। कौन आया? जो संस्कार उसके मस्तिष्क में था वह उभरा और उसने हजूर दाता दयाल जी महाराज का रूप धारण किया। अब मैं सोचता हूँ कि संसार के सब लोग निज नाम चाहते हैं? नहीं।

नाम देने को तो कोई पाँच नाम देता है, कोई ॐ नाम देता है, कोई गायत्री का नाम देता है और कोई राधा स्वामी नाम देता है। परन्तु इन नामों का केवल जाप करने से तो तुम अकेले नहीं हो सकते। तुम्हें अकेले होना है, मैं भी अकेला नहीं हो सकता था क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज से मेरा प्रेम था और उनका रूप प्रत्येक समय मेरे साथ रहता था अब भी मैं जब मन में आता हूँ तो उसका रूप मेरे साथ रहता है। **जब तक कोई व्यक्ति किसी के रूप किसी भाव या किसी वस्तु का सहारा लिए हुए है वह निज नाम को प्राप्त नहीं कर सकता।** क्यों? जो लोग मुझे गुरु समझते हैं तथा वह यह समझते हैं कि बाबा जी हमें अपने घर पहुँचा देंगे, यदि उनको मैं सच्ची बात नहीं बताता तो उनकी हानि होगी। यदि मैं परदा रखूँ और आप लोगों से यह कहूँ कि तुम लोग मेरा ध्यान करते जाओ और तुम आवागमन से बच जाओगे तो इसे तुम मेरी गुड्डी चढ़ाओगे, मेरी सेवा करोगे तथा मुझे धन दोगे। इससे मैं दोषी बनूँगा तथा मेरी भी हानि होगी। मैं अपनी जान बचाना चाहता हूँ ताकि इस गुरु बनने का मुझे कोई पाप न लगे और मुझ पर कपट करने का कोई दोष न आए। अत: मैं स्पष्ट वर्णन करता हूँ। सैंकड़ों लोग मेरा ध्यान करते हैं तथा मुझे उनके पत्र आते हैं कि बाबा जी! आप आए, आप ने यह किया और आप ने वह किया परन्तु मैं कहीं नहीं जाता और न कोई अन्य गुरु, देवी, देवता अथवा अवतार ही किसी के अन्तर आता है। यह सब अपने-अपने विश्वास का खेल है।

मैंने गुरु आज्ञा वश अपने आप को समय का सन्त सतगुरु कहा है। सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का। आप लोगों के कारण मुझे राधा स्वामी नाम के सार का ज्ञान हुआ और निज नाम प्राप्त हुआ। अब मैं उस अवस्था में ठहरने का प्रयास करता रहता हूँ परन्तु अभी तक मुझ से वहाँ ठहरा नहीं जाता। आज तक ऐसा स्पष्ट वक्तव्य किसी महात्मा ने नहीं दिया। जो लोग संसार चाहते हैं और मन का आनन्द चाहते हैं उनके लिए सन्तों ने पाँच नाम अर्थात् सहस्राकार, ओंकार, रारंगकार, सोहंकार तथा सत्याकार का साधन बताया है। यदि कोई व्यक्ति जिह्वा से इन नामों का जाप करता रहेगा तो वह लौकिक सुखों को प्राप्त नहीं कर सकता और न ही मानसिक आनन्द ले सकता है। ऐसे ही गायत्री मन्त्र का जाप करने वाले तथा न सतनाम का ही जप करने वाले शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक सुखों को प्राप्त कर सकते हैं। जब तक कि वह इन स्थानों पर साधन करके वहाँ के शब्द को नहीं सुनता तथा प्रकाश को नहीं देखता। गायत्री है तीन प्रकार का गाना। जो व्यक्ति मन्त्र ही पढ़ता रहेगा वह गाना नहीं सुन सकता और न वह प्रकाश ही अर्थात् सावित्री के दर्शन ही कर सकता है। विधि पूर्वक साधन करने के बिना कोई व्यक्ति दसवें द्वार के बिन्दू तक नहीं पहुँच सकता। लाख पण्डित गायत्री मन्त्र का जाप करते रहें तथा लाख राधा स्वामी नाम का जाप करते रहें उनको शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक अवस्थायों का सुख प्राप्त नहीं हो सकता।

यह करनी का भेद है नाहीं बुद्धि विचार।
कथनीं तज करनी करे, जब पावे कुछ सार॥

आप लोग कहोगे कि मैं जाप का खण्डन करता हूँ, नहीं। यह भी आवश्यक है परन्तु सारी आयु के लिए नहीं। छोटा बच्चा यदि पहाड़े याद नहीं करता तो वह आगे चल कर प्रश्न कैसे हल करेगा परन्तु यह नहीं कि वह सारी आयु पहाड़े ही याद करता रहे। यह श्रेणियाँ हैं।

प्रत्येक व्यक्ति को इनमें से गुजरना पड़ता है। तुम्हारी दृष्टि को ऊँची करने के लिए मैं कहता हूँ कि अजपा जाप करो, परन्तु मर्म को समझो। यदि सारी आयु जाप ही करते रहोगे तो आगे नहीं जा सकोगे।

हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। अब मेरी समझ में नही आता कि मैं शिक्षा में क्या परिवर्तन करूँ? कल मैंने आजकल देश में जो बन्द और हड़तालें हो रही हैं उनके विषय में एक लेख लिखा। मेरे मित्रों ने देखा तो कहने लगे कि यह शत-प्रतिशत ठीक है, परन्तु यदि आप यह बातें जनता तक पहुँचायोगे तो लोग आप के विरुद्ध हो जायेंगे। उन्होंने भी सच कहा है क्योंकि मैं जानता हूँ कि लोग सच्चाई को सुनने के लिए तैयार नहीं है तथा सच्ची बात को कोई अच्छा नहीं समझता। दिनाँक 25 दिसम्बर को मैंने रेडियो पर ईसा मसीह की बड़ी प्रशँसा सुनी कि नवियों तथा बलियों का सरदार आ गया और मुक्ति दिलाने वाला आ गया। अब मैं सोचता हूँ कि क्या ईसा मसीह, हज़रत मुहम्मद अवतार अथवा कोई सन्त हमारे पापों को क्षमा करवा सकता है या मुक्ति दिला सकते हैं? नहीं। क्यों? जब मैं जीवित बैठा हुआ किसी के अन्तर नहीं जाता तो कैसे मानूँ कि कोई मरा हुआ गुरु आकर किसी को ले जाएगा या उसके पापों को क्षमा करवा देगा। यह मैं क्या कहता हूँ? मैं जब बाहर जाता हूँ तो जिन लोगों का मुझ पर विश्वास है वह सैंकड़ों व्यक्ति मुझे घेर लेते हैं। अपनी श्रद्धा का प्राकट्य करते हैं तथा मेरी सेवा करते हैं। मेरे सर पर भी कई उत्तरदायित्व है, अतः अत्यन्त स्पष्टता पूर्वक वर्णन कर रहा हूँ कि तुम्हारी मुक्ति तुम्हारे साधन, दृढ़ विश्वास तथा कर्म द्वारा होती है। गुरु-गुरु करने से मुक्ति नहीं होगी बल्कि गुरु के ज्ञान से होगी। तुम्हारा जी चाहे जितनी इच्छा हो मेरी या किसी अन्य की प्रशंसा करते रहो किन्तु तुम अपने कर्म के फल से नहीं बच सकते। इस स्पष्ट वक्तव्य से अब मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं है।

शास्त्र भी यही कहते हैं कि ज्ञान के बिना मोक्ष नहीं। मैं आप लोगों को ज्ञान ही तो देता हूँ। यदि आप लोगों को दृढ़ विश्वास हो जाए, जैसे कि मुझे को हुआ है कि अन्तर में जितने भाव-विचार और संकल्प उठते हैं यह सचमुच हैं नहीं, एक फिल्म की भाँति हैं तो फिर तुम उनको सत्य नहीं मानोगे। ताराचन्द डोगरा रिजर्विस्ट *(Reservist)* था। सन् 1962 ई० में जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया तो ताराचन्द को भी वापिस फौज़ में बुलाया गया। जब ये जाने लगा तो मेरे पास आया। मैंने कहा कि चिन्ता मत करो, दाता दयाल जी तेरी रक्षा करेंगे और तुम कुशल पूर्वक सहर्ष घर आ जाओगे। इसने आकर बताया कि एक बार सात दिन तक मुझे खाने को कुछ न मिला, मैं अकेला ही था, एक स्थान पर बैठ गया, आप प्रगट हुये और कहा कि चिन्ता मत करो, यहाँ से निकट ही एक कुटिया है उसमें कुछ खाने को हैज ाओउ सख ानेक ोख ाल ो ाप्ातःत ुम्हारेि लएस हायताअ ा जायेगी। इसने बताया कि ठीक ऐसे ही हुआ। अब मैं तो गया नहीं, वह कौन था जिस ने उसको जाकर कहा? क्योंकि इसकी मेरी बात पर दृढ़ विश्वास था, तो उसको अपने ही विश्वास ने उसको बचाया। मैं नहीं था। इन अनुभवों ने मेरी आँख खोल दी। अब मैं राधास्वामी नाम में जाने के लिए विवश हो रहा हूँ परन्तु यह मन फिर भी मुझे गिराता रहता है। यदि यह ज्ञान हो जाए कि यह रूप रंग जो अन्तर प्रगट होते हैं यह सब माया है और है नहीं परन्तु भासते हैं तो फिर तुम जीवन में मन के चक्कर में नहीं जाओगे और जीवन मुक्त अवस्था में आ जाओगे। क्योंकि सत्संग सुने हुए होते हैं। इसलिए अन्त समय पर प्रकाश तथा शब्द में चले जाओगे तथा निज रूप में पहुँच जाओगे।

मैं जानता हूँ कि मेरे सत्संग बहुत उच्च कोटि के हैं, आप लोगों को इनकी आवश्यकता भी नहीं है, परन्तु मैं तो अपना कर्म भोग रहा हूँ। तुम लोग गृहस्थी हो। इस संसार में पाँच नाम तुम्हारे सहायक हैं। राधा

स्वामी मत में सहस्राकार और ओंकार कह दिया तथा शास्त्रों ने अनमय कोष तथा मनोमय कोष कह दिया। इनमें कोई अन्तर नहीं है। ब्रह्म सूत्र में लिखा है कि विज्ञानमय कोष का सर प्रेम है। दायाँ कन्धा खुशी है। दूसरे कन्धे में मस्ती है तथा आनन्द है तथा तुम ब्रह्म है। ब्रह्म में बढ़ने और मनन करने की शक्ति है। ब्रह्म है प्रकाश। जो व्यक्ति सहस्रदल कंवल में घण्टा तथा शंख सुनते हैं उनके सांसारिक काम स्वाभाविक ही होते रहते हैं। किसी को क्या कहूँ, मेरे होते रहते हैं। यहाँ मन्दिर के साथ कुछ ज़मीन लेनी थी तथा पैसे की आवश्यकता थी, श्री परदेशी आये और मुझे अपने गाँव में ले गया। एक सहस्र रुपया दिया, कहने लगे माता जी ने मुझे कहा था कि मानवता मन्दिर में मेरे नाम एक कमरा निर्माण करा देना। अत: यह रुपया मन्दिर के लिए देता हूँ। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि मेरे काम आप ही आप होते रहते हैं। आप लोगों के पैसे का अपव्यय नहीं होता, आप लोग देखते है कि हम लोग यहाँ कोई *(Show)* दिखावट अथवा प्रतिष्ठा स्थापित करने का काम नही करते। सत्संग पर झण्डियाँ नहीं लगाते।

राधास्वामी नाम के अधिकारी बहुत थोड़े लोग हैं। सर्वसाधारण लौकिक व मानसिक सुख चाहते हैं। इसलिए लौकिक इच्छाएँ हैं, उनके लिए सहस्रदल कँवल में अभ्यास करना अनिवार्य है। उनकी ही वासना के अनुसार उनकी इच्छाएँ पूरी होती रहेंगी। त्रिकुटी में अभ्यास करने से मन में ज्ञान उत्पन्न होगा, जिस प्रकार दरवेश साहिब को है। गुरु स्वरूप अथवा अपने इष्ट का ध्यान करने से जब मन एकाग्र हो जाता है तो मन में ज्ञात आ जाता है। सुन्न में अभ्यास करने से मन को मस्ती मिलती है। सोहंकार में अभ्यास करने से वेदान्त आ जाता है। ये सब सोपानें व्यक्ति के मन को सहारा देने के लिए अनिवार्य है। मैं किसी का खण्डन नहीं करता, न वेदान्त का और न

मूर्ति पूजा या सुमिरन ध्यान अति आवश्यक है। गायत्री तीन प्रकार का गाना है। इसके पश्चात् आत्मिक पद आता है। इसलिए कोई भी गलत नहीं है। गलत यह है कि जिस को समझ नहीं है। आप मुझे अहंकारी कह लो अथवा कुछ भी कह लो किन्तु मैं सन्तमत को साफ करने के लिए आया हूँ। सन्तमत वही है जो ऋषि मुनि कह गए।

कोई महात्मा किसी के दु:ख को दूर नहीं कर सकता, हाँ उस को उपाय बता सकता है और उसको ज्ञान बता कर उसके जीवन में सुधार कर सकता है। अपनी प्रकृति को देखो, दूसरों का अनुसरण मत करो। अपने अन्तर के भावों के अनुसार गुरु से आज्ञा लेकर साधन करो। उसके अनुसार तुमको साँसारिक कामों में सफलता मिलेगी। मैं पार जाना चाहता था, मेरी प्रकृति के अनुसार मुझे राधास्वामी धाम का इष्ट मिला। आप सत्संगियों ने मुझे यहाँ तक पहुँचाया। अब लोग मिलते हैं तथा पत्र लिखते हैं कि बाबा जी! आप हमारे अन्तर प्रगट हुए अथवा जागृत अवस्था में प्रगट हुए, आप ने यह कहा तथा वह कहा, आप ने हमारा यह काम किया आदि-आदि। किन्तु मैं तो कहीं जाता नहीं। चौदह लोक में काल बसता है। काल बुरा शब्द नहीं है और न ही माया बुरी है। हम लोग काल और माया के पीछे डंडा लेकर फिरते हैं। इसके बिना हमारा गुज़ारा नहीं है। केवल बात को समझो और माया में न फँसो। हमारे मन में कभी यह विचार नहीं आता कि हम ने यहाँ से एक दिन चले जाना है।

राधास्वामी मत मेरे लिए एक अद्‌भुत वस्तु थी और मुझे इसकी समझ नहीं आती थी। मुझे यह समझ देने के लिए दाता दयाल जी महाराज ने यह काम दिया था और कहा था कि तुम को सच्चे सतगुरु के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे और अब हो गए। यद्यपि मैं जानता हूँ कि संसार मेरे सत्य वक्तव्य को सुनने के लिए तैयार नहीं है और

इसी कारण से मुझे कोई व्यक्ति पैसा भी नहीं देता, किन्तु मैं तो अपना कर्म भोगता हूँ। अब दरवेश साहिब ने मेरी कितनी प्रशंसा की है किन्तु इस से मुझे खुशी नहीं मिलती, क्योंकि मैं जानता हूँ कि न कहीं मैं जाता हूँ, न ही कुछ करता हूँ और न ही कुछ कर सकता हूँ। हाँ शुभ कामना देता हूँ और जो ज्ञान मैंने जीवन में अनुभव किया है वह देता हूँ। जो कुछ दरवेश साहिब ने कहा यह सब ही मन का भाव है।

राधा स्वामी नाम जो गावे सो तरे।
कलि कलेश सब नाश, सुख पाय सब दुख हरे॥

गुरु नानक साहिब ने भी कहा है कि–

सर्व रोग का दारू नाम।

वह कौन सा नाम है? वह है ज्ञान कि तुम कौन हो? जब तुम को अपने रूप का ज्ञान हो जाएगा तो फिर कोई दुःख नहीं। अब मुझे निश्चय है कि मैं तो सुरत रूप हूँ। वह ज्ञान मुझे आप लोगों की दया से हुआ। मुझे खेद है कि मेरे पास धन नहीं अन्यथा जिन लोगों ने मुझे गुरु माना है, मैं उनको धनी बना देता। अब आप देखो! महात्मा दयालदास को मैंने नाम नहीं दिया। मैं तो इसको जानता भी नहीं था। यह संसार के दुखों से और अपने भाईयों के अनुचित व्यवहार से घबराया हुआ था। कहीं मेरा सत्संग सुना होगा, साधन करने लग गया। फिर कहता है कि मेरा शब्द नहीं खुलता था। मेरे सत्संग में यह विचार ले कर आया कि यदि बाबा जी मुझे ककड़ी का प्रसाद दे दें तो मेरा शब्द खुल जाएगा। मुझे तो पता नहीं था। मैंने स्वाभाविक ही एक ककड़ी उठाई और दयालदास को दे दी। उसने बताया कि इस प्रसाद से उसका शब्द खुल गया, किन्तु मैंने तो कुछ नहीं किया। अब वह नाम देने लग गया। वास्तव में नाम दिया नहीं जाता, लिया जाता है। दीवानो! तुम भूल में हो, तुम्हारा ही विश्वास है जो तुम को सुख देता है।

मैं किसी को नाम नहीं देता क्योंकि नाम का कोई अधिकारी नहीं है। मैंने न कृषक जी को न दयालदास को नाम दिया। हाँ कमालपुर वाली माई को मैंने नाम दिया। जो कुछ तुम को मिलता है वह तुम्हारे ही विश्वास और श्रद्धा का फल मिलता है। किसी ने तुम को कुछ नहीं देना। मैं किसी को कुछ नहीं देता। रसूल आजाद बम्बई का रहने वाला है। मैं बम्बई गया, उसने मेरा सत्संग सुना। मैं तो उसको जानता नहीं था। पिछले साल यहाँ आया, तो उसने बताया कि बाबा जी! कोई ऐसा अवगुण नहीं था जो मुझ में न हो। आप का सत्संग सुनने से मेरे सब अवगुण छूट गये। मैंने तो कुछ किया नहीं, उसके अवगुण कैसे छूट गए? सत्संग सुनने से उसके विचारों में परिवर्तन आ गया और अवगुण चले गए। वह अपने अवगुणों से दुःखी था मैं कैसे *Credit* (श्रेय) लूँ?

एक जगह विश्वास रखो और उसको पूर्ण मानो। मैं यह नहीं कहता कि मुझ पर विश्वास रखो, जहाँ तुम्हारी इच्छा हो और जहाँ तुम को प्रेम हो वहाँ रखो और साधन करो। हाँ! यदि वास्तविकता को जानने की इच्छा है और भरम निवारण करना चाहते हो तो मेरे पास आओ। गुरु करता क्या है?

वारी जाऊँ मैं सतगुरु के, मेरा किया भरम सब दूर।
चन्द चढ़िया कुल आलम देखे, मैं देखूँ भ्रम दूर॥

वास्तव में जो तुम हो वह मालिक का अँश है और वह इस पिंजरे में आई हुई है और यहाँ पाँच, पच्चीस और तीन के साथ मिल कर अपनी शांति खो दी है। ऐसा समझ कर यदि करोगे तो साधन कठिन न होगा। इसके अतिरिक्त दुनिया में जो कुछ किसी को मिलता है वह उसके कर्म अनुसार मिलता है।

लिखिया ललाट टरे नहिं टारा।
भावों को, को मेंटन हारा॥

हजूर दाता दयाल जी महाराज अपने एक शब्द में लिखते हैं।

ऐ आफताबे सादिक, परदा उठा दे अपना।
आँखें तरस रही हैं, जलवा दिखा दे अपना॥

वह आफताबे हकीकत कौन है? (सच्चाई का सूरज) कौन है? ऐ इन्सान! यह तेरा अपना ही आप है। तेरा अपना ही सुख है तू स्वयं आफताबे हकीकत है। यही राधास्वामी दयाल ने फरमाया है।

भानु रूप मालिक सुन आई।
हर हिरदे में रहा समाई॥

शास्त्र भी यही कहते हैं कि वह मालिक हर जगह व्यापक है। किन्तु तुम्हारे में जो आता है वह तुम्हारा अपना ही विचार है। तुम्हारी सुरत स्वयं पूर्ण है। वह पाँच, पच्चीस, तीन के चक्कर में फँस कर अपनी शान्ति खो बैठी है।

ये नूर तेरा मेरे बन परदा आगे आया।
जात और असलियत को है बे-तरह छुपाया॥

इस बात को कौन समझेगा कि नूर कैसे परदा है? तुम अपने अन्तर नूर को देखते हो और शब्द को सुनते हो परन्तु जो चीज़ देखती है और सुनती है उसकी तरफ तो तुम्हारा ध्यान नहीं जाता। इसलिए तुम्हारे लिए यह परदा है।

इस वास्ते सहस्रदलकंवल,त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न और सोहंकार में अभ्यास करने वाला साधक अपना अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष और आनन्दमय कोष में साधन करने वाला लक्ष्य पर नहीं पहुँचता और इस परदे में ही रहता है। जो कहते हैं कि बाबा फ़कीर अथवा बाबा सावन सिंह जी महाराज लाल रंग में हमारे अन्तर में प्रगट होते हैं वह क्या है? परदा और माया। तुम प्रकाश को ही तो देखते हो। असली चीज़ जो रोशनी को देखती है उसकी तरफ तो तुम्हारा ध्यान नहीं जाता। दाता दयाल जी महाराज कहते हैं कि तुम लोग अपने रूप को नहीं जानते।

ये है हिजाब तेरा, यह है नकाब तेरा।
गो नूर है मुजल्ला, मेरा बना अन्धेरा॥

यद्यपि वह रौशनी है मगर मेरे लिए अन्धेरा है। कौन समझेगा मेरी बात को। मैं भी कभी सुना करता था कि राधा स्वामी मत वालों ने ब्रह्म को भी काल कहा है। ब्रह्म प्रकाश है और वह परदा है। जो चीज़ उसको देखती है वह पूर्ण है और वह तुम हो।

इसको हटा दे दम में, मैं असलियत को देखूँ।
तू क्या है कौन हूँ मैं, आसानी से यह समझूँ॥
जो तू है वह ही मैं हूँ, हम दोनों ही हैं यकसाँ।
गालिब जुदा जुदा है, वाहिद है रूह और जाँ॥
दिल में तेरी जगह है तू आके दिलगर्जी हो।
वहदत का राज ये बातिन, अब मेरे दिलनशीं हो॥

बहदत क्या है? अन्तर में प्रकाश और शब्द को भी छोड़ कर अपने आप में अकेले हो जाना किन्तु साँसारिक आवश्यकताएँ हम को आगे जाने नहीं देती।

महवे जमाल करदे, महवे जलाल कर दे।
परदा उठे दुई का, महवे वसाल कर दे॥

प्रकाश और है, शब्द और है और देखने वाला और है और वही तुम हो। इसलिए राधास्वामी नाम तुम्हारा अपना ही नाम है। तुम ख़ुद राधास्वामी हो किन्तु कब? जब परदा उठ जाएगा और इस परदे को उठायेगा कोई आफताबे हकीकत अथवा आफताबे सादिक अथवा बाहर का पूर्ण गुरू। इसीलिए अपने आप को सन्त सतगुरू कहा है। इसमें भी मेरा मन्तव्य है। जो लोग मुझे अहँकारी कहेंगे वह मेरे पास आयेंगे नहीं और जो सच्चाई के जिज्ञासु मेरे पास आयेंगे उनको मैं असलियत बता दूँगा।

तू क्या है असलियत का, तेरे पता नहीं है।
परदा है नूर तेरा, मेरी खता नहीं है॥
देखा जा तेरा जलवा, आँखों को खीरगी है।
यह खीरगी नहीं है, दरअसल तीरगी है॥

जो कुछ तुम देखते हो यह मालिक का नूर है। खुले रूप में तो यह है कि मैं तेरा जलवा देख रहा हूँ किन्तु दरअसल यह अन्धेरा है। दृश्य देखने से प्रसन्नता मिलती है। अब दरवेश साहब की बात सुन कर लोग तो यह कहेंगे कि दरवेश साहब तर गए क्योंकि इनके अन्तर हजूर दाता दयाल जी महाराज आये हैं। आप में से कोई कहता है कि उसके अन्तर बाबा फकीर आ गए, कोई कहता है कि उसके अन्तर बाबा सावन सिंह जा आए आदि आदि। किसी के अन्तर प्रकाश आ गया। किसी के अन्तर कोई दृश्य आ गया। खेद है कि हजूर दाता दयाल जी महाराज की मैं प्रतिष्ठा न कर सका जिसके वह पात्र थे। मेरा तो उनके साथ काल मत का प्रेम था।

अब दिल में है तमन्ना, उठ जाए परदा एक दम।
हम दोनों मिल रहेंगे, बातन में होके हम दम॥
है राधा स्वामी रक्षक, जाबत हुए हैं साबर।
रौशन हो घट का मन्दिर, दरशन मिलें बराबर॥

हजूर दयाल जी महाराज की अपार दया है कि उन्होंने मुझे यह काम दिया और मुझे इस परदे की समझ आ गई।

तेरी गठरी में लगे चोर बटोइया काहे सोवे॥

वह कौन से चोर हैं जो हमारे *Self* को अपनी ओर खींचते हैं और हमारी शान्ति को हम से छीन लेते हैं? वह है हमारा शरीर, सहस्रदल कंवल, त्रिकुटी, सुग्न, महासुन्न और भंवर गुफा। इनके दृष्य हम को अपनी ओर खींचते हैं। कभी हम खुश होते हैं और आनन्द लेते हैं और कभी हम दु:ख उठाते हैं। हमारा अपना घर कहाँ है?

पिंड अंड ब्रह्माण्ड से पारा, वह है देश हमारा॥

तभी तो मैं कहता हूँ कि मैं अनामी धाम से आया हूँ। जहाँ से कोई आता है उसको वहाँ की ही लगन होती है। मछली पानी से निकलती है और पानी ही की खोज करती है। जो उसको खाना है वह भी पानी माँगता है। मुझे उसकी खोज है। प्रयत्न करता रहता हूँ किन्तु अभी

तक पुराने संस्कार रोकते रहते हैं। मालिक का धन्यवाद है कि इनमें मैं फँसता नहीं हूँ।

मैंने बहुत कुछ कहा है, किन्तु आप लोग उस अवस्था के इच्छुक नहीं है। आप को तो संसार चाहिए। इसके लिए मैंने बता दिया है कि घंटा, शंख, ओंकार और रारंगकार को सुनो, यदि घर जाना चाहते हो राधा स्वामी नाम अथवा निज नाम को पकड़ो किन्तु ये बहुत कठिन काम है। मैंने इसके लिए सारी आयु खो दी। अब जाकर पता लगा कि वह क्या अवस्था है। जब सुरत ऊपर चली जाती है तो उस समय सुख के अन्तर न यादे खुदा और न यादे मालिक रहती है। न स्वामी का भाव, न सेवकपने का भाव रहता है।

स्वामी जी ने अपनी वाणी में कहा है–

नहिं खालिक मखलूक न खिलकत,
कर्ता कारन काज न दिक्कत।
दृष्टा दृष्टि नहीं कुछ दरसत,
वाच लक्ष्य नहिं पद न पदारथ॥
जात सिफात न अव्वल आखिर,
गुप्त न परगट बातिन जाहिर॥
राम रहीम करीम न केसो,
कुछ नहिं कुछ नहिं, कुछ नहिं था सो॥
स्मृति शास्त्र न गीता भागवत,
कथा पुरान न वक्ता कीरत॥
सेवक सेव न दास न स्वामी,
नहिं सत नाम न नाम अनामी।
कहाँ लग कहूँ नहीं था कोई,
चार लोक रचना नहिं होई॥
जो कुछ था सो अब कह भाखूँ,
अमुन सुन्न विसमाधी राखूँ॥

हैरत हैरत हैरत होई,
हैरत रूप धरा एक सोई॥

मैं खोजी हूँ और एक विशेष लक्ष्य पर पहुँचने का मेरे अन्तर में भाव है। परन्तु फिर वापिस आ जाता हूँ। सोचता हूँ कि इतना ऊँचा चढ़ जाने के पश्चात् प्राप्त क्या हुआ? जो कुछ मैं कहता हूँ यह पूर्व सन्तों की खोज से आगे कहता हूँ। एक डाक्टर जो कि हजूर बाबा जगत सिंह जी महाराज का शिष्य था, उसने मुझे बताया कि बाबा जगत सिंह जी महाराज ने सत्संग में कहा था कि भविष्य में आने वाले सन्त, पिछले सन्तों की आजकल की रिसर्च के आगे कहेंगे। अब मैं जो कुछ कह रहा हूँ यह पिछले सन्तों की खोज से आगे की बात है किन्तु यह संसार तो फिर भी मेरे सम्मुख आता है तो फिर इस साधन से मुझे क्या प्राप्त हुआ? यदि मैं वहाँ पुहँच गया और मेरी सुरत अलग हो गई तो फिर मुझे में कोई शक्ति होनी चाहिए। मुझे में तो क्या किसी भी सन्त में नहीं है। यदि सन्तों में यह शक्ति होती तो वह अपने रोगों को दूर कर लेते और कष्ट न उठाते। मुझे यह समझ में आया है कि हमारा निज स्वरूप जहाँ से हम आए है वह एक तत्त्व है। उसमें हिलोर होती है और जीव जन्तु, सूर्य-चन्द्रमा, नक्षत्र, ब्रह्म, विष्णु, महेश इत्यादि अनेक प्रकार की बन जाती है। अपना-अपना खेल खेलने के पश्चात् पुनः उसी में समा जाते हैं। इस ज्ञान से मुझे शांति मिली। स्वभाव के वश अभ्यास करता हूँ। समस्त जीवन मैंने जो कुछ किया, वह अब एक भ्रम सा दृष्टिगोचर हुआ। जो कुछ हो रहा है यह सब उसकी लीला है। जिस को यह ज्ञान आ जाता है उसको विदेहगति आ जाती है। उसको ज्ञान हो जाता है कि वह स्वयं ही सब कुछ है। अतः हम क्यों निष्प्रयोजन अपना सिर खपायें। इस ज्ञान का नाम है शांति। कबीर साहब से अपने शब्द से कहा है कि-

सखिया वा घर सब से न्यारा, जहाँ पूरन पुरुष हमारा॥
जहाँ नहिं सुख दुख सांच झूठ नहिं, पाप न पुन्न पसारा।

नहिं दिन रैन चन्द्र नहिं सूरज, बिना ज्योति उजियारा॥
नहिंत हंइ ाानध यानन हिंज पत प,व`दक तेबन ब ानीं।
करनी धरनी रहनी गहनी, यह सब वहाँ हिरानी॥
धर नहिं अधर न बाहिर भीतर, पिंड ब्रह्मांड कुछ नाही।
मूल न फूल बेल नहिं बीजा, बिना वृक्ष फल सोहे।
ओअं सोहंग अर्ध ऊर्ध नहिं, स्वासा लेख न कोहे॥
नहिं निरगुन नहिं सरगुन भाई, नहिं सूक्ष्म अस्थूलम्।
नहिं अक्षर नहिं अवगति भाई, यह सब जग के भूलम्॥
जहाँ पुरुष जहवाँ कुछ नहीं, कहे कबीर हम जाना।
हमरी सैन लखे जो कोई, पावे पद निरवाना॥

जब व्यक्ति को यह ज्ञान हो जाता है कि सारा खेल उस मालिक का है तो फिर व्यक्ति उस में फँसता नहीं है और चिन्ता को छोड़ जाता है तथा मालिक की गोद में इस प्रकार चला जाता है जैसे बच्चा माँ की गोद में चला जाता है। यह है जीवन मुक्त और विदेह गति। अब मैं सोचता हूँ कि जब मानव वहाँ पहुँच जाता तो क्या संसार नहीं रहता? संसार तो अपने स्थान पर स्थित रहता ही है, परन्तु उसके मस्तिष्क के अन्तर संसार का विचार नहीं रहता और वह सब कुछ भूल जाता है। मुझे यह ज्ञान हो गया कि जो कुछ हो रहा है यह सब उसका खेल है और उसकी मौज है। अब हँसी-खुशी से जीवन व्यतीत होता है। आप लोग आ जाते हैं, आप लोगों से हँसता रहता हूँ, मृत्यु के पश्चात् क्या होगा किसी को क्या पता? अब न कोई शोक है न चिन्ता है। सहज समाधि है-

साधो! सहज समाधि भली।

गुरुप्रतापज ाि दनस`ज ागी,ि दर्नाि दनअ धिकच ली॥
जहाँज हाँड ोलूँस ोप रिक्रमा,ज ोकु छक रूँस ोस`वा।
जब सोऊँ तब करूँ डंडवत, पूजूँ और न देवा॥

कहूँ सो नाम सुनूँ सो सुमिरन, खाऊँ पिऊँ सो पूजा।
गृह उजाड़ एक सम लेखूँ, भाव मिटाऊँ दूजा॥
आँख न मूहूँ कान न रूँदूँ, तनिक कष्ट नहिं धारूँ।
खुले नैंन पहिचानू हँस हँस, सुन्दर रूप निहारूँ॥
शब्द निरन्तर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी।
उठत बैठत कबहूँ न बिसरूँ, ऐसी ताड़ी लागी॥
कहे कबीर यह अमुन रहनी, सो परगट कर गाई।
दुख सुख से कोई परे परम पद, तेहि पद रहा समाई॥

यह है अन्तिम लक्ष्य। कोई इसको विदेह गति कहता है, कोई जीवन मुक्त अवस्था कहता है। केवल वर्णन शैली तथा साधन शैली का अन्तर है। वाणी के जाल में फँस कर एक दूसरे पर समालोचना समाप्त हो सकती है। मुझे तो पता नहीं कि मैं पहुँचा हूँ अथवा डूबा हूँ। मैं सात वर्ष की आयु से इस ओर चला था, अब 87 वर्ष का हो गया, 80 वर्ष इसी धुन में व्यतीत हो गये। अब क्या अवस्था आ गई? मालिक की इच्छा अथवा मौज़। श्रीमद् भगवद् गीता में भी 'शरणागतम्' कहा गया है। सब का उद्देश्य एक ही है। जिस को गुरु ज्ञान मिल जाए उसको फिर अधिक परिश्रम की आवश्यकता नहीं है। किए लिए खपते हो कि सहस्रदल कंवल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न और भंवरगुफा खुले। ये सारे खेल प्रकृति के अनुसार होंगे, जैसी किसी की प्रकृति है उसी के अनुसार उसके भाव तथा अनुभव होंगे।

गुरु मिले तब काह कमाना।

परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि जिस को बाबा फकीर अथवा कोई और गुरु मिल गया उस को कोई कमाई करने की आवश्यकता नहीं है। जिस ने गुरु की बात को समझ लिया है तथा उस पर आचरण करता है उसके लिए कोई कमाई नहीं है।

सब को राधा स्वामी।

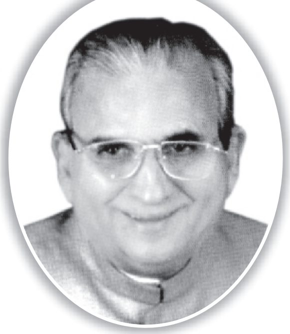

सत्संग
परमसन्त हज़ूर मानव दयाल जी महाराज
कानपुर 7-3-84

आरम्भ में यह शब्द पढ़ा गया :-

जिनको चाह राम की साधो, राम उन्हें मिल जाते हैं।
राम दास के पास राम हैं, और नहीं कोई पाते हैं॥
वाद-विवाद में राम नहीं हैं, राम न पूछा पेखी में।
राम दास ने राम को पाया, सहज ही देखा देखी में॥
राम नहीं तीरथ में रहते, राम व्रत के साथ नहीं।
राम दास के हाथ राम हैं, औरों के वह हाथ नहीं॥
बुन्द में सिंधु सिंधु में बुन्दें, बुन्द-सिंधु दोउ एक हुए।
बुन्द-सिन्धु का झगड़ा मन में, उनके लिए अनेक हुए॥
राधास्वामी सतगुरु आये, भेद दिया पूरा-पूरा।
जो कोई भेद भाव को मेटे, सतगुरु का सेवक सूरा॥

(शिव शब्द-सागर)

अखंड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मैं श्री गुरुवे नमः॥
मानव धर्मस्य धातारं, दाता दयालस्य प्रियतमम्।
सन्त धर्मस्य गोप्तारं, फकीरम् बंदे जगद्गुरुम्॥

राधास्वामी!

मेरी अपनी ही आत्मा के स्वरूप उपस्थित भाइयो और बहनो! आज यहाँ कानपुर में, परमसन्त हज़ूर परमदयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज के महासमाधि लेने के बाद, यह पहला मौका है कि मैं सत्संग देने के लिए आया हूँ। उन्होंने यह कर्त्तव्य मेरे ज़िम्मे लगाया था, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में जो अनुभव किया, केवल उस अनुभव के आधार पर ही वह सच्चाई बयान की जो कि उनसे पहले किसी सन्तमत के या अन्य किसी सम्प्रदाय के बड़े से बड़े धर्माचार्य ने भी इस प्रकार स्पष्ट रूप में नहीं कहा। मैं तो यह दावा नहीं करता और ना ही हज़ूर परमदयाल जी ने यह दावा किया कि जो कुछ मैं कहता हूँ यही अन्तिम या आख़िरी है और सत्य या मालिक का किसी को पता नहीं है। लेकिन जो कुछ उन्होंने कहा, यह सत्य है कि उनसे पहले किसी और ने नहीं कहा।

मैं आपको यह बतान चाहता हूँ कि मैंने जो शब्द ''राधास्वामी'' बोला है, इसका मतलब क्या है? आप राधास्वामी कहो या सीताराम कहो या गौरीशंकर कह लो, मतलब तो एक ही है। कुछ लोगों को यह वहम है कि 'राधास्वामी' किसी फिरके या व्यक्ति का नाम है जिसने कोई मत चला दिया है। यह दोनों ही बातें ग़लत है। यह ठीक है कि स्वामी शिव दयाल जी महाराज ने अनुभव किया और अपना अनुभव कहा दयाज ैसे ि कस बन े अ पनाअ नुभवक हा ाल ेकिनउ न्होंने 'राधास्वामी' नाम को किसी दायरे में महदूद नहीं किया। उन्होंने खुद इसकी व्याख्या की और कहा–

राधा आदि सुरत का नाम,
स्वामी आदि शब्द पहचान।

सुरत है आत्मा और आदि सुरत है विशुद्ध आत्मा। मैं आपको वेदों और वेदान्त के आधार पर बता रहा हूँ, क्योंकि यह कोई नई चीज़ नहीं है। यह भक्ति-मार्ग है। आप ने अभी शब्द सुना– 'जिनको चाह राम की साधो, राम उन्हें मिल जाते हैं।' यह शब्द दाता दयाल जी महाराज ने लिखा है, जिन्होंने कम से कम चार-पाँच हज़ार किताबें लिखीं और हर धर्म पर लिखीं, धर्म के हर पहलू पर लिखीं। उन्होंने वेदों, उपनिषदों, भगवद्गीता और रामायण पर कितनी ही पुस्तकें लिखीं। भगवान् श्रीकृष्ण के चरित्र पर लिखा और उन्हें पुरुषोत्तम पुरुष और परमतत्त्वक ाप ूर्णअ वतारम ानतेह ुएं लखा ाम ैंनेअ भीत ैत्तिरीय उपनिषद् पर उनकी पुस्तक देखी, जिस पर बड़े-बड़े विद्वान् उनकी तरह नहीं लिख सकते, क्योंकि उन्होंने जो कुछ लिखा है, अपने निज अनुभव के आधार पर लिखा है। यह शब्द उनके ''शब्द-सागर'' से है। मैं आपको यह बतला रहा था कि 'राधा ' है हमारी आत्मा। जो खुद अविनाशी होते हुए प्रकाशमय होते हुए, इस जगत् में जन्म लेती है और फिर प्रकाशमय या आनन्दमय कोष तक या कारण शरीर तक पहुँच कर फिर वापिस आती है। मैं आपको एक नई बात बताने जा रहा हूँ कि यह आत्मा, जो कारण शरीर या आनन्दमय कोष तक जा करके फिर जन्म लेती है। जैसे कि आप रोज़ नींद में जाते हैं तो आप आत्मा तक पहुँचते हैं, विशुद्ध आत्मा तक नहीं पहुँचते। हमारे पूज्य भाई साहिब जो यहाँ बैठे हुए हैं– मैं परम्परा की दृष्टि से ऐसा कह रहा हूँ, परमदयाल जी महाराज ने भी यही कहा है कि चाहे कोई सन्त या अवतार ही क्यों न हो, घर के अन्दर उसे परम्परा का पालन करना पड़ता है– वीरेन्द्र नाथ जी शर्मा, जो बड़े भारी चार्टर्ड एकाउँटेंट हैं, विराना रोड पर इनका अपना कार्यालय है, उम्र में मुझसे 10 साल बड़े

हैं, इन्होंने ही मुझे यह बात बताई कि हम रोज़ मरते हैं और रोज़ पैदा होते हैं।

संस्कारों की बात हैं, संस्कारों से ही हम एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं, इनकी प्रवृत्ति भी इस समय सन्त की है। महाराज जी कहा करते थे, "जो सोचोगे वह हो जाएगा, जो चाहोगे वह मिल जाएगा।" वो कहते थे कि मैं कुछ नहीं करता। ऐसी बात नहीं है कि वो कुछ करते नहीं थे; करते थे मगर कहते थे कि मैं कुछ नहीं करता। और ठीक भी कहते थे। अगर कोई कहता है कि मैं करता हूँ, तो कौन-सी मैं? शरीर की मैं, मन की मैं या आत्मा की मैं? आत्मा की मैं तक तो बहुत कम पहुँचते हैं। फिर सुरत की मैं, विशुद्ध आत्मा की मैं! कौन-सी मैं? मैं से ही सारी कठिनाइयाँ पैदा होती हैं और दूर भी हो सकती हैं। मगर इसे समझ लिया जाए कि मैं है क्या? यह मैं ही तो दुनिया को मार डालती है। जब कई बार महाराज जी कहते हैं कि मैं नहीं होता। अब मध्य प्रदेश में एक लड़का है, जिसके पिता परमदयाल जी के परम भक्त हैं, सारे घर वाले उनको परमतत्त्व का रूप मानते हैं। वह लड़का हाई स्कूल की परीक्षा दे रहा था। कैमेस्ट्री का पर्चा था, कुछ पढ़ा-लिखा तो था नहीं। परीक्षा-भवन में जब पर्चा मिला, उसे कुछ नहीं आता था। महाराज जी की फोटो जेब में थी। बड़े दर्दे-दिल से उनको याद किया और कहा, "बाबा मेरी मदद कर। फिर कहता है कि प्रकाश हुआ और प्रकाश में फ़कीर बाबा प्रकट हुये और उसकी डेस्क के नीचे बैठकर सारे सवालों का जवाब लिखा दिया और उसे 100 में 98 नम्बर आये। जब महाराज जी कहते हैं, मैं नहीं गया। भला मैं उससे बेईमानी कराऊँगा? इस तरह की हज़ारों घटनाएँ हैं। लेकिन वो यह नहीं कहते कि जिन्होंने उनका रूप देखा वो ग़लत हैं। वो सही हैं। वो कहते हैं कि इन घटनाओं से मुझे इस सच्चाई का पता लग गया कि कोई गुरु या महात्मा किसी के अन्तर या प्रकट रूप से मदद करने नहीं जाता, ये इन्सान के मन का विश्वास है।"

राधास्वामी किसी की बपौती नहीं है। ऐसे ही वो राम या मालिक, जिसे आप ढूँढते हैं जाग्रत में, स्वप्न में या सुषुप्ति में। सुषुप्ति में तो आपको कोई अनुभव नहीं होता, न सुख का, न दु:ख का दुनिया के रोज़ के झगड़े-झँझट, सास-बहू के ताने वगैरह का कोई दु:ख नहीं होता। शब्द सुषुप्ति नहीं है, मैं आपको नई बात बता रहा हूँ, स्वपिति शब्द है, अर्थात् स्व में पीत हो जाना-अपने आप में लय हो जाना। आप रोज़ अनुभव करते हैं, जब अपने आप में लय हो गये तो उस वक्त न मैं रहती है, न तू रहती है। उस हालत को भी एक प्रकार की राधास्वामी की हालत कह सकते हैं। लेकिन यहाँ पर 'राधास्वामी' का मतलब कुछ और भी है।

वेदों, उपनिषदों, शास्त्रों में या ऋषियों-मुनियों द्वारा लिखे वाक्यों में यह बात कही गई है कि हम सब जो दुनिया में आये हैं-राधा हैं। स्वामी सब का एक है, जो सबके अन्दर भी है और सब से ऊँचा भी है। राधा को स्त्री मानते हैं और स्वामी को पुरुष। मीरा को पुरुष की तलाश थी, हम आप सबको तलाश है। मुझे भी बचपन से कुरेद थी और मेरे बड़े भाई साहिब को भी। पहले तो पढ़ने-लिखने की धुन हुई, फिर कभी इलेक्शन की धुन हुई, फिर यहाँ आकर बड़े भारी आडिटर हुए। लेकिन अब इनकी कुरेद उसी परमतत्त्व को अनुभव करने की है। ये कुरेद सबको होती है और इसीलिए सन्तमत में कहा जाता है कि गुरु ढूँढो, पूरा गुरु ढूँढो– सच्चा गुरु ढूँढो। आपको जिस चीज़ की तलाश होगी, पूरा गुरु आपको वही देगा। असली गुरु तो मालिक है, वह सब के अन्दर है। आप उसके अंश हो। आप राधा हो, स्वामी के। इसीलिये कहा गया है कि आप पूर्ण हो– आप में पूर्णता है। यह अनुभव करके ही ऋषियों ने लिखा–

ओम् पूर्णमदः पूर्णमिदम् पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

जिसे मालिक, परमतत्त्व या परमात्मा कहते हैं वह तो अपने आप में पूर्ण है, वही गुरु है। लोग कहते हैं कि हमारा गुरु पूरा है, दूसरों का अधूरा है। वास्तव में किसी को अधूरा कहना ही यह ज़ाहिर करना है कि आप ने अभी पूर्ण को समझा नहीं है। जगत् का कण-कण उसी पूर्ण का अंश है। उसके बिना कोई नहीं रह सकता। अगर मेरे पास कोई नास्तिक आये, आज तक तो कोई नास्तिक नहीं आया। हाँ! एक नास्तिक मुझे मिला था जब मैं अमेरिका में पढ़ाता था। वहाँ बड़ी उम्र के लोग भी पढ़ते हैं। एक वकील की पत्नी और उसकी एक सहेली पढ़ती थीं। दोनों मेरे पास आए। बोलीं, ''आप कहते हो कि आपको कोई नास्तिक नहीं मिला। चलिये मैं आपको एक नास्तिक से मिलाती हूँ।''

कहने लगी- 'मुझे तो विश्वास है कि ईश्वर है, लेकिन मेरा पति नास्तिक है। अगर आप उसे समझा दो तो मानूँगी कि आप सच्चे अध्यापक है।' वे मुझे अपने घर ले गई। उनका पति जो एक करोड़पति बैंकर था, टेनिस खेल कर आया था बाहर से उसके पुट्ठों में इतना तेज़ दर्द था कि वो कराह रहा था। मुझे महाराज जी ने कहा हुआ था कि कोई दुःखी आवे उसे निराश न लौटाना। मैंने उसके कँधों पर हाथ रख दिये और कोई पाँच मिनट तक ध्यान में रहा। मेरे दोनों हाथ इतने गरम हो गये जैसे कोई गरम पैड हो। मेरे हाथ हटाते ही उसका दर्द गुप्त हो गया। यह ताकत आप सब के अन्दर मौजूद है। फिर वो मुझे अपने कमरे में ले गया। मैंने उससे पूछा- यह बताओ कि दुनिया आई कहाँ से है? कहने लगा-कहीं न कहीं से तो आई है। मैंने उसे पूरी तरह समझाया। फिर वो बोल उठा- मेरी समझ में आ गया कि कोई ताकत है। इस प्रकार वो नास्तिक से आस्तिक हो गया।

मैं आपको अपने अनुभव से बता रहा हूँ कि हर एक व्यक्ति के मन में कुरेद है, पर हर एक को यह ज्ञान नहीं है कि राम क्या है? कहाँ है?

इसी रहस्य को परमदयाल जी महाराज ने खोल कर समझाया। ''मैं नहीं हूँ'' कहने का उनका मतलब यह है कि राम तो आत्मा से भी बड़ा है, वही रचना का स्वामी है, स्वामी एक है बाकी सब राधा है। मीरा ने पत्थर की मूर्ति को पुरुष माना और पत्थर ने परमतत्त्व को प्रकट कर दिया और आप सशरीर उसमें प्रवेश कर गई-

जिन को चाह राम की साधो, राम उन्हें मिल जाते हैं।

चाह अगर सच्ची है तो आप भी उसे प्रकट कर सकते हैं। मीरा घुँघरू बाँध कर कृष्ण के सामने नाचा करती थी।'पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे।' परमदयाल जी महाराज भी पैर में घुँघरू बाँध कर अपने इष्ट को रिझाने के लिए नाचा करते थे। दुनिया ने मीरा को बदनाम किया, लेकिन सच्चे प्रेमी को दुनिया और बदनामी की कोई चिन्ता नहीं होती। उसका प्रेम और भी निखर जाता है। इश्केमज़ाजी में भी तो यही बात है। निन्दा से प्रेम और दृढ़ हो जाता है। कबीर कहते हैं-

कबीर निंदक ना मरे, जोवे आदि जुगादि।
हम तो सतगुरु पाइया, निंदक के परसादि॥

मीरा को इस हद तक दुःखी किया गया कि वो सोचने पर मजबूर हो गई कि घर में रहूँ भी या घर छोड़ दूँ। उसने गोस्वामी तुलसी दास को पद्य लिख कर पूछा तो तुलसी दास ने उसे पद्य में ही उत्तर दिया-

जाके प्रिय न राम वैदेही,
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, यद्यपि परम सनेही।
तज्यो पिता प्रहलाद, विभीषण बन्धु, भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो, कन्त व्रज बनितनि, भे जग मंगलकारी।

मैं सन्तमत वालों को कहता हूँ, राधास्वामी कोई उनका ठेका नहीं है। यह जो अपने-आपको राधास्वामी कहते हैं और किसी नाम से मालिक तक नहीं पहुँचा जा सकता। मीरा ने तो पहुँचकर दिखा दिया। परमतत्व को हर एक इन्सान प्राप्त कर सकता है, किसी नाम से। हाँ

प्रेम और विश्वास होना चाहिए, दिल में कुरेद होनी चाहिये। मथुरा में रूप गोस्वामी बड़े महात्मा थे। लोग उनको गुरु मान कर पूजते थे। लेकिन उनमें एक ज़बरदस्त कमी थी। वो मालिक को पुरुषों में ही मानते थे, इसलिए स्त्रियों से नफ़रत करते थे। मीरा उनसे मिलने गई। उन्होंने अपने आदमी से कहला दिया कि वे स्त्रियों से नहीं मिलते। तो मीरा ने जवाब दिया– 'मैं तो समझती हूँ कि पुरुष एक ही है, और वो है कृष्ण। बाकी तो सब स्त्रियाँ हैं–राधा हैं। ये नया पुरुष कहाँ से पैदा हो गया?' बात रूप गोस्वामी की समझ में आ गई और बाहर आ कर मीरा के पाँव पड़ गया। आप सब राधा हैं, स्वामी तो एक है और यही बात स्वामी जी महाराज ने कही है –

राधा आदि सुरत का नाम, स्वामी आदि शब्द पहचान।

देखो, मैं आपको बड़े सरल तरीके से समझा रहा हूँ। शब्द में ध्यान लगाने से सुरत स्वामी में मिल जाती है। कैसे? शरीर, मन और आत्मा तक, आनन्दमय कोष तक तो राधा है इसके परे शब्द है, स्वामी है, अविनाशी तत्त्व है जिसका कोई नाम नहीं और सारे नाम उसी के हैं। वो तो शब्द है, और शब्द भी ऐसा कि पहले तो सुनाई देता है फिर ऊपर जा कर वो भी गुप्त हो जाता है। पाँच तत्त्वों तक तो हमारा शरीर, मन और आत्मा है। कबीर क्या कहते हैं–

सखिया, वा घर सब से न्यारा, जहाँ पूरण पुरुष हमारा।
वहाँ नहिं सुख-दुख साँच-झूठ नहिं, पाप न पुन्न पसारा॥
नहिं दिन-रैन चन्द्र नहिं सूरज, बिना ज्योति उजियारा।
नहिं वहाँ ज्ञान ध्यान नहिं जप तप, वेद कतेब न बानी॥
पाँच तत्त्व गुन तीन नहीं वहं, साखी-शब्द न ताहीं॥
नहिं निर्गुन नहिं सर्गुन भाई, नहिं सूक्ष्म अस्थूलम्॥
नहिं अक्षर नहिं अविगत भाई, ये सब जग के भूलम्।

जहाँ पुरुष तहवाँ कछु नाहीं, कहें कबीर हम जाना॥
हमरी सैन लखे जो कोई, पावे पद निरवाना॥

वो राम जो परमतत्त्व है, वहाँ ये सब कुछ भी नहीं है, ये सब नीचे के दर्जे हैं। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, इनमें आकाश सब का आधार है। जो आधार है उसको पकड़ोगे तो धार अपने-आप हाथ आ जायेगी। पाँचों तत्त्वों के अलग-अलग लक्षण हैं। आकाश का गुण है शब्द। आकाश शब्द है जो हमेशा मौजूद रहता है। मैं जो बोल रहा हूँ शब्दअ ापस ुनर हेह ो,य ेह मेशार हेगा,इ सलिएश ब्द-योगह ै। अन्तिम अवस्था को शब्द ब्रह्म कहा है– 'राधा आदि सुरत का नाम, स्वामी आदि शब्द पहचान।' मैं इन कट्टरवादियों से पूछता हूँ कि जो कहते हैं कि राधास्वामी अलग एक फिरका है– स्वामी जी ने सार वचन में लिखा है जो किसी की समझ में नहीं आया। उन्होंने लिखा है– 'राधा राधा है, स्वामी कृष्ण कन्हाई है।' परम दयाल जी महाराज कहते हैं– 'मनुष्य बनो' यही वेद-उपनिषद् कह रहे हैं–

ओम् पूर्णमदः पूर्णमिदम् पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

चूँकि मानव पूर्ण से निकला है, इसलिए वह पूर्ण है और पूर्ण ही को पैदा करेगा। आप सब अपने-आप में पूर्ण हो, अमृतस्य पुत्र हो। उस पूर्ण के पुत्र मानव को पूर्ण समझने के बाद ही आप उस पूर्ण पुरुष को पा सकोगे। उसमें सदा के लिए विलीन हो सकोगे, यह वेदों-उपनिषदों का कहना है। यही राधास्वामी का अर्थ है। अब मैं उन कट्टरवादियों से पूछता हूँ– क्या वे सनातनी है? सनातन धर्म भी किसी को बपौती नहीं है। धर्म एक है और वो है सत्यता, वही सनातन है। अगर ईश्वर का कोई रूप है साक्षात्, तो वह मनुष्य है। अगर ईश्वर को प्यार करना चाहते हो तो पहले मनुष्य से प्यार करो। इसलिए इसे हमने 'मानवता' धर्म कहा है।

परम दयाल जी महाराज तो इस अवस्था को पार कर चुके थे। मैं आपको सही कह रहा हूँ, वो परमतत्त्व के साक्षात् अवतार थे। हज़ारों जगह उनका रूप प्रकट होता था, अभी भी होता है और लोगों की मदद करता है। जब हज़ारों लोग उनको कहने लगे तो उन्हें असलियत का पता लग गया कि असलियत क्या है? असलियत यह है कि जिस रूप में कोई उस मालिक को याद करता है, उसी रूप में वो उसे मिलता है। चाह पैदा करती है, वो नहीं पैदा होता यह मालिक की देन है। मैं तो होता नहीं, अगर मैं कहूँ कि मैं हूँ तो मैंने मालिक को समझा नहीं। यह सच्चाई का भेद उन्होंने समझाया। मैंने सुना, समझा, देखा और फिर तो मेरे साथ भी बीतने लगी। दो साल से मैं मालिक की आाज्ञ का पालन कर रहा हूँ। जिसको राम की चाह है और जिसने राम दिखाया है, उसकी आज्ञा का पालन करने से ही उसे पूर्णता प्राप्त होगी।

मैंने पहले मंगलाचरण किया– **'अखंड मंडलकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।'** मालिक और गुरु एक ही है, अखंड है उसके टुकड़े नहीं होते, टुकड़े उसके होते हैं जिसे हम राधा कहते हैं। जो इस तरह आचरण करने वाला है, सब को मिला कर एक करने वाला है वो राम है और जो अलग करने वाला है, टुकड़े करने वाला है, वो राम से दूर जा रहा है। राम का मार्ग भक्ति और प्रेम का एकता का मार्ग है। अगर आप अपने घर में माता-पिता और भाई-बहन से प्रेम करते हो तो आप राम को पा जाओगे। इस रास्ते में अगर आपको थप्पड़ लगे, नफ़रत मिले तब भी प्रेम ही करते जाओ। यह नहीं कि जब आपको प्रेम मिले तो प्रेम करो और नफ़रत मिले तो नफ़रत करने लगो। सच्चाई यह है कि जो चीज़ मिलाने वाली है वो राम के पास ले जाने वाली है और जो भेद पैदा करने वाली है वो राम से दूर ले जाने वाली है। मेरे आपके बीच कोई चीज़ है जो मिलाने वाली है। वो है शब्द, मैं शब्द बोल रहा हूँ और आप ध्यान से सुन रहे हो– समझ रहे हो। शब्द ही

अखंड है, मिलाने वाला है– ब्रह्म है। 'अखंड मंडलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्'– शरीर, मन और आत्मा के मंडलों के परे वो अखंड तत्त्व है जो सब में व्याप्त हैं। मुझे एक भी ऐसा दिखाओ, जिसमें वो व्याप्त न हो, तब तो मैं उससे नफ़रत करूँ। नफ़रत करूँ किससे? राम से? परमतत्त्व से? जिसने मुझे इस सच्चाई को बताया, जिसने मुझे एक झटके के साथ उस अखंड तत्त्व को लखा दिया? ऐसे परम गुरु को कोटि-कोटि नमस्कार है।

अब मैं राम की व्याख्या करूँगा–

जिनको चाह राम की साधो, राम उन्हें मिल जाते हैं।

मैंने चाह की बात आपको समझा दी। जो चाह लेकर सत्तगुरू के रूप में खुश रहते हैं, वो वापिस लौटते हैं। कबीर साहिब ने कहा है–

उतते कोई न आवई, जासों, पूछूँ धाय।
इतते सब ही जात हैं, भार लदाय लदाय॥

जो मन में चाह लेकर जाते हैं, उनको फिर वापिस लौटना पड़ता है। यह वैज्ञानिक बात है। यह पृथ्वी जो है, भारी वस्तु को खींचती है अपनी ओर। जिसके मन में किसी किस्म की चाह या मोह है, मकान, ज़मीन, धन, मान, मर्यादा या कोई वस्तु की, उनकी आत्मा पर वज़न पड़ता है। जब वो शरीर छोड़ता है तो पृथ्वी उसकी आत्मा को खींचती है अपनी ओर। वो फिर वापिस आता है। वैसे आत्मा का तो कोई वज़न नहीं होता। कबीर साहिब आगे कहते हैं–

उतते सतगुरु आइया, जाकी मति बुधि धीर।
भव सागर से जीव को, खेय लगावें तीर॥

जो भेद को जान लेता है वो सत्तगुरु होता है, सत्तगुरु के कोई सुर्ख़ाब के पर नहीं लगे होते। जीवों को दुःखी देख कर उसे दया आती है क्योंकि अंश तो सब उसी के हैं। जब उसे दया आती है तो वो भेद को सबको बाँटता है। रामदास का मतलब क्या? मैंने आपको बताया

कि आपकी साँस एक मिनट में अठारह बार सोहं-सोहं-सोहं करती है। जब आप इस आवाज़ को पकड़ोगे तो आपका सम्बन्ध इससे जुड़ जायेगा, आपकी समाधि लग जायेगी। यह ध्रुव सत्य है। इसको न सुनने से ही मनुष्य की तकलीफें होती हैं। भारत में अधिकतर लोग दु:खी हैं, ग़रीब हैं। जो धनी हैं, जिम्मेदार हैं वो ग़लत तरीके से धन कमाते हैं। सुखी वो भी नहीं रहते।

अमेरिकाम ेंअ धिकाँशध ानीह ैंइ सलिएउ नकोकु छह दत क आराम है, लेकिन जिनके पास पैसा अधिक है वो मालिक से दूर जा रहे हैं। मनुष्य कितना भी भौतिक सम्पन्नता इकट्ठा कर ले लेकिन कोई कमी महसूस करता है। अमेरिका की एक ऐक्ट्रेस थी 'मैकिन मनरो' जो अरबपति थी, बहुत सुन्दर थी, विख्यात थी सब कुछ था, लेकिन वो ज़हर खा कर आत्महत्या कर गई। इसके माने यह नहीं कि बुरी थी। दाता दयाल के पास एक सेठ आता था जिसकी एक रखैल थी, वेश्या थी। महाराज जी जब उस सेठ के घर से चलने लगे तो उस वेश्या ने हाथ बाँध कर कहा– महाराज! मेरा घर भी पवित्र करो। दाता दयाल ने कहा– 'अच्छा, अगली बार आऊँगा तो तुम्हारे यहाँ ठहरूँगा।' लोग कहने लगे महाराज यह आपने क्या कह दिया? ये तो वेश्या है। महाराज जी बोले– तुम इसे बुरा समझते हो। मैं इसके पिछले जन्म समझता हूँ, पिछले जन्मों के पाप के कारण इसे शाप था कि एक हज़ार जन्म लेकर हज़ार पतियों से विवाह हो तो तब तेरे पाप कटेंगे। इसने इस जन्म में वेश्या होकर एक हज़ार पति करके भुगता दिये। अब इसके पाप कट चुके हैं। अब यह मालिक के पास जा रही है।'' यह समझने की बात है। लोग 'राम-राम' जपते हैं लेकिन उन्हें पता नहीं कि 'राम' का क्या मतलब है?

राम-राम रम रहा जगत् में, रोम-रोम अनुभव करता है।
राम बिसारे और चाहे सुख, कैसे संभव हो सकता है॥

तुलसी दास जी कहते हैं–

सिया-राममय सब जग जानी, करौ प्रणाम जोरि जुग पानी।

राम को समझने के लिए और कुछ मत करो, केवल अपने भीतर बैठकर अपनी साँस को देखो-सुनो। 15-20 मिनट ऐसा करने से आपकी ज़िन्दगी बदल जायेगी और आपको पता चल जायेगा कि राम क्या चीज़ है? राम-दास वो होता है जो सब कुछ अपने मालिक के लिए ही करता है। जो सेवा करता है, वो ना नहीं करता, तब तरक्की होती है।सब कुछ मालिक को सौंप दो, उसी पर सब छोड़ दो, तब आपको राम मिलेगा। पूर्णतया शरणागत होने को रामदास कहते हैं। क्योंकि मालिक में और मनुष्य में जरा-सा पर्दा है, झीना-सा 'मैं' का। जब 'मैं' हट जाती है, तब मालिक स्वयं आपकी 'मैं' बन जाता है। मनुष्य को झुक जाना चाहिए। इस झुकने का मतलब है कि आप जरा झुके नहीं कि आपका अहंकार गया और मालिक आप के पास आ जाता है। दास जब अपना सर्वस्व मालिक को सौंप देता है तब मालिक सोचता है कि इसने तो अपना सर्वस्व मुझे दे दिया–

शिष्य को ऐसा चाहिए, गुरु को सरबस दे।
गुरु को ऐसा चाहिए, शिष्य का कछु न ले॥

सत्तगुरू को तो कुछ चाहिए नहीं। वो तो दाता है, देने वाला है। उसके पास सब कुछ है–

मालिक के दरबार में, कमी कछू की नाहिं।
बंदा मौज न पावई, चूक चाकरी माहिं॥

मालिक के दरबार में कभी खाली हाथ न जाओ, जो खाली हाथ जाता है वो खाली हाथ आता है। मालिक तो देने वाला है। उसके पास सब कुछ है। परमदयाल जी के पास लाखों रुपया आता था, उन्होंने ट्रस्ट बना दी। दु:खियों और सत्संगियों की सेवा में सब लगा दिया। उनका काम सच्चाई से चलता है। पर कोई य न समझे कि रुपया-पैसा

देने से ही मुक्ति मिल जाती है। ऐसा सोचना ग़लत है। देनी वो वस्तु है जो आपकी अपनी है। क्या चीज़ आपकी अपनी है? सारे संसार का धन और संसार तो मालिक का है। आपका तो एक ज़र्रा भी नहीं। हाँ एक चीज़ आपकी अपनी है, यह 'मैं'। जब आप अपनी 'मैं' दे देते हो, तो वो देखता है कि इसने तो अपना सर्वस्व दे दिया। दुनिया की ज़बरदस्त 'मैं' इसे कुचल डालेगी। वह स्वयं आपकी 'मैं' बन जाता है और आपका रक्षक हो जाता है। दिल से 'मैं' गई नहीं कि मालिक दिल में आ गया–

दिल के आईने में है तसवीरे-यार
जब ज़रा गर्दन झुकाई देख ली।

गर्दन झुकाने का मतलब लोग ग़लत समझते हैं। गर्दन झुकाने का मतलब 'मैं' का अर्पण करना, अहंकार का तजना है–

राम दास के पास राम है, और नहीं कोई पाते हैं।
वाद-विवाद में राम नहीं है, राम न पूछा-पेखी में॥

जगत् में तो वाद–विवाद चलता है, लेकिन मालिक को पाना हो तो वाद–विवाद, निंदा–स्तुति– ये सब झगड़े हैं मन के और बुद्धि के। जो यह सब छोड़कर मालिक को समर्पित हो जाता है उसे मालिक मिल जाता है और फिर सहज समाधि लग जाती है–

राम नहीं तीरथ में रहते, राम बरत के साथ नहीं।

यहाँ तीर्थ की निंदा नहीं है। तीर्थ का मतलब है जहाँ पवित्र आत्माएँ बैठ कर मालिक का ध्यान करती हैं, मालिक से अपना सम्बन्ध जोड़ती हैं, वहाँ बैठने से मन विशुद्ध हो जाता है, आत्मा को शान्ति मिलती है। होशियारपुर तीर्थ है। जब मैं महाराज जी के आसन पर बैठता हूँ तो एक मिनट में मेरी समाधि लग जाती है। तीर्थ की निंदा नहीं है लेकिन कोई ये समझ ले कि तीर्थ में जा कर डुबकी लगा लेने से तर जाता है, यह ग़लत है। ऐसे ही व्रत सेहत के लिए ठीक है

लकिन इससे मालिक नहीं मिलेगा। जो राम से रिश्ता जोड़ लेते हैं उन्हें राम मिल जाता है। 'हाथ कार वल दिल यार वल'। बुल्ले शाह ने कहा था–

रब दा की पावणा, एत्थों पुट्टणा उत्थों लावणा।

मैं कहता हूँ 'उत्थों लावणा एत्थों पुट्टणा' सहज समाधि का यह मतलब है।

बुन्द में सिंधु सिंधु में बुन्दें, बुन्द-सिंधु दोउ एक हुए।
बुन्द सिंधु का झगड़ा मन में, उनके लिये अनेक हुए॥

हम सब बूँदें हैं और हमारे अन्तर ही मालिक मौजूद है–

जिधर देखता हूँ, उधर तू ही तू है,
कि हर शै में जलवा तेरा हू-ब-हू है।

इसके अन्दर उसका जलवा दिखाई देता है–

पहचान ले अपने को तो इन्सान ख़ुदा है,
ज़ाहिर में गको है ख़ाक, मगर ख़ाक नहीं है।
जलवों की ख़ता क्या जो दिखाई नहीं देते,
खुद देखने वालों की नज़र पाक नहीं है।

अगर मनुष्य अपने को पहचान ले तो उसके पीछे समुद्र हिलोरें मार रहा है, प्रेम का सागर लहरा रहा है। मगर मनुष्य है कि उसकी दृष्टि किसी को मित्र, किसी को शत्रु समझती है। लेकिन सब के अन्दर एक ही परमतत्त्व है। जिसने इसको पहचान लिया उसका पर्दा हट गया। जब नज़र साफ हो गई तो मालिक का जलवा नज़र आने लगा। बुन्द में सिंधु तब दिखाई देता है जब मन साफ है। लोग प्रेम का व्यवहार तो करते नहीं। आपस में द्वेष–ईर्ष्या करते हैं, ऊँच–नीच, छोटा–बड़ा समझते हैं, एक–दूसरे के ऐब देखते हैं। हम आप ही ग़लत कर्म करके दुःख विपत्ति भोगते हैं। हम बुद्धि से काम निकालना चाहते हैं, लेकिन बड़े से बड़ा बुद्धि वाला भी अटक जाता है। बुद्धि से काम नहीं बन

सकता। हाँ प्रेम के द्वारा बन सकता है। प्रेम के रास्ते पर चलते जाइये। प्रेम का सागर लहरा रहा है। हम आप निकले हैं प्रेम के समुद्र से। अगर समुद्र से मिलना है तो प्रेम करना सीखो। भेद-भाव छोड़ो, सब से प्रेम करो, किसी से ईर्ष्या मत करो। किसी की राह में रोड़ा मत बनो। सब कुछ मालिक पर छोड़ दो।

सहज-सी बात है। 'बुंद-सिंधु दोउ एक हुए' का यही मतलब है-

राधास्वामी सत्तगुरु आये, भेद दिया पूरा-पूरा।
जो कोई भेद-भाव को मेटे, सत्तगुरु का सेवक सूरा॥

अब तो कोई न समझे कि राधास्वामी आगरे के पन्नी गली में रहने वाले किसी व्यक्ति का नाम है। उनका नाम तो शिव दयाल जी था। हाँ, राधास्वामी तत्त्व को उन्होंने पाया और उसी तत्त्व को उन्होंने सब केअ न्दरद रशा ि दया ाउ नकीस ु रतर ाधास्वामीम ें ि मलग ईत ब उन्होंने राधास्वामी नाम कहा। राधास्वामी नाम हर युग में था -

नाना भांति राम अवतारा, रामायण शत कोटि अपारा।
राधास्वामी सत्तगुरु आये, भेद दिया पूरा-पूरा॥

राधास्वामी हर युग में आये, आते रहेंगे। उनको पहचानने वाली आँखें चाहिए। तिनके के पीछे पहाड़ है। भेद-भाव को हटा दो चाहे जैसा भी भेद-भाव हो। जो इस भेद-भाव को मिटाता है, वही मालिक का सच्चा सेवक है। इस शब्द के आधार पर मैंने आप सब को अपना अनुभव बाँट दिया। अब आप समझ गये राधास्वामी का मतलब। राधास्वामी हालत का नाम है। उस हालत पर पहुँचने के बाद आप उसे जीवन मुक्ति की हालत कह दें, निर्वाण पद कह दें, राधास्वामी कह दें, उसमें कोई फर्क नहीं।

- सबको राधास्वामी।

सत्संग

(M : 0 94183-70397)

दयाल कमल जी महाराज

दिनाँक 13-04-15

(वैसाखी सुबह का सत्संग)

आप सबको वैसाखी की मुबारक हो। कहते हैं कि **जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है।** परमदयाल जी महाराज फरमाया करते थे- **'जब तक न देखो अपने नैना तब तक न मानो गुरु का बैना।'** जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है, किसी में कोई फर्क नहीं है। साईंस का युग है, अब पूछा जाता है बताओ कैसे? साबित करो। यह जो ब्रह्मॉंड है जिसके बीच में हम बैठे हैं, इसमें पाँच चीजें हैं। यह ब्रह्माण्ड पाँच चीज़ों से बना है- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। तुम अपनी ओर देखो तुम्हारा जो चोला बना है उसमें भी यही पाँच तत्त्व हैं। लेकिन तुमने कभी खोज ही नहीं की। पृथ्वी तत्त्व आप में है, जल तत्व आप में है, अग्नि तत्त्व आप में है, वायु तत्त्व आप में है और आकाश तत्त्व भी आप में है।

परमदयाल जी महाराज कहा करते थे कि इस ब्रह्माण्ड में जितनी बड़ी ज़मीन है, उससे तीन गुणा पानी है। जितना पानी है, उससे तीन

गुनी अग्नि है। जितनी अग्नि है, उससे तीन गुनी वायु है। जितनी वायु है, उससे तीन गुना आकाश है जिसने यह सारी रचना की है वह कितना बड़ा होगा? उसको तो हिसाब ही नहीं लगाया जा सकता। कोई अमीर है या गरीब है। छोटा है या बड़ा है, देश में रहने वाला है या विदेश में रहने वाला, सबको एक जैसी भूख लगती है। यह नहीं कि अंग्रेज की भूख और तरह की है और पंजाबी की भूख और तरह की है सबकी भूख एक जैसी है, सब की प्यास एक जैसी है, सबकी नींद एक जैसी है। सबको पाखाना आता है, सबको Urine भी आता है। आप सब सामने बैठे हुए हैं। मैं आप सब को एक जैसा ही नज़र आ रहा हूँ कि नहीं? सबको मेरी वाणी भी एक जैसी सुनाई दे रही है। सबको मिर्च कड़वी लगती है। सबको नमक, नमकीन ही लगता है। अब जब हमारे शरीर में एक जैसे ही गुण है तो जो इस शरीर में रहने वाला है, वह अलग कैसे हो सकता है?

जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है। वह सब में है। वह यहाँ आकर कैसे फँस गया? उसको मन ने दास बना लिया और उसका अपना रूप मन ने ले लिया और उसको पीछे भेज दिया। तुम खुद ही सोचो तुमसे कभी कोई गलत काम हो गया क्या तुम्हें पछतावा नहीं आता? वह पछतावा करने वाला कौन है? वह मन नहीं तुम हो। तुम उसको पहचानो। जब तक तुम उसको नहीं पहचानोगे तुम सुख-दुख से आगे नहीं जा सकते। वह वास्तव में हमारी सुरत है जो अपने घर से जुदा हो गई, मन के आधीन हो गई। स्वामी जी महाराज बताते हैं कि हमारी हालत क्या हो गई? परमदयाल जी महाराज भी कहा करते थे- 'मैं अनामी धाम से आया हूँ, फिर साथ ही कह देते थे कि अरे दीवानो! मैं ही नहीं आया अनामी धाम से तुम भी वहीं से आए हो। हम सब वहीं से आए हैं। यह और बात है माता-पिता की खुराक ने, वातावरण ने, हालात ने हमारा जो भी रंग-रूप बना वह इन परिस्थितियों से बना। इसलिए कुछ ले जाओ। उसको हर रोज़ देखो, टी. वी. भी देखते हो।

अगर तुम हर रोज़, गाय के सींग के ऊपर सरसों के दाने जितना टिक जाये अगर उतना भी ध्यान लगा लो तो तुम्हारा जीवन बदल जायेगा। मगर हमारे पास समय ही नहीं।'

रोटी खाने के लिए भी समय नहीं, बच्चों के साथ बात करने के लिए समय नहीं, दौड़ लगी है। थोड़ी सी दौड़ अपने लिए भी लगा लो। तुम देखो तो सही कि मैं कौन हूँ? मेरी ज़िन्दगी का एक ही सवाल था। मैंने उस मालिक से न धन माँगा, कुछ नहीं माँगा। जब लोगों को मरते देखा था तो एक ही सवाल करता था हाय मैं भी मर जाऊँगा, तब मेरी उम्र छः साल की थी। मर कर कहाँ जाऊँगा? मैं कौन हूँ? यह खोज मुझे मेरे सत्‌गुरु परमदयाल जी महाराज के चरणों में ले आई। किसी ने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। यहाँ आकर मेरी ज़िन्दगी के सारे सवाल हल हो गये। तुम भी पूछो तुम कौन हो? कहाँ से आए हो? कहाँ जाना है? जो तुमने कर्म किए हैं वह तो भोगने पड़ेंगे लेकिन उनमें Addition मत करो, और बोझ मत डालो। दाता दयाल जी ने लगभग 3500 किताबें लिखीं, किस लिए? हमारे लिए।

वैसाख महीना सिर पर आया।
साख गई जीव हुआ पराया॥

सभी महापुरुषों ने जो कुछ भी लिखा शास्त्र लिखे, वेद लिखे, वाणियाँ लिखीं। किसके लिए लिखा? हम लोगों के लिए कलयुगी जीव, अगर गुरु नहीं मिला तो यह पढ़कर ही कुछ अक्ल ले लेंगे। लेकिन कलयुग में काल बहुत प्रधान है। काल क्या है? मन है, मन ही तुम्हारा कलयुगी काल है और मन ही तुम्हारा कलयुगी दयाल है। जब तुम नीचे उतर आते हो तो तुम काल के आधीन हो, जब तुम ऊपर चले जाते हो तो दयाल के आधीन हो जाते हो।

स्वामी जी कहते हैं– वैसाख का महीना आया, जीव अपनी साख से अलग हो गया। साख सहारे को कहते हैं। वैसाख का महीना आया जीव रूपी आत्मा अपने मालिक से अलग हो गई। उसका सम्बन्ध टूट गया। बच्चा बड़ा काबिल है, माँ–बाप का आज्ञाकारी है, उनका हुक्म मानता है, सेवा करता है, तो माँ–बाप जाते वक्त अपनी जायदाद उसके नाम कर जाते हैं। जो बच्चा आज्ञाकारी नहीं है। माँ–बाप की सेवा नहीं करता और अपना हिस्सा माँगता है कि यह ज़मीन मेरे नाम है। माँ–बाप उसको कुछ नहीं देंगे। ऐसे ही हम उस परमतत्त्व के अंश है, उसका हमारे ऊपर हक है। उसकी सेवा कैसे हो सकती है? तुम उस मालिक की पूजा नहीं कर सकते, उस मालिक का ध्यान नहीं कर सकते क्योंकि वह तो नज़र नहीं आता। इसलिए कहा– गुरू ब्रह्मा, गुरु विर्ष्णु, गुरू देर्व महेश्वरः गुरू साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरू देवम नमः।

हमारा जीवन चार शक्तियों के आधीन है। सबलब्रह्म जो हमारे शरीर को चलाता है, शुद्ध ब्रह्म। परमदयाल जी की खोज की बात कर रहा हूँ जिसको मैंने अपने जीवन में उतारा। सबल ब्रह्म तुम्हारे शरीर का मालिक है। शुद्ध ब्रह्म तुम्हारे मन का मालिक है। पार ब्रह्म तुम्हारी आत्मा का मालिक है और शब्द ब्रह्म तुम्हारी सुरत का मालिक है। इसलिए पारब्रह्म में नहीं रुकना। हो सकता है मैं गलत हूँ लेकिन मेरा अन्तःकरण इस बात को मानता है क्योंकि मेरे दाता परमदयाल जी महाराज ने मुझे लिखा। मेरा उनके साथ पत्र–व्यवहार होता रहता था। उन्होंने लिखा–

गुरू शब्द को कीजिए, बहुते गुरु लाभार।
अपने–अपने स्वाद को, ठौर–ठौर बट मार॥

जब तुम अभ्यास करने बैठते हो। यहाँ पर एक सज्जन बैठे हैं कहते हैं वे प्रकाश में रहते हैं। मैंने कहा तुम प्रकाश में नहीं रहते। जब प्रकाश में रहते हैं तो तुम्हारी बोली बदल जायेगी। जो हमारे अन्तर में दृश्य पैदा होते हैं, अभ्यास के समय तुम्हारी दुनिया अन्तर बनती है। अभ्यास के समय तुम्हारा आफिस सामने आ जाता है, घर सामने आ जाता है और अपने मन के पीछे लगकर जो मूर्ति अन्दर प्रकट हुई उसका कहना मानकर कई गलत काम कर देते हो। मैं अक्सर अखबार में पढ़ता हूँ कि कोई देवी प्रकट हुई और बोली अपने बेटे की बलि दे दे। मैंने अपने बेटे की बलि दे दी। कितना बड़ा अन्धकार है, कितनी बड़ी मूर्खता है। ऐ दीवानों! मानवता मन्दिर में आने वालों परमदयाल जी महाराज ने डंके की चोट पर कहा है– कोई देवी, कोई देवता, कोई गुरू, कोई महापुरुष तुम्हारे अन्दर प्रकट नहीं होता, केवल तुम्हारा मन है। वह काल है, उसको छोड़ो। जो भी तुम्हें अन्दर नज़र आता है उसे छोड़ता जा। फिर कहाँ जा? उसमें जा जहाँ से आवाज़ आ रही है। वह तुम सबके अन्दर है, सब में प्रकाश है, सब में शब्द है, सबकी आँखें एक जैसा देखती हैं, तो हमारे में भिन्नता कैसे हुई? तब कहा जिधर देखता हूँ, उधर तू ही तू है। फिर हमारे में नफरत क्यों आई? झगड़े क्यों आए? हमारा एक–दूसरे के साथ विरोध क्यों है? हम एक–दूसरे को बुरी नज़र से क्यों देखते हैं?

यह जीवन उस मालिक का तुम्हें एक बहुत ही अमूल्य तोहफा है। वह जो चीज़ वहाँ से इस चोले में आई, उसको वापिस अपने घर जाना है। उसके लिए तुमको न जाने कितने जन्म लेने पड़े, अरे! इसी जन्म में पहुँच जाओ क्या हर्ज़ है? जब सतगुरू मिल गया, फिर अगले जन्म की आस क्यों रखनी? जब सत्संग मिल गया फिर चिन्ता किस बात की? तुम्हें चिन्ता इस बात की है कि जो हमारे पास है वो हमारे से

अलग न हो जाये और जो हम और चाहते हैं वह हमें मिल जाये। जो मिला हुआ है हम उसके लिए शुक्रगुज़ार नहीं है। जो नहीं मिला उसके लिए हम चिन्ता में है। फिर हम सुखी कैसे रह सकते हैं? जो मिला है, उसमें संतोष करके देखो। जो मिला है, उसी में आनन्द ले लो।

पदार्थ क्या है? सर्व रोग का औषध नाम, ऐ इन्सान तेरे हर रोग का एक ही इलाज है–नाम। वह नाम क्या है? कोई उसको किसी नाम से याद करता है, कोई किसी नाम से याद करता है। मैं पूछता हूँ जब मैं पैदा नहीं हुआ था तब क्या मेरा नाम था? नहीं था। पैदा हुआ नाम रख दिया गया– शब्द प्रकट तब धरया नाम शब्द गुप्त तब रहा अनाम। शब्द गुप्त होगा, जब साँस चलना बंद हो जायेगा। इसीलिए स्वामी जी महाराज ने कहा– तुम किस नाम के पीछे भागे हुए हो? राधास्वामी गाए कर सन्तों ने अन्दर की साईंस देखी, अन्दर की खोज की, मैं कौन हूँ? फिर कहा राधास्वामी गाए कर, जन्म सफल कर ले यही नाम निज नाम है, मन अपने धर ले। तुम इस गलती में हो कि वह तुमसे अलग है। जो उस मालिक को अपने से अलग करके पूजता है, उसको कुछ नहीं मिलेगा। जो शुरू को अपने से अलग समझता है उसको भी कुछ नहीं मिलेगा।

परमदयाल जी महाराज सुनाया करते थे– गुरु तो तेरे पास फकीरवा–गुरु तो तेरे पास फकीरवा। 1972 तक मैं भी यही समझता था कि मेरे गुरु होशियारपुर में रहते हैं। उनको देखकर मन को शान्ति मिलती थी। उन्होंने समझाया बच्चा, मेरे शरीर के साथ कब तक जुड़ा रहेगा। शरीर गुरु नहीं है।

दाता दयाल जी महाराज ने लिखा – **तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेषा, दुखी जीव को अंग लगाकर ले जा गुरु के**

देशा। गुरु महाराज कहते थे– मेरा अंग मेरी वाणी है, **वाणी गुरु, गुरु है वाणी विच वाणी अमृत सारे।** गुरु जो कहता है, उसे ध्यान से सुनो, उसे मान लो कल्याण हो जायेगा। तुम नहीं मानोगे तो कुछ नहीं बनेगा। इसलिए बाहर कुछ भी नहीं है। जो उसको बाहर में पूजते हैं, वह अपने मन की पूजा करते हैं।

एक बार राम और हनुमान में चर्चा हो रही थी। राम कहते हैं हनुमान तेरा-मेरा क्या सम्बन्ध हैं? हनुमान जी ने कहा– 'शरीर के रूप में मैं आपका सेवक हूँ, मन के रूप में मैं आपका भक्त, आत्मा के रूप में मैं आपका अंश और अपने-आप के रूप में मैं कुछ भी नहीं। तू ही तू है।'

तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा, सतनाम सतगुरु गति चीन्हा।

वह चौथा पद शरीर, मन और आत्मा से आगे है। वह तुम हो, जीव है। लेकिन जीव वहाँ से बिछड़ा हुआ है और बिछड़ कर मन के आधीन हो गया। परमदयाल जी महाराज कहा करते थे मैं फूँक नहीं मार सकता, मैं डंडे मार सकता हूँ।

काल पक्ष सब जीवन धारी।
पुरुष दयाल की सुद्धि बिसारी॥

अब दयाल को तुम भूल गए। ये काल देश है इसमें हर समय परिवर्तन हो रहा है। इसको नश्वर देश कहते हैं जो नष्ट होने वाला है। एक अक्षर है जो बदलता है, वह हमारा मन है। तुम बताओ तुम्हारा मन कभी एक जैसा रहा। जब तुम सुबह जागते हो, तुम्हारी सुरत उस समय आती है दो मिनट बैठकर देखा करो कि तुम कहाँ थे? तुम कौन हो? अपने-आपको पूछो। तुम रोज़ यह सवाल करोगे, तो तुम्हें एक न एक दिन जवाब मिल जायेगा क्योंकि जवाब देने वाला भी अन्दर है और सवाल करने वाला भी अन्दर है। सवाल करने वाला तुम्हारा मन

अर्जुन है और जवाब देने वाली सुरत कृष्ण तुम्हारे अन्दर है। मगर क्या करें हमने घुँघट ही मेरे-तेरे का इतना बड़ा पहन लिया कि अपनों के अलावा कोई और नज़र नहीं आता। अपने जितने, अपने बनाओगे उतने ही खतरनाक साबित होंगे, पराए इतने खतरनाक साबित नहीं होते अपने ही खतरनाक साबित होते हैं। वो ही यम बनकर सामने आएँगे। ऐसे रहो कि सारा संसार तुम्हारा है मगर तुम किसी के भी नहीं हो। तुम केवल उसके हो।

मैं कौन हूँ और क्या हूँ, इतना मुझे बता दो।
भटका हूँ मैं जिस राह से, वह रास्ता बता दो॥

मुझे मेरे इस सवाल का जवाब किसी ने नहीं दिया। मैं परमदयाल जी महाराज के दरबार में सन् 1956 में आया। तब मैं 18 साल का था। उन्होंने मेरे ऊपर नज़र डाली और नज़र डालते ही मेरा जीवन बदल दिया। मैंने जब उनके श्री चरणों में सिर झुकाया तो उन्होंने मेरे सिर के ऊपर हाथ रखा और यही 'सारवचन' पुस्तक मेरे हाथ में दे दी। ले बच्चा, ये वचन पढ़। जैसे वे मेरे सवाल को पहले ही जानते थे।

गुरु मोहे अपना रूप लखाओ

यह मेरे दाता ने मुझको पढ़ने को कहा और मैंने मस्ती में आकर वही शब्द गाया और दाता ने उसी पर मुझे सत्संग दिया और मुझको मेरा रूप दिखा दिया कि मैं कौन हूँ? मेरा संशय दूर हो गया और मैं उनका होकर रह गया हूँ। 1981 में जब मेरे दाता ने चोला बदला। मैं शिमला में था। मुझे यहाँ के सैक्रेटरी साहिब ने टैलीग्राम भेजा। मुझे पता तो उसी वक्त लग गया कि मेरे हजूर परमधाम पहुँच गए हैं। मैं वहाँ के पोस्ट-आफिस गया और होशियारपुर की तरफ मुँह करके और एक प्रण किया- मेरे सद्गुरु परमदयाल जी महाराज, मेरे दाता, मेरे जीवन के मालिक आज मैं शपथ लेता हूँ कि मैं सारा जीवन निस्वार्थ आपकी शिक्षा को दुनिया में फैलाऊँगा।

उस वक्त मुझे तो यह भी पता नहीं था कि मुझे यह ड्यूटी देनी पड़ेगी। हालात ही ऐसे बने कि मेरी वह आवाज़ सुन ली गई और मैं आपकी सेवा में आ गया। मैं न गुरू हूँ, न संत हूँ। मैंने माँगा कि मुझे इतनी ताकत दो कि मैं आपकी शिक्षा को दुनिया में फैला सकूँ। यह अन्धकार व अज्ञान फैला हुआ है, धर्मों के जो झगड़े हैं वे खत्म हो जायें और हम एक ही इन्सानियत के झंडे के नीचे आ जाएँ। मैंने आपको यह बता दिया कि हम सब में वही है। न वह हिन्दू है, न मुस्लमान है, न सिख है, न यहूदी है, न ईसाई है, वह एक ही है। हम सब एक ही माटी के बर्तन है। बर्तन तो बहुत सुन्दर था पर हमने उस पर कालिख पोत दी। कबीर साहिब कहते हैं-

घूँघट का पट खोल रे, तो को पीव मिलेंगे।
घट-घट में वहि साईं रमता,
कटुक वचन मत बोल रे, तो को पीव मिलेंगे॥
घुँघट का पट खोल रे, तो को पीव मिलेंगे।

सब में वही मालिक है पर हम एक-दूसरे के साथ कड़वा वचन बोलते हैं।

मीठी वाणी बोलो मुख से, मन रहे निर्मल शुद्ध शरीर।

जब तुम कड़वा वचन बोलते हो तो तुम्हें पता है, तुम्हारे शरीर की क्या हालत होती है? तुम्हारे शरीर का तापमान कितना बढ़ता है जब तुम्हें क्रोध आता है। तुम अपने ही शरीर का नुकसान करते हो जब तुम्हें क्रोध आता है नब्ज System एक दम गरम हो जाता है। खून का दौरा बढ़ जाता है, इसीलिए कटुक वचन मत बोल। किसको बोलता है? वह भी तो तेरा ही है, उसको थोड़ा प्यार से समझा ले। जितनी शक्ति प्यार में है वह नफरत में नहीं है, क्रोध में नहीं है।

अगर किसी बच्चे को क्रोध से देखोगे तो वह तुमसे दूर भागेगा। अगर बच्चे को प्यार से बोलोगे तो वह तुम्हारी गोद में आयेगा। उसके गोद में आने से तुम्हारे शरीर के रोंगटें खड़े हो जाएँगे और तुम्हारे शरीर को एक राहत मिलेगी, आनन्द मिलेगा। अगर बच्चे को थप्पड़ मारोगे तो तुम्हारा शरीर गरम हो जायेगा और बच्चे के मन पर भी बुरा असर होता है। इसलिए मेरे दाता यह कहा करते थे कि बच्चों को कभी मत मारना। बच्चों को कभी बुरा मत कहो। उनको हमेशा अच्छा ख्याल दिया करो। तू गधा है, तू निकम्मा है, तुझे कुछ नहीं आता।

अरे! यह बातें भी कोई कहने वाली हैं। उसको अच्छा कहो कि बेटा तू बड़ा शेर है, भारत का वासी है। इस धरती पर राम ने जन्म लिया, श्रीकृष्ण जी आए, यहाँ श्री गोबिन्द जी महाराज आए, तुम बच्चों को ये ख्याल क्यों नहीं देते। तुम उसको निकम्मा-निकम्मा कहते हो, तो वह निकम्मा हो ही जायेगा। **कटुक वचन मत बोल रे।** मैं तो यह कहता हूँ आपस में क्या तुम तो पशु-पक्षी को भी कड़वा वचन मत बोलो उनमें भी वही सुरत काम करती है। उनमें पाँच तत्व नहीं है। किसी में एक तत्व है, किसी में दो तत्व है किसी में तीन तत्व है, किसी में चार तत्व हैं।

तुम नर-नारायणी देह हो। सबसे Head of the Creation तुम्हें तो सबसे अच्छा व्यवहार करना चाहिए इसलिए Be-Man मेरे सद्गुरु ने इस जगह का नाम ही Manavta-Mandir रखा और मानवता का ही झंडा लहराया किसी भी धर्म के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। '**मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर करना।**' लेकिन मैं देखता हूँ कि धर्मों ने ही तो झगड़े डाल दिए। धर्मों ने ही हमारी इन्सानियत को बाँट दिया। कोई कुछ बनकर बैठ गया, कोई कुछ बन कर बैठ गया और हम हैं कुछ भी नहीं। इस मज़हब से अपने-

आपको आज़ाद कर लो। परमदयाल जी महाराज कहा करते थे- मैं तुमको आज़ाद करने के लिए आया हूँ, मैं तुम्हें बाँधने के लिए नहीं आया। आज़ाद का मतलब किसी से बँधना नहीं। इसलिए घुँघट के पट खोलो। जब तक तुम कुछ बने हुए हो, तुम बिगड़ोगे। जब कोई कुछ बना ही नहीं तो उसने बिगड़ना क्या?

घट-घट में वहि साई रमता
कटुक वचन मत बोल रहे, तो को पीव मिलेंगे
धन जोबन का गर्व न कीजै
झूठा पचरंग चोल रे, तो को पीव मिलेंगे।

दुनिया में हमें जो कुछ भी मिलता है वह हमारा प्रारब्ध है, मैं ऐसा समझता हूँ। परमदयाल जी की संगत में बैठने के बाद उनकी वाणी, उनके वचनों पर अध्ययन करने के बाद उनको अपने जीवन में उतारने के बाद मिला। कोई भी इन्सान ज़िन्दगी मे कुछ भी नहीं कर सकता। जो होना है वह पहले ही निर्धारित है। ऐसा मानने से तसकीन (शान्ति) मिलती है। जब तुम कहोगे कि मैंने किया, मैंने ही सब किया फिर जब कोई नुकसान होता है तो तुम उसको बचाते क्यों नहीं? जब तुम ही करने वाले हो तो तुम्हारा नुकसान क्यों हुआ। जब तुम ही करने वाले हो तो तुम्हारा Accident क्यों हुआ? जब तुम ही करने वाले हो तो तुम्हें घाटा क्यों पड़ा? वास्तव में हम सब संसार में एक वासना के आधीन अपना कर्म भोगने के लिए आए हैं और वह होकर रहेगा- **कर्म जो-जो करेगा अन्त में भोगना पड़ेगा।** जिस शरीर से तुमने कर्म किया उसे भोगना पड़ेगा। अगर इस जन्म में नहीं भोग सके तो दूसरा जन्म लेना पड़ेगा। तुम बच नहीं सकते। इसलिए किस चीज़ का गर्व करना। जब तुम बच्चे थे तो बड़े खुश रहते थे, अब तुम्हारा बचपन कहाँ गया? जवानी कहाँ है? बुढ़ापा है वह भी चला

जायेगा। जब मेरा शरीर ही मेरे बस में नहीं है। क्या तुम भूख को याद करते हो कि भूख लग जाये? भूख अपने-आप लगती है, प्यास अपने-आप लगती है। नींद भी अपने आप आती है।

जिन्होंने दुनिया की सारी Problems अपने मस्तिष्क में रखी हुई हैं वे रात को नींद की गोली खाते हैं, क्योंकि तुमने अपने सिर पर Un-nessary बोझ डाल लिया है। अरे, पहले सीधे लेटो और आठ साँस उस भगवान् का नाम लेते हुए ले लो तजुर्बे से कह रहा हूँ। फिर दायीं ओर करवट ले लो और सोलह साँस गिन लो, सोलह बार नाम जप लो और फिर बाँयी तरफ करवट ले लो अब तुम दस तक भी नहीं गिन पाओगे तुम्हें नींद आ जायेगी। जहाँ नाम है वहाँ कोई ग़म नहीं है, वहाँ चिन्ता नहीं है। 'प्रभु डोरी हाथ तुम्हारे' और गुरूवाणी तो यहाँ तक कहती है '**थिर कर बैठो हरजन प्यारे सतगुरू तुम्हारे काज सवारें, दुष्ट दूत परमेश्वर सहारे जन की पैज राखी करतारे**' तुम्हारी पैज वह रखेगा किन्तु तुम थिर होते ही नहीं।

आजकल एक रिवाज़ चल पड़ा है। मेरा मन बहुत दुःखी होता है जब माताओं को सन्तों के पीछे नाचते देखता हूँ। सन्त भी नाचते हैं और बीबी, बहनें भी नाचती हैं। धर्म में कितना बड़ा अहँकार है। इससे ज्यादा अत्याचार और क्या हो सकता है। देवियों को, दुर्गाओं को, माताओं को, बहनों को नचाना। इससे बड़ा महापाप कोई नहीं है। सन्त तो कहते हैं शान्ति से बैठ जाओ, थिर हो जाओ।

तन थिर, मन थिर, सूरत निर थिर होए।
कहे कबीर ता पल्प को कल्प न पाए कोय॥

ऐसी हालत को पाने में बहुत समय लग जाता है। मगर जब सतगुरू दयाल हो जायें आँख बन्द काम बन गया। इसलिए घूँघट के पट खोल लो।

सुन्न महल में दियना बारि ले।
आसा से मत डोल रे, तो को पीव मिलेंगे॥

वह कहते हैं यह सुन्न महल हैं। गुरू नानक देव जी ने इस महल केब ासिस्र तम्भब तायेह ैं ाद सप ैरोंक ाउ ँगलियाँ,द सह ाथोंक ा ऊँगलियाँ ये इस शरीर रूपी महल के स्तम्भ हैं। नौ दरवाज़े हैं और दसवाँ दरवाजा बन्द है, वहाँ एक दीया जला लो। गायत्री मंत्र भी यही कहता है। गुरुवाणी भी यही कहती है कि तुम्हारे अन्दर जोत जलती है मगर आप उस जोत को देखने की कोशिश नहीं करते। उसको देखने की कोशिश किया करो। वही ज्योति वास्तव में तुम्हारी आत्मा है। वह आत्मा तुम्हारे रूप का गिलाफ है।

एक हमारा शरीर है, एक हमारा मन है, आत्मा है, एक हमारी सुरत है जो सबसे ऊँची है। वह मालिक की अंश है। उसको Consciousness कहूँगा। अभ्यास करते-करते जब आप वहाँ पहुँच जाते हैं आपका विशाल रूप हो जाता है। आपकी Self Unlimited अपनी है क्योंकि वह सागर की बूँद है, जब सागर की बूँद सागर में चली गई तो जितना विशाल सागर उतनी विशाल बूँद हो जाती है। इसलिए कबीर साहिब कहते हैं– **आसन से मत डोल।**

उस वक्त आपको अपनी कोई आस नहीं याद आनी चाहिए। ऐसा नहीं हाय मेरा यह काम रह गया, वह काम रह गया। उस वक्त कोई ख्याल नहीं आना चाहिए। जब तू उसकी हाजिरी में चला गया तो इस चोले को उसके हवाले कर दे। तन, मन और धन यह गुरू को पहले अर्पण करना पड़ता है। अब दुनिया ने यह समझा कि गुरू की तन से सेवा करो और धन से जाकर रसीद कटा लो मन से जो उन्होंने नाम दिया है वह जपो। ऐसी बात नहीं है। तन का देना – नाम जपते समय शरीर को भूल जाना। धन का देना– नाम जपते समय अपनी सारी

दुनिया को भूल जाना। मन का देना– मन को छोड़ कर उस नाम में उतर जाना। बात को समझो और उस पर चलो, जो चलेगा वह मंज़िल पर पहुँचेगा। जो चलेगा ही नहीं वह मंज़िल पर नहीं पहुँच सकता।

जोग जुगत से रंग महल में।
पिय पाये अनमोल रे, तो को पीव मिलेंगे॥

गुरु के पास बैठो, उनसे युक्ति लो, जोग मिलन को कहते हैं। वह अनमोल पिया बाहर नहीं है। वह अनमोल पिया तुम्हारा अपना Self है। लेकिन आपने शरीर को अपना समझा अच्छी बात है। मन को अपना समझा, मन के पीछे भागे अपने-आपको भूल गए। जो मन दृश्य बनाता है उसको अपना समझ लिया। नहीं! ये तुम्हारे काम नहीं आएँगे। वह पिया वास्तव में तुम्हारा अपना-आपा है। उसकी खोज करो।

संतमत में आए हो। संतमत बँधन के लिए नहीं आया बल्कि आज़ाद करने के लिए आया। संतमत तुम्हारी दुनिया बनाने के लिए आया। दुनिया बनाने के लिए क्या कहा? उस मालिक का एक रूप मान जो। उस रूप को अपने अन्तर में लाओ उसका एक नाम रख लो, उसका सिमरन करो, उसका ध्यान करो, तुम्हारी दुनिया बन जायेगी। धन चाहोगे धन मिलेगा, इज्ज़त चाहोगे इज्ज़त मिलेगी। तरक्की चाहोगे तरक्की मिलेगी, सब कुछ मिलेगा। तुम माँगते फिरते हो खजाना तो तुम्हारे भीतर है। गुरू भी तुम्हारे अन्दर है और तुम बाहर खोजते हो।

परमदयाल जी महाराज ने कहा कि उस मालिक का एक रूप मान लो और उसका एक नाम रख लो। सुबह-शाम उसको याद किया कर और उसका ध्यान किया करो। लेकिन ध्यान करते समय किसी की बुराई मत करना, किसी की चुगली मत करना, किसी की निंदा नहीं

करनी, किसी की बुराई नहीं देखनी। तुम्हारा मन निर्मल हो जायेगा। संतमत अध्यात्म भी बताता है,परमार्थ भी बताता है और स्वार्थ भी बताता है। जिसकी दुनिया ही नहीं बनी, जिसका लोक नहीं बना उसका परलोक भी नहीं बन सकता।

जाको दर्शन इत है, ताको दर्शन उत।
जाको दर्शन इत नहीं, ताको दर्शन इत न उत॥

जिसको यहाँ सुख नहीं है वह आगे जाकर सुखी कैसे होगा? इसी जीवन को स्वर्ग बना लो। स्वर्ग किसी ने देखा नहीं, लिख दिया कि वहाँ स्वर्ग है। स्वर्ग वह है जहाँ बच्चे आज्ञाकारी हैं, बच्चे होनहार हैं। कोई झगड़ा नहीं, सब मिल बैठकर रोटी खाते हैं, वहाँ स्वर्ग है। जिस घर में बाप का मुँह इधर को है और माँ का मुँह उधर को है। बच्चे आपस में लड़ रहे हैं कि बापू जल्दी मरे तो हम जायदाद ले लें-वह नरक है। रात को नींद नहीं आती। इसलिए कबीर साहिब कहते हैं–

कहै कबीर अँनद भयो है
बाजत अनहद ढोल रे, तो को पीव मिलेंगे।
घूँघट का पट खोल रे, तो को पीव मिलेंगे।

दुनिया के जितने भी साज हैं वह तुम्हें आनन्द देते हैं। बाजा बजता है, बीन बजती है, ढोल बजता है, हम कितना आनन्द लेते हैं। अरे, वो जो आनन्द है उसके मुकाबले में दुनिया का कोई आनन्द नहीं है। वह अनहद है उसकी कोई Limit नहीं है। उसकी झलक अगर आपको एक बार भी मिल गई, तुम्हारी ज़िन्दगी बदल जायेगी। इसलिए मेरे दाता परमदयाल जी महाराज ने मुझे उस ढोल को सुनने का आदेश दिया। आप लोगों के चरणों की सेवा के बदौलत बहुत कुछ मिला और मिल रहा है।

मेरे दाता कहा करते थे कि – मेरे दाता ने जो मुझे ज्ञान दिया, जो लिखा मुझे वह चीज़ नहीं मिली। दाता ने कहा था– फ़कीर तुम काम करो, तुम्हें उस मालिक के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे और हुए। उन्होंने सत्संगियों को सबसे ऊँचा रखा और कहा कि सत्संगियों तुम मेरे गुरू हो। मैं परमदयाल जी महाराज का दास क्या अपने सत्गुरु के सत्गुरुओं के साथ धोखा कर सकता हूँ? क्या मैं झूठ बोल सकता हूँ? कभी नहीं।

मैं तुम्हारे साथ सच्चा व्यवहार करता हूँ। तुम मेरे दाता के दरबार में आते हो– तुम्हारी झोलियाँ भर जाये। तुम्हारे भ्रम दूर हो जायें, तुम्हें दुनिया की हर दौलत मिले, तुम्हारे मन को शान्ति मिले। अगर मन को शान्ति नहीं तो कुछ भी नहीं। आप सबको मन की शान्ति मिले। इसी के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

सब को राधास्वामी।

सूचना

सभी दानी सज नों, सत्संगियों से अनुरोध है कि जो धनराशि मानवता मन्दिर, होशियारपुर में भेजना चाहते हैं, उनकी सुविधा के लिए हम Punjab Natonal Bank, Hoshiarpur के दो Account Numbers दे रहे हैं। इच्छुक सत्संगी Faqir Library Charitable Trust A/c No.– 02060001000-57805, IFSC Code–PUNB0020600 और Manavta Mandir Hoshiarpur A/c No. 0206000100209756, IFSC Code–PUNB0020600 में जमा करवा सकते हैं। कृपया जो भी राशि जमा करवायें उसकी रसीद की एक कॉपी अपने पत्र के साथ मंदिर कार्यालय में भेज दें अथवास ूचितक रद ें,त ाकिद ानियोंक ास ूचीम ेंउ नकान ाम प्रकाशित किया जा सके तथा रसीद भी भेजी जा सके।

सचिव

फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर।

श्रद्धांजलि

बड़े दुःखी हृदय से सूचित कर रहे हैं कि हमारे आदरणीय **श्री हरबंस लाल गुप्ता जी,** 10 नवम्बर, 2015 को अपनी जीवन–यात्रा पूरी करके परम–तत्व में विलीन हो गये। श्री गुप्ता जी का जन्म 1926 ई. में हुआ। वे 1972 में परमदयाल पं. फकीर चन्द जी महाराज से जुड़े और तब से किसी न किसी रूप में मानवता–मन्दिर में सेवा करते रहे।

उनके अटूट व निस्स्वार्थ सेवा को ध्यान में रखते हुए उनको 1994 में ट्रस्ट का जनरल सैक्रेटरी नियुक्त किया गया। जिस दौरान उन्होंने मानवता–मन्दिर परिवार को साथ लेकर मन्दिर की प्रगति में विशेष योगदान दिया। उन्होंने आर्थिक दृष्टि से मन्दिर व गरीबों की उल्लेखनीय सहायता की। वे एक ईमानदार और समर्पित इन्सान थे, जिसके लिये उनको हमेशा याद किया जायेगा। वे मृदुभाषी, सरल स्वभाव और एक आदर्श पुरुष थे।

श्री गुप्ता जी अपने आख़िरी दिनों तक मन्दिर में आते रहे और यथा–सम्भव अपना सहयोग देते रहे। उनके साधनामय जीवन के कारण बहुत से साधक मानवता मिशन की ओर आकर्षित हुए। श्री गुप्ता जी का निधन मन्दिर के लिए अपूरणीय क्षति है। हम समस्त मानवता–मन्दिर परिवार की ओर से शोक–ग्रस्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए परमदयाल जी महाराज से प्रार्थना करते हैं कि श्री हरबंस लाल गुप्ता जी की आत्मा को अपने चरणों में निवास दें।

आभार प्रदर्शन

निम्नलिखित सज्जनों ने मानवता मन्दिर होशियारपुर में सहयोग राशि भेजी है। परमपूज्य परमदयाल जी की परमकृपा इन सज्जनों और इनके परिवारों पर सदैव बनी रहे। ट्रस्ट इनके प्रति अपना आभार प्रकट करता है। – सचिव

S. NO.	DONOR	AMOUNT
1.	Vandana/ Rahul Bhatnagar (U.S.A.)	199715/–
2.	Alka Sagar (U.S.A.)	26710/–
3.	Sahin/ Aneeta Sagar (U.S.A.)	13112/–
4.	Surjit Kaur (Hoshiarpur)	11000/–
5.	Nikhil/ Prinja Sagar (U.S.A.)	6556/–
6.	Anjana/ Gulzari Lal Sharma (U.S.A.)	6500/–
7.	Rajesh K. Hiranandani (Mumbai)	5555/–
8.	Praveen Sharma (Ram Prastha)	5100/–
9.	Vinod/ Pramod/ Manoj (Delhi)	3100/–
10.	Virender Kr./ Kiran Sharma (Ludhiana)	3000/–
11.	Natalia/ Divya Sagar	2622/–
12.	Dr. P. L. Sharma (Shimla)	3600/–
13.	Prem Lata Gupta (Delhi)	2100/–
14.	Nisha Bhatnagar (Hissar)	2100/–
15.	Rakesh/ Vijay Luxmi Sharma (Ballabhgarh)	1100/–
16.	Dr. Ashish Kakkar (Jalandhar)	1100/–
17.	Kuldeep Sharma (Batala)	1100/–
18.	B. S. Sharma (Jwalamukhi)	1500/–
19.	S. K.Sethi (Jalandhar)	1601/–
20.	Savitri Devi (Faridabad)	1100/–
21.	Sangeeta Sharma (Mumbai)	1100/–
22.	Nanak Chand	1100/–
23.	Savita Devi (Muzaffarnagar)	1011/–
24.	Chander Kailash (Hissar)	1100/–
25.	Ganesh C. Kaushal (Adampur Doaba)	1000/–
26.	Pushpa Kaur (Hosur) (T. N.)	1000/–
27.	Neelam Sharma (Hoshiarpur)	500/–
28.	Hira Singh (Israna)	500/–
29.	Birbal Kaundal (Hamirpur)	500/–
30.	Babu Ram Thakur (Bilaspur)	1000/–
31.	Suksham (Hoshiarpur)	500/–
32.	Devashri Sharma (Rajkot)	500/–
33.	K. B. Chopra (New Delhi)	500/–
34.	Anjana Kayastha (Naya Nangal)	600/–
35.	Kalu Ram Upadhyay (Muzaffarnagar)	500/–